विशेष लेखक अज्ञेय

B21HD03DE

Discipline Specific Elective Course
Undergraduate Programme
Hindi Language and Literature

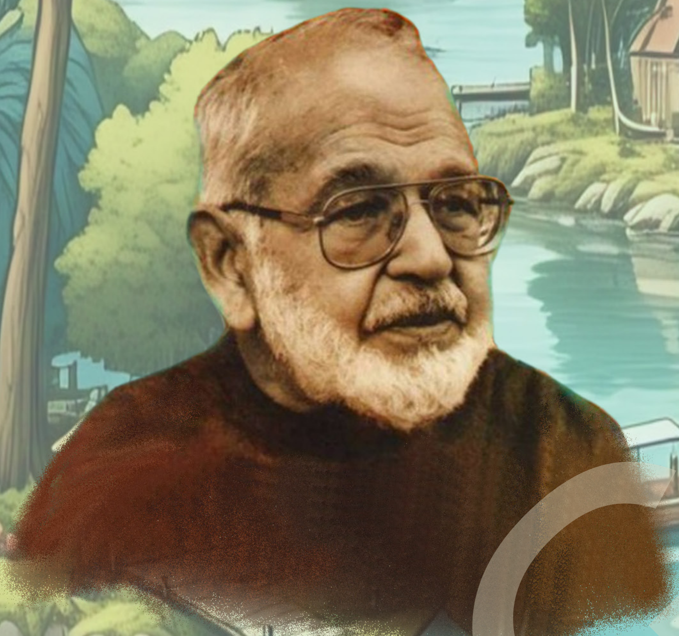

हम नदी के द्वीप है।

हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाए।

वह हमें आकर देती है।

हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकतकूल-

सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।

माँ है वह, इसी से हम बने हैं।

किंतु हम हैं द्वीप।

हम धारा नहीं हैं।

स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के

किंतु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।

Self Learning Material

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

विशेष लेखक अज्ञेय

Course Code: B21HD03DE

Semester - V

Discipline Specific Elective Course
Undergraduate Programme
Hindi Language and Literature
Self Learning Material
(with Model Question Paper Sets)

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

विशेष लेखक अज्ञेय

Course Code: B21HD03DE
Semester- V
Discipline Specific Elective Course
BA Hindi Language and Literature

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Academic Committee
Dr. Jayachandran R.
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. P.G. Sasikala
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. R. Sethunath
Dr. Vijayakumar B.
Dr. B. Ashok

Development of Content
Dr. Renjith R.S., Dr Indu G. Das.,
Dr. Divya S.

Review and Edit
Dr. Suma S.

Linguistics
Dr. Suma S.

Scrutiny
Dr. Sudha T.
Dr. Indu G. Das
Christina Sherin Rose K.J.
Krishna Preethy A.R.

Design Control
Azeem Babu T.A.

Cover Design
Lisha S.

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

Edition:
January 2025

Copyright:
© Sreenarayanaguru Open

ISBN 978-81-982096-6-5

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.m

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the UG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P.

01-02-2025

Contents

BLOCK - 01 युग स्रष्टा अज्ञेयः एक परिचय........ 1
इकाई 1: अज्ञेय की जीवन रेखा........ 2
इकाई 2: साहित्य में प्रवेश........ 8

BLOCK - 02 कवि अज्ञेय........ 21
इकाई 1: तारसप्तक और अज्ञेय........ 22
इकाई 2: अज्ञेय की पाँच कविताएँ (विस्तृत अध्ययन के लिए)........ 36

BLOCK - 03 कहानीकार अज्ञेय........ 46
इकाई 1: अज्ञेय की कहानियों की विशेषताएँ........ 47
इकाई 2: अज्ञेय की पाँच कहानियाँ विस्तृत अध्ययन के लिए 57

BLOCK - 04 उपन्यासकार अज्ञेय 66
इकाई 1: अज्ञेय के उपन्यासों का परिचय और विशेषताएँ........ 67
इकाई 2: अज्ञेय के उपन्यास-अपने अपने अजनबी (सामान्य अध्ययन केलिए)........75

BLOCK - 05 गद्यकार अज्ञेय........ 83
इकाई 1: निबंधकार अज्ञेय........ 84
इकाई 2: अज्ञेय की अन्य रचनाओं का परिचय........ 89
इकाई 3: अज्ञेय की गद्य रचनाएँ (विस्तृत अध्ययन के लिए) 95

BLOCK - 06 प्रयोगधर्मी अज्ञेय........ 104
इकाई 1: अज्ञेय की रचनाओं में प्रयोगशीलता........ 105
इकाई 2: अज्ञेय की कविताओं में नया प्रयोग........ 110
इकाई 3: अज्ञेय की कहानियों की शैली........ 115
इकाई 4: अज्ञेय के उपन्यासों में नए-नए प्रयोग........ 120

MODEL QUESTION PAPER........ 124

BLOCK - 01

युग स्रष्टा अज्ञेयः एक परिचय

SGOU

इकाई 1

अज्ञेय की जीवन रेखा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है
- अज्ञेय के साहित्यिक जीवन को समझता है
- अज्ञेय के जीवन एवं कृतियों से जुड़ी कुछ बातों को भली भाँति समझ सकता है
- युग स्रष्टा के रूप में अज्ञेय के योगदान को समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अज्ञेय हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखक और कवि थे, जिनका जीवन विभिन्न संघर्षों और घटनाओं से भरा हुआ था। उनके साहित्यिक योगदान, क्रांतिकारी विचार, और व्यक्तित्व को जानने के लिए यह जरूरी है कि पाठक अज्ञेय के जीवन के प्रमुख पहलुओं को समझें, जैसे उनके बचपन का संघर्ष, शिक्षा, पत्रकारिता और उनका साहित्यिक सफर। इसके अलावा, अज्ञेय के नाम के पीछे की कहानी, उनका साहित्य में योगदान, और उनके जीवन के अनुभवों को जानने से हम उनके विचारों और दृष्टिकोण को गहराई से समझ सकते हैं। इस विषय के अध्ययन से हम अज्ञेय की रचनाओं और उनके प्रभाव को सही तरीके से समझ पाएँगे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

युग स्रष्टा, गोल्डन रीथ, यज्ञोपवीत संस्कार, हिंदुस्तान सोशलिस्ट पार्टी

Discussion / चर्चा

युग स्रष्टा अज्ञेय-एक परिचय नामक इस इकाई में विशिष्ट साहित्यकार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय के जीवन के मुख्य बिंदुओं का अध्ययन किया है। इसमें अज्ञेय के अकेलेपन से ओतप्रोत शुरु आती जीवन तथा उनकी पढाई, उनका विवाह, उन्हें प्राप्त पुरस्कार आदि विषयों पर अध्ययन किया है। हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग का इतिहास अज्ञेय के बिना अपूर्ण रहेगा।

1.1.1 अज्ञेय का जन्म

हिन्दी साहित्य का सबसे परिचित नाम है अज्ञेय। उनका वास्तविक नाम सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन-'अज्ञेय' था। उनका जन्म 7 मार्च 1911 को हुआ था। उनका जन्मस्थान देवरिया ज़िले के कुशीनगर (कसया) नामक स्थान था। बचपन में लोग उन्हें प्यार से 'सच्चा' बुलाते थे। ये सारस्वत गोत्रीय ब्राह्मण थे।

1.1.2 अज्ञेय का स्वभाव

अज्ञेय स्वभाव से एकान्तप्रिय व्यक्ति थे। वे बचपन में समाज से दूर रहते थे। बचपन में न वे किसी स्कूल में गये न बालसमाज में। इस कारण वे प्रकृति की ओर आकर्षित हुए। परिस्थिति ने उन्हें प्रेरित

किया। उनका आरंभिक जीवन कुछ उथल-पुथल का रहा। उन्हें यात्रा करना बहुत पसंद था। अज्ञेय को सागर, प्रकृति, पर्वत के प्रति लगाव था। आपने अपनी आत्मकथा 'आत्मनेपद' में इस ओर संकेत करते हुए लिखा है - हम सबका बाल्यकाल अधिकतर वन-पर्वतों या देहाती प्रदेशों में बीता; सभी ने स्वतंत्र या आत्म निर्भर स्वभाव पाया; प्रायः सभी किसी हद तक अंतर्मुख हो गये-अर्थात अनुभव अधिक करते हैं भाव प्रदर्शन कम। "पिताजी की नौकरी के कारण अज्ञेयजी को श्रीनगर, नालंदा, पटना, बडौदा, ऊटक मंड और मद्रास आदि स्थानों में बचपन से ही घूमने का अवसर मिला।

1.1.3 अज्ञेय के माता-पिता

'अज्ञेय' के पिताजी का नाम पं. हीरानन्द शास्त्री था। वे सरकार के पुरातत्व विभाग में उच्च अधिकारी के रूप में काम करते थे। वे अत्यंत शिक्षित व्यक्ति थे। अपने काम के प्रति उन्हें निष्ठा थी। वे अत्यंत स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उनकी माता का नाम- कांती देवी था। पिताजी का एक समृद्ध पुस्तकालय था। उनके पिताजी भी पढाई में रुचि रखते थे। हिन्दी पढने की इच्छा अपने पिताजी से ही उन्हें प्राप्त हुई थी। अज्ञेय के परिवार में पंजाबी भाषा बोली जाती थी। लेकिन हिन्दी में भी वे बात किया करते थे। सन् 1934 में उनकी माताजी की मृत्यु हो गयी। साथ में उनके छोटे भाई की भी मृत्यु हुई। उसी साल पिता की सेवानिवृत्ति भी हुई थी। इन्ही घटनाओं ने उन्हें नई ज़िम्मेदारियाँ निभाने को मज़बूर कर दिया। सन् 1946 में उनके पिताजी की मृत्यु हो गई। तत्पश्चात साहित्य सर्जना में पूर्ण रूप से जुड गए।

1.1.4 पढ़ाई

1915 को अज्ञेय की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। स्कूली शिक्षा में उनके माता-पिता को ज़्यादा विश्वास नहीं था। उन्होंने एक संस्कृत पण्डित से कई ग्रंथों का अध्ययन किया। उन्होंने श्रीनगर एवं जम्मू में संस्कृत, फारसी, अंग्रेज़ी की प्रारंभिक शिक्षा शुरू की। नीलगिरि में मध्वाचार्य संस्थान में उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। उन्होंने बी.एस सी की पढाई लाहौर में फार्मन कॉलेज में की। एम.ए. की पढाई मद्रास में हुई।

1.1.5 पढाई के समय का कार्यकलाप

पढ़ाई में उन्हें अत्यधिक रुचि थी। संस्कृत पंडित से रघुवंश रामायण, हितोपदेश पढे। फारसी मौलवी से शेख सादी की कृतियों का अध्ययन किया तथा अमरीकी पादरी से अंग्रेज़ी पढी। आरंभिक पढाई के बाद सन् 1919 में पिता के साथ नालंदा आए। वहीं उन्होंने हरिनारायण आप्टे और राखालदास के संपर्क में आए। उन्हीं से बंगला भाषा सीखी। अपनी पढाई के दौरान उन्होंने वड्र्सवर्थ, टेनिसन, ठिहटमैन आदि की कविताएँ, शेक्सपीयर, मार्लो और वेवस्टर के नाटक तथा लिंटन, जार्ज इलियट, थेकरे, गोल्डस्मिथ, तुगनेव गोगोल आदि के उपन्यास पढे। उन्हें सर्वाधिक प्रभावित करनेवाले 'टेनिसन' ही थे।

अज्ञेय ने विश्वेश्वर नाथ और गौरीशंकर हीराचन्द ओझा की लिखी इतिहास पुस्तकें पढ़ीं। साथ में मीरा के पद एवं गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं का अध्ययन भी किया।

1.1.6 पत्रकारिता का अनुभव

'सैनिक', 'विशालभारत', 'बिजली', 'प्रतीक' 'वाक', 'दिनमान' आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इनमें 'वाक' अंग्रेज़ी की पत्रिका है। दिनमान पत्रिका के संस्थापक-संपादक थे। 1937 में बनारसीदास चतुर्वेदी के आग्रह पर अज्ञेय 'विशाल भारत' के सम्पादक मण्डल में शामिल हो गये और साढे पाँच वर्ष तक उसी में रहे। सन् 1947 में 'प्रतीक' की स्थापना की। सन् 1955 में अंग्रेज़ी साप्ताहिक धार का साहित्य सम्पादन किया। 1964 में विदेश से लौटकर दिनमान साप्ताहिक की स्थापना की। 1973 में पुन 'नया प्रतीक' नामक पत्रिका का सम्पादन किया। 1977 में नवभारत टाइम्स से जुड़ गये। 1979 में उससे त्यागपत्र देकर स्वतंत्र लेखन करने लगे।

1.1.7 क्रांतिकारी दल में शामिल

उनका परिचय चन्द्रशेखर, सुखदेव, भगवतीचरण

आदि से हुआ। जब आठ साल के थे तब जालियाँवाला बैग हत्याकांड हुआ था। इसी घटना ने उन्हें क्रान्तिकारी बनने की प्रेरणा दी।

बी एस सी की पढाई के दौरान वे 'नवजवान भारत सभा' के निकट संपर्क में आए उसके बाद वहाँ एक गुप्त क्रान्तिकारी दल का गठन किया। तदनन्तर वे 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट पार्टी' में शामिल हो गये। वैसे क्रान्तिकारी बन गए। एम. ए. अंग्रेज़ी में पढते वक्त दल में सक्रिय रूप से जुड गए।

1.1.8 कारावास

सन् 1930 में बम बनाने के जुर्म में गिरफ़तार किये गये। बंदी के रूप में एक महीना लाहौर-किले में रहे। उसके बाद साढे तीन साल तक दिल्ली व पंजाब की जेलों में बिताये। फिर दो महीने किले और दो साल-नज़र बंदी में बिताये।

1.1.9 सेना में भर्ती

सन् 1943-46 तक सेना में अधिकारी रहे। 1943 में जब महायुद्ध चल रहा था तब अज्ञेय सेना में भर्ती हो गये थे। सन् 1946 तक कोहिमा सीमा पर रहे। इस सेवा से इन्हें सन् 1946 में मुक्ति मिली।

1.1.10 विवाह

अज्ञेयजी ने दो विवाह किये। श्रीमती संतोष मलिक से सन् 1940 में पहली शादी हो गयी, जो बाद में तलाक में परिवर्तित हो गयीं। 7 जुलाई सन् 1956 में कपिला मलिक उनकी पत्नी बनी और अपने विवाह के पश्चात इलाहाबाद में रहने लगे। वह रिश्ता सन् 1969 तक चला। कपिल मालिक अज्ञेय से विवाह के पश्चात कपिला वास्यायन के नाम से प्रसिद्ध हुई। उनकी ख्याति 'नृत्य' विशेषज्ञा के रूप में हुई।

1.1.11 'अज्ञेय' उपनाम की कहानी

'अज्ञेय' उपनाम के पीछे एक बहुत ही रोचक कहानी है। जब वे जेल में थे तब श्रेष्ठ साहित्यकार जैनेन्द्रजी ने प्रेमचंदजी के पास अज्ञेय की कुछ कहानियाँ जागरण पत्रिका में छापने के लिए भेज दी। साथ में कुछ कविताएँ भी थीं। प्रेमचन्द के सामने यह समस्या उत्पन्न हुई कि सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन नाम छापने के लिए नहीं दिया जा सकता है। क्योंकि वे एक क्रान्तिकारी थे। क्रान्तिकारी का असली नाम छापना मुश्किल था। इसलिए सुविधा के लिए उन्होंने 'अज्ञेय' नाम से उनकी कहानी छाप दी। अज्ञेय शब्द का अर्थ है जिसे समझना बुद्धि से परे है। पहले यह नाम उन्हें पसंद नहीं आया। लेकिन बाद में उन्हें यह नाम अच्छा लगा और इसी नाम से विख्यात हो गए।

1.1.12 प्रोफ़ेसर के रूप में

सन् 1961 में अज्ञेय केलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। सन् 1964 तक वे वहीं रहे। सन् 1968 में कुछ समय के लिए फिर से वहीं विज़िटिंग प्रोफ़ेसर होकर गये। 1971 में जोधपुर विश्वविद्यालय में भारतीय साहित्य विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष रहे। इसी वर्ष विक्रम विश्वविद्यालय से उन्हें डीलिट की उपाधि प्राप्त हुई। 1972 में जोधपुर से त्यागपत्र दे दिया।

1.1.13 अज्ञेय जी को प्राप्त पुरस्कार

अज्ञेयजी को अनेक पुरस्कार प्राप्त हैं। उन्हें 'आंगन के पार द्वार' कविता संग्रह के लिए केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार सन् 1964 में प्राप्त हुआ। भारत का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार भी उन्हें प्राप्त हुआ। उनका काव्य संग्रह 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए वर्ष 1978 का ज्ञानपीठ पुरस्कार उन्हें मिला। सन् 1983 में युगोस्लाविया के कविता सम्मान 'गोल्डन रीथ' से वे सम्मानित हुए। सन् 1983 में ही उन्हें 'भारत-भारती' सम्मान भी प्राप्त हुआ।

1.1.14 वत्सल निधि

ज्ञानपीठ पुरस्कार से प्राप्त राशि के साथ अपनी कुछ राशि भी जोड़कर अज्ञेय ने वत्सल निधि की स्थापना की। इसका लक्ष्य प्रतिवर्ष लेखन शिविरों, हीरानंद शास्त्री व्याख्यानों एवं रायकृष्णदास व्याख्यानों का आयोजन करना होता है।

1.1.15 संपादक कार्य में अज्ञेय की भूमिका

अज्ञेय एक सफल सम्पादक भी थे। सम्पादन का महत्त्व जानते हुए उन्होंने पत्रिकाओं, पुस्तकों, विचार-ग्रंथों का सम्पादन जो किया, वह अद्वितीय रहा। तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक आदि के संपादक भी अज्ञेयजी थे।

1.1.16 अज्ञेयजी का स्वर्गवास

अपने 76 वर्ष की उम्र में अकस्मात अज्ञेयजी का स्वर्गवास 4 अप्रैल 1987 को नई दिल्ली में हुआ। उनके पार्थिव शरीर का दाह संस्कार यमुना नदी के किनारे स्थित निगमबोध घाट में हुआ।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय हिन्दी साहित्य के जाने माने लेखकों में से एक है। अपनी अलग लेखन शैली, प्रखर व्यक्तित्व और प्रभावी आचरण से उन्होंने हिन्दी साहित्य जगत् में अपना अलग स्तान हासिल किया है। स्वतंत्रता संग्राम में भी उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया है। इसतरह राष्ट्र एवं समाज के प्रति अपना दायित्व निभाया है। उनकी हर रचना एक से बड़कर एक है। उन्हें कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। ऐसी विलक्षण प्रतिभा होने के बावणूद भी उनमें सरलता एवं लालित्य हम देख सकते हैं। इनके उल्लेख के बिना हिन्दी साहित्य का इतिहास ही अधुरा मालूम पड़ेगा।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय का असली नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन था। उनका जन्म 7 मार्च 1911 को कुशीनगर (कसया), देवरिया में हुआ था
- वे स्वभाव से अकेले रहने वाले थे और बचपन में समाज से दूर रहते थे। उन्हें यात्रा और प्रकृति में रुचि थी
- उनके पिता पं. हीरानंद शास्त्री एक पढ़े-लिखे और स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उनकी माता कांती देवी थीं
- अज्ञेय ने घर पर ही पढ़ाई शुरू की। बाद में उन्होंने लाहौर और मद्रास में भी पढ़ाई की
- उन्होंने कई प्रमुख पत्रिकाओं जैसे 'विशाल भारत', 'प्रतीक', 'दिनमान' का संपादन किया
- अज्ञेय ने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया और 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट पार्टी' से जुड़े
- 1930 में बम बनाने के आरोप में उन्हें गिरफ्तार किया गया और लगभग चार साल तक जेल में रहे
- उन्होंने 1943 से 1946 तक भारतीय सेना में सेवा की
- अज्ञेय ने दो विवाह किए। पहले 1940 में संतोष मलिक से और फिर 1956 में कपिला मलिक से
- अज्ञेय को 'अज्ञेय' नाम जेल में रखा गया था, जिसका मतलब है 'जिसे समझना मुश्किल हो'
- अज्ञेय जी ने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय और जोधपुर विश्वविद्यालय मंच भारतीय साहित्य के प्रोफेसर के रूप में काम किया
- उन्हें कई पुरस्कार मिले, जैसे ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार और गोल्डन रीथ पुरस्कार
- अज्ञेय का निधन 4 अप्रैल 1987 को हुआ। उनका अंतिम संस्कार दिल्ली के निगमबोध घाट पर हुआ
- वे 'तार सप्तक', 'दूसरा सप्तक', 'तीसरा सप्तक' जैसे काव्य संकलनों के संपादक थे

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अज्ञेय' का पूरा नाम क्या है?
2. अज्ञेय का जन्म कब और कहाँ हुआ?
3. अज्ञेय के माता-पिता का नाम क्या है?
4. हिन्दी पढने की इच्छा अज्ञेय को किससे प्राप्त हुई?
5. अज्ञेय घर में कौन सी भाषा बोला करते थे?
6. अज्ञेय की पत्नी का नाम क्या है?
7. 'अज्ञेय' को केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार किस कृति के लिए प्राप्त हुआ?
8. अज्ञेय को किस कारण से कारावास हुआ था?
9. अज्ञेय को वर्ष 1978 को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस कृति के लिए प्राप्त हुआ?
10. अज्ञेय जी की मृत्यु कब हुई?

Answers / उत्तर

1. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन
2. अज्ञेय का जन्म 7 मार्च 1911 में उत्तर प्रदेश के कुशीनगर (कसया) में हुआ।
3. अज्ञेय के पिता का नाम पं. हीरानन्द शास्त्री था और माता का नाम कांती देवी था।
4. अपने पिताजी पं. हीरानन्द शास्त्री से।
5. पंजाबी।
6. श्रीमती कपिला वात्स्यायन।
7. आंगन के पार द्वारा।
8. बम बनाने के जुर्म में।
9. कितनी नावों में कितनी बार।
10. 4 अप्रैल 1987।

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अज्ञेय जी स्वभाव से एकान्त प्रिय व्यक्ति थे। व्यक्त कीजिए?
2. अज्ञेय जी के माता पिता के बारे में लिखिए।
3. 'अज्ञेय' उपनाम के पीछे की कहानी क्या है?
4. अज्ञेय जी क्रांतिकारी कैसे और क्यों बने?
5. अज्ञेय की पढाई के समय के कार्यकलापों बारे में अभिव्यक्त कीजिए।
6. अज्ञेय को प्राप्त प्रमुख पुरस्कारों के बारे में लिखिए।
7. अज्ञेय के संबंध में वत्सल निधि का क्या महत्व है?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. लोकप्रिय साहित्यकार अज्ञेय, वाणी प्रकाशन
2. अज्ञेय की जीवन रेखा - गोपाल राय
3. कहानीकार अज्ञेय - गोपाल राय
4. कवि अज्ञेय - गोपाल राय
5. युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार मिश्र
6. अज्ञेय व्यक्तित्व और कृतित्व - कृष्णदत्त पालीवाल
7. युगपुरुष कवि अज्ञेय, डॉ. रामेश्वर बांगड़, विद्याप्रकाशन, कानपुर।
8. तार सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
9. दूसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
10. तीसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
11. संपूर्ण कहानियाँ, अज्ञेय, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।
12. अज्ञेय, रमेशपन्द शाह, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
13. सदानीरा, अज्ञेय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

इकाई 2

साहित्य में प्रवेश

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कहानीकार अज्ञेय की कहानियों से परिचय प्राप्त कर सकते है
- उपन्यासकार अज्ञेय के बारे में समझता है
- अज्ञेयजी द्वारा रचित अन्य साहित्यिक कृतियों का परिचय प्राप्त कर सकता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अज्ञेय का साहित्यिक योगदान बहुमुखी और गहरे चिंतन का परिणाम है। उनके काव्य संसार में विविधता और प्रयोगधर्मिता की झलक मिलती है, जो उनकी रचनाओं को अद्वितीय बनाती है। उनका साहित्य जीवन के अनेक पहलुओं को छूता है, चाहे वह प्रेम, अस्तित्ववाद, समाज, या दर्शन की बातें हों।अज्ञेय की काव्य शैली में तत्सम शब्दों की बहुलता, बिंबों-प्रतीकों का गहरा उपयोग, और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण देखने को मिलता है। उन्होंने कविता, कहानी और नाटक के माध्यम से मनुष्य की गहरी संवेदनाओं और जीवन की जटिलताओं को व्यक्त किया। उनका साहित्य न केवल कविता की शुद्धता और गहरी अनुभूति को प्रस्तुत करता है, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं पर भी गहरे विचार करता है। उनकी कहानियाँ मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक, क्रांतिकारी, और सामाजिक मुद्दों पर आधारित हैं, जिनमें उन्होंने व्यक्ति के अंदर की गहरी संवेदनाओं और संघर्षों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया। उनके नाटक 'उत्तर प्रियदर्शी' में भी मानवता और करुणा के मूल्य को विशेष रूप से स्थान दिया गया है। अज्ञेय का साहित्य आज भी समृद्ध है और आधुनिक हिन्दी साहित्य में उनका योगदान अद्वितीय है। उनके विचार और रचनाएँ समाज के प्रति उनके गहरे चिंतन और प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रयोगधर्मिता, निर्वैयक्तिकरण, सर्वात्मभाव

Discussion / चर्चा

'युग स्रष्टा अज्ञेय-एक परिचय' नामक इस इकाई का दूसरा भाग है 'साहित्य में प्रवेश'। इस अध्याय में अज्ञेय का साहित्य में प्रवेश, कवि अज्ञेय के रचना संसार से परिचय प्राप्त कर उनके काव्य चिंतन को सही जान सकते हैं। उनके साहित्यकार रूप को भली भाँति या समग्रता से जानना अत्यंत आवश्यक है। इसलिए उनके उपन्यासों, निबंधों, नाटक आदि विधाओं की परिचयात्मक प्रस्तुति इसमें दी गई है। सही अर्थ में युग स्रष्टा के रूप में साहित्य लोक में विचरण करने वाले अज्ञेय का सम्पूर्ण जीवन साहित्य में प्रयोगधर्मिता की स्थापना में व्यतीत हो गया था। इसलिए उनकी कृतियों का विवेचनात्मक अध्ययन बहुत ही ज़रूरी है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

लेकिन परिचयात्मकता को नज़र में रखते हुए एवं विषय विस्तार के भय से विश्लेषणात्मक अध्ययन संभव नहीं हो पाया है।

1.2.1 अज्ञेय की साहित्य साधना के प्रेरणा स्रोत

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय एक प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। उन्होंने कवि के रूप में साहित्य क्षेत्र में पदार्पण किया। नीलगिरि में रहते समय बालक सच्चिदानंद हीरानंद का परिचय मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधरपाठक, हरिऔध - जैसे वरिष्ठ कवियों से हुआ। इन कवियों की प्रेरणा से कई कविताओं का अध्ययन किया। छः वर्ष की उम्र से ही छोटी-छोटी तुकबंदियाँ (अंत्यानुप्रास युक्त रचनाएँ) रचने लगे। उस समय के रिवाज़ के अनुसार उनकी पढाई-संस्कृत, अंग्रेज़ी और फारसी में हुई। हिन्दी लिखने-पढने का अभ्यास अपने पिता के कश्मीर से बिहार आने पर शुरु हुआ।

1.2.2 अंग्रेज़ लेखक का प्रभाव

अज्ञेय को सबसे अधिक प्रभावित करने वाले टेनीसन ही थे। उनके प्रभाव से उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा में कुछ कविताएँ भी लिखी थीं। उन कविताओं में एक गंगा पर लिखी हुई स्तुति थी। उसके पीछे दयानन्द सरस्वती की ये पंक्तियाँ थीं-

"गंगा उठो कि नींद में सदियाँ गुज़र गयीं।

देखों तो सोते-ही बरसे किधर गयीं।"

1.2.3 साहित्य में प्रवेश

वात्स्यायन की प्रथम कविता लाहौर कॉलेज की पत्रिका में छपी थी। कारावास के दौरान उनमें साहित्य प्रवृत्ति तीव्र हो गयी। तब उन्होंने अधिकतर कहानियाँ ही लिखीं। जेल में या क्रान्तिकारी दल में जुडे रहने के कारण उनका यथार्थ नाम पत्रिकाओं में नहीं छाप सकता था।

1.2.4 अज्ञेय का काव्य संसार-एक परिचय

अज्ञेय का काव्य संसार विराट है। उनकी रचनाएँ जीवन के सत्य को उद्घाटित करती हैं। उसमें रहस्यवाद, अस्तित्ववाद, बुद्धिवाद, प्रयोगवाद, निर्वैयक्तिकरण, सर्वात्मभाव, यथार्थवाद, आत्मत्याग आदि तत्व पाए जाते हैं। आपके काव्य संग्रहों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया गया है।

1.2.4.1 भग्नदूत

'भग्नदूत' अज्ञेय की कविता का पहला संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 1933 ई में हुआ था। इस काव्य संग्रह में प्रणय की पराजय से उत्पन्न हीन भावना का चित्रण है। इसमें कवि आत्मरति में लीन होते नज़र आता है।

1.2.4.2 चिंता

'चिंता' एक लंबी कविता है। यह दो भागों में विभक्त है - 1) विश्वप्रिय तथा 2) एकायन। विश्वप्रिया में स्त्री के प्रति पुरुष के भावनात्मक विचार हैं तथा एकायन में नारी की प्रणयानुभूति का चित्रण मिलता है। इस पुस्तक के बारे में अज्ञेय ने लिखा है - "पुस्तक के दो खण्डों में क्रमशः पुरुष और स्त्री के दृष्टिकोण से मानवीय प्रेम के उद्भव, विकास, अंतर्द्वन्द्व, ध्वास, अंतर्मंथन, पुनरुत्थान, चरम संतुलन की कहानी कहने का यत्न किया गया है। दोनों खण्डों के नामों से संकेत रूप से पुरुष व स्त्री के दृष्टिकोण का निर्देश है।"

1.2.4.3 इत्यलम

इस कविता संग्रह का प्रकाशन सन् 1946 ई में हुआ था। इसमें भग्नदूत की चुनी हुई कविताओं के अतिरिक्त शेष चार भागों में बंदी स्वप्न, हिय हारिल, वंचना के दुर्ग, मिट्टी की ईहा शीर्षकों के अंतर्गत प्रकाशित होनेवाली कविताएँ हैं। समग्र रूप से देखने पर इत्यलम में बौद्धिकता, अहम बोध, शंका, क्षणवादी दर्शन, सौंदर्यानुभूति का चित्रण हुआ है।

1.2.4.4 हरी घास पर क्षण भर

यह कविता संकलन 1949 में प्रकाशित हुआ। यह

अत्यंत प्रसिद्ध काव्य संकलन है। इसमें 'हरी घास पर क्षण भर', 'कलगी बाजरे की', 'नदी के द्वीप', कवि क्या हुआ फिर', 'छंद हैं यह फूल', 'कितनी शांति' आदि प्रसिद्ध रचनाएँ इसी संग्रह की है। इसकी कविताएँ गीतात्मक हैं।

1.2.4.5 बावरा अहेरी

यह कविता संकलन सन् 1954 में प्रकाशित हुआ। ये कविताएँ भी गीतात्मक हैं। इसकी अधिकांश कविताएँ मुक्त-छन्द में लिखी गई हैं। इसमें कवि की 1950 से 1953 की कविताएँ संकलित हैं।

1.2.4.6 इन्द्रधनुष रौंदे हुए थे

इस कविता संकलन का प्रकाशन सन् 1957 में सरस्वती प्रेस इलाहाबाद से हुआ। इस संग्रह की कविताएँ अज्ञेय की काव्य-चेतना को एक नयी दिशा की ओर ले जाती है। इसमें उनकी आत्मपरक कविताएँ संकलित हैं। इसमें अज्ञेय क्षण की पहचान और उसकी पकड़ पर विशेष बल देते हैं। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे लिखते हैं - 'अनुभूति और परिस्थिति में जब विपर्यय, असंतुलन या विरोध होता है तब कलाकार अनुभूति पर आग्रह करता है।'

1.2.4.7 अरी ओ करुणा प्रभामय

इस संग्रह का प्रकाशन सन् 1959 में हुआ। इस संग्रह में अज्ञेय की कविताओं को चार भागों में विभक्त किया है, जिनका क्रम इस प्रकार है -

1. रोपयित्री - इस खण्ड में 18 कविताएँ हैं।
2. रूप के की - इस खण्ड में 34 कविताएँ हैं।
3. एक चीड़ का खाका - इस खण्ड में 27 कविताएँ हैं।
4. द्वार हीन द्वार - इस खण्ड में 32 कविताएँ हैं।

1.2.4.8 आँगन के पार द्वार

इस संकलन में 1959 से 1961 तक की रचनाएँ सम्मिलित हैं। इसका प्रकाशन 1961 में हुआ। इस संग्रह की कविताएँ तीन प्रमुख शीर्षकों में विभक्त हैं -

1. अंतःसलिला - इसमें अठारह कविताएँ संकलित हैं।
2. चन्द्रकान्त शिला - इसमें 20 कविताएँ संकलित हैं।
3. असाध्यवीणा - लंबी कविता।

1.2.4.9 कितनी नावों में कितनी बार

इसमें अज्ञेय की 1962 से लंकर 1966 तक की कविताएँ सम्मिलित हैं। इस संग्रह में उन्होंने मनुष्य के प्रति अपनी गहरी संवेदना को एक नया आयाम दिया है।

1.2.4.10 क्योंकि मैं उसे जानता हूँ

इस संकलन की कविताएँ उनकी विभिन्न काव्य प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस संग्रह की कविताएँ दो वर्गों में विभक्त हैं -

1. गूँजेगी आवाज़ और
2. प्रार्थना का एक प्रकार।

1.2.4.11 सागर मुद्रा

इसमें अज्ञेय की 78 कविताएँ संकलित की गई हैं। इसमें संकलित कविताएँ विषय व शिल्प की दृष्टि से कवि की प्रौढता को व्यक्त करती हैं। इसमें देलोस से एक नाव नामक कविता खण्ड में ग्रीक भाषा से हिन्दी में रूपान्तरित कविताएँ सम्मिलित की गई हैं।

1.2.4.12 पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ

इस संकलन में अज्ञेय की सन् 1970 से 1973 तक रचित कविताएँ संकलित हैं। इसमें संकलित-कविताओं को तीन खण्डों में विभक्त कर दिया गया है -

1. वन झरने की धार
2. खुले में खडा पेड
3. नंदा देवी

इस संकलन की कविताओं में कवि की चेतना की अभिव्यक्ति हुई हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

1.2.4.13 महावृक्ष के नीचे

इस संग्रह में 42 कविताओं को स्थान मिला है। इसमें उन्होंने बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। अधिकांश कविताएँ प्रकृति, प्रेम एवं सौंदर्यबोध की द्योतक हैं।

1.2.4.14 पूर्वा

इसका प्रकाशन सन् 1965 में हुआ। इसमें अज्ञेयजी की प्रारंभ से लेकर सन् 1950 तक की कविताएँ संकलित हैं।

1.2.4.15 सुनहरे शैवाल

इसमें 44 कविताएँ संकलित हैं। इसका प्रकाशन सन् 1966 में हुआ। अन्य काव्य संकलनों से कविताएँ चुनकर संकलित की गई हैं।

1.2.5 अज्ञेय की काव्य भाषा

अज्ञेय की काव्य भाषा शुद्ध साहित्यिक खडीबोली है। उसमें परिनिष्ठता थी। उन्होंने अपनी अनुभूति को पाठकों तक पहुँचाने के लिए नये शब्दों की भाषा की, अलंकारों की, बिंबों-प्रतीकों की तलाश की है। उनकी काव्य भाषा अर्थ के साथ-साथ बिंब ग्रहण भी कराती है। वह सामान्य स्तर से कुछ अधिक अर्थ व्यक्त करती है। अज्ञेय प्रयोगधर्मी कवि थे। इसलिए उनका शब्द चयन एवं भाषा प्रयोग निश्चित रूप से कुछ अलग होता है। उनकी भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता दिखाई पड़ती है। अज्ञेय की भाषा में लाक्षणिक पदावली का प्रयोग भी मिलता है। उनकी काव्यभाषा प्रयोगधर्मी है।

1. विश्वप्रिया
2. विकल्प
3. सम्भाग्य
4. क्योंकर मुझे भुआ ओगे
5. बत्ती और शिखा
6. तुम और मैं
7. क्रान्तिपथे
8. पराजय गान
9. दीपावली का एक दीप
10. असीम मेरे चरणों में
11. शिशिर के प्रति
12. अनुरोध
13. अकाल धन
14. बन पारावत
15. कीर
16. ध्रुव
17. सूर्यास्त
18. बद्ध
19. जीवनदान
20. बन्दी और विश्व
21. अन्तिम आलोक
22. प्रेरणा
23. तन्द्रा में अनुभूति
24. घृणा का गान
25. बन्दी गृह की खिडकी
26. अचरज
27. प्राण तुम्हारी पद रज फूली
28. स्मृति
29. राखी
30. मत माँग
31. गा दो
32. दिवाकर के प्रति
33. विश्वास
34. अतीत की पुकार
35. घूल भरा दिन
36. मैं वह धन हूँ

37. निमीलन
38. ताजमहल की छाया में
39. प्रार्थना
40. मैं तुम्हारे ध्यान में हूँ
41. विधाता वाम होता है
42. आज थका हिय हारिल मेरा
43. एक चित्र
44. चिन्तामय
45. द्वितीया
46. रहस्यवाद
47. ओ मेरे दिल
48. मैंने आहुति बनाकर देखा
49. निवेदन
50. रक्तस्नात वह मेरा साकी
51. पार्क की बेंच
52. आह्वान
53. दूरवासी मीत मेरे
54. उड़ चल हारिल
55. सावन मेघ
56. बसन्त गीत
57. उषःकाल की भव्य शान्ति
58. निरालोक
59. क्षण भर सम्मोहन छा जाने
60. शिशिर की राका-निशा
61. ऋतुराज
62. रात होते-प्रात होते
63. मिट्टी ही ईहा है
64. जब जब पीडा मन में उमंगी
65. जैसे तुझे स्वीकार हो
66. चार का गजर
67. भादों की उमस
68. चेहरा उदास
69. चरण पर घर चरण
70. ये मेघ साहसिक सैलानी
71. किसने देखा चाँद?
72. मेरी चकी हुई आँखों को
73. आज मैं पहचानता हूँ
74. वीर बहु
75. कल की निशि
76. प्रिया के हित गीत
77. देख क्षितिज पर भरा चाँद
78. प्रतीक्षा
79. एक दर्शन
80. हिमन्ति बयार
81. नन्ही शिखा
88. जागर
83. शाली
84. पानी बरसा
85. आषाढस्य प्रथमदिवसे
86. किसने देखा चाँद
87. देखती है पीठ
88. जन्म दिवस
89 समाधि लेय
90. क्षमा की बेला
91. एक ऑटोग्राफ
92. तुम्हीं हो क्या बंधु वह
93. प्रणति
94. राह बदलती नहीं
95. विश्वास का वारिद
96. किरण मर जायगी

97. शक्ति का उत्पात
98. पराजय है याद
99. दीप थे अगणित
100. खुलती आँख का सपना
101. पावस प्रात, शिल्ङ्
102. सागर के किनारे
103. दूर्वाचल
104. कितनी शान्ति! कितनी शान्ति!
105. शरणार्थी - 1 : मानव की आँख
106. शरणार्थी - 2 : पक गयी खेती
107. शरणार्थी - 3 : ठाँव नहीं
108. शरणार्थी - 4 : मिरगी पड़ी
109. शरणार्थी - 5 : रुकेंगे तो मरेंगे
110. शरणार्थी - 6 : समानान्तर साँप
111. शरणार्थी - 7 : गाडी रुक गयी
112. शरणार्थी - 8 : हमारा रक्त
113. शरणार्थी - 9 : श्री मद्धर्मधुरंधर पंडा
114. शरणार्थी - 10 : कहती है पत्रिका
115. शरणार्थी - 11 : जीना है बन सीने का साँप
116. कतकी पूनो
117. वसन्त की बदली
118. मुझे सब कुछ याद है
119. अकेली न जैयो राधे जमुना के तीर
120. जब पपीहा पुकारा
121. माहीवाल से
122. शरद
123. क्वार की बयार
124. सो रहा है झोंप
125. सबेरे-सबेरे
126. सपने मैंने भी देखे हैं
127. पुनराविष्कार
128. हमारा देश
129. जीवन
130. नयी व्यंजना
131. कवि हुआ क्या फिर
132. बंधु हैं नदियाँ
133. हरी घास पर क्षण भर
134. पहला दाँगरा
135. मेरा तारा
136. आत्मा बोली
137. कलगी बाजरे की
138. नदी के द्वीप
139. छन्द है यह फूल
140. बने मंजुष है यह अन्तस
141. जनवरी छब्बीस
142. घास-फूल धैर्य का
143. खद्योत दर्शन
144. तारा दर्शन
145. काँगडे की छोरियाँ
146. तुम फिर आ गए, क्वाँर?
147. चाँदनी जी लो
148. झरने के लिए
149. ऊगा तारा
150. वह नाम
151. वहाँ रात
152. प्रथम किरण
153. हवाई यात्रा
154. हवाएँ चेत की
155. शरद की साँस के पंछी
156. मालाबार का एक दृश्य

157. वेदना की कोर

158. बावरा अहेरी

159. वर्षान्त

160. दफ्तरः शाम

161. जाता हूँ सोने

162. संध्या तारा

163. तड़िद्दर्शन

164. विज्ञप्ति

165. नख-शिख

166. शोषक भैया

167. अंधड़

168. आज तुम शब्द न हो

169. यह दीप अकेला

170. उषा-दर्शन

171. जो कहा नहीं गया

172. देह-वल्ली

173. यही एक अमरत्व है

174. सत्य तो बहुत मिले

175. पुनर्दर्शनाय

176. टेसू

177. मरु और खेत

178. इतिहास का न्याय

179. शाश्वत संबंध

180. चातक पिउ बोलो

181. रेंक

182. साँप

183. शब्द

184. एक रोगिणी बालिका के प्रति

185. एक मंगलाचरण

186. मैं वहाँ हूँ

187. इतिहास की हवा

188. क्यों कि तुम हो

189. गोवर्धन

190. सीढियाँ

191. विपर्यय

192. हमने पौधे से कहा

193. मेरे विचार हैं दीप

194. तुम कदाचित न थी पानो

195. घुमडन के बाद

196. नयी कविता-एक संभाव्य भूमिका

1.2.6 कहानीकार अज्ञेय

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन को अज्ञेय उपनाम उनकी कहानियों के कारण ही मिला। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ क्रांति और भावनात्मकता से भरपूर थीं। उनकी कहानियों में उनकी कवि दृष्टि प्रतिफलित हुई है। उनका कवि होना कहानियों के लिए सहायक सिद्ध हुआ है। उनकी कहानियाँ जैनेन्द्र की कहानी परम्परा को आगे बढाने वाली हैं।

1.2.6.1 सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा दी गयी कहानी की परिभाषा

"कहानी एक क्षण का चित्र प्रस्तुत करती है। क्षण का अर्थ हम चाहे एक छोटा काल-खण्ड लगा लें, चाहे एक अल्पकालिक स्थिति, एक घटना, प्रभावी डायलॉग, एक मनोदशा, एक दृष्टि, एक बाह्य या आभ्यन्तर झाँकी, समझ का एक आकस्मिक उन्मेष, संत्रास, तनाव, प्रतिक्रिया, प्रक्रिया .... इसी प्रकार चित्र का अर्थ वर्णन, आलोकन, रूपायन, जो चाहें लगा लें - या इनके विभिन्न जोड़ मेल।"

अज्ञेय अपनी कहानियों में व्यक्ति को ही महत्व देते हैं। मध्यवर्गीय मानव पर उन्होंने कहानियाँ लिखी हैं। प्रेमचन्द के पश्चात हिन्दी कहानी जगत को जागृत करनेवालों में अज्ञेय प्रथम गणनीय माने जाते हैं। उन्होंने नये नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को

प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है।

'अज्ञेय' ने सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। प्रेमचन्द के पश्चात हिन्दी कहानी जगत को जागृत करनेवालों में अज्ञेय प्रथम गणनीय माने जाते हैं। उन्होंने मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय क्रान्तिकारियों का जीवन, स्त्री-पुरुष के नैतिक संबंध आदि को अपनी कहानियों में स्थान दिया। उनके लिए घटनाप्रधान जीवन महत्वपूर्ण नहीं रहा है। उन्होंने व्यक्ति चरित्र की गहन संवेदना को व्यक्त करने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं।

1.2.6.2 अज्ञेयजी ने मुख्य रूप से चार तरह की कहानियाँ लिखीं;

1) क्रान्तिकारी जीवन की कहानियाँ
2) मनोवैज्ञानिक सामाजिक कहानियाँ
3) सैनिक जीवन से जुड़ी कहानियाँ
4) भारत विभाजन से जुड़ी कहानियाँ।

1.2.6.3 श्रेष्ठ और सफल कहानी की अज्ञेय द्वारा दी गई व्याख्या

श्रेष्ठ और सफल कहानी की विशेषताओं की ओर संकेत करते हुए अज्ञेय ने कहा है - "लघु कलेवर अथवा शब्द-संयम, अंशी की सम्यक व्यंजना के लिए अंश का विवेकपूर्ण चयन, अर्थगर्भ-संकेतों की अनुगूँज के द्वारा ज्ञात की परिधि से अज्ञात की गहराई की माप और इस प्रकार क्रमशः अपने भीतर के अव्यक्त को जगाकर उसका सहसा बाहर के रहस्यमय से सहज अंतरंग परिचय करा देना-यही कहानी का अभीष्ट है और इसी में उसकी सफलता।"

1.2.6.4 अज्ञेय की प्रमुख कहानियाँ

अमरवल्लरी, विपथगा, प्रतिध्वनियाँ, सिगनेलर, कोठरी की बात, लेटर-बॉक्स, शरणदाता, जय-दोल, होली बोन की बतखें, मेजर चौधरी की वापसी, साँप, खितीन बाबु, अकलंक, हरसिंगार, ताज की छाया में, चिडियाघर, कैसांड्रा का अभिशाप, परंपरा एक कहानी, रोज़ (गैंग्रीन), अछूते फूल, अभिशापित, आदम की डायरी, नीली हँसी, देवी सिंह, कलाकार की मुक्ति आदि।

अज्ञेय की कहानियाँ आज भी नए प्रयोगों के साथ हिन्दी वाग्मय को समृद्ध बनाती हैं। उन्होंने मनोवैज्ञानिकता को अधिक महत्व दिया। अपनी सभी कहानियों में समाज के विभिन्न व्यक्ति विशेषों की प्रतीकात्मक-पात्र अभिव्यक्ति दी है। वे विशुद्ध मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के प्रतिनिधि रचनाकार थे। इस मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के निर्माण में प्रायः तीन प्रकार की प्रेरणाएँ कार्य करती हैं,

अ) अहं रूप

आ) विद्रोहात्मक रूप

इ) विश्लेषणात्मक रूप

अज्ञेय की गद्य-शैली में अभूतपूर्वक संयम, गंभीरता प्रयोग और परिष्कार मिलता है। इसलिए इनकी कहानियाँ अभिव्यक्ति में सदैव सफल रही हैं। कहानी की सर्जना में अनुभूति की प्रेरणा को अज्ञेय ने सबसे ऊँचा स्थान दिया है।

आधुनिक युग में कहानीकार अज्ञेय का मूल्य सर्वोपरि है। इनमें रचना-कौशल की प्रतिभा एवं नये-नये प्रयोगों का सफल आग्रह बना रहा है। इसलिए इनकी शिल्पविधि में विविधता आ गई है।

1.2.7 नाटककार अज्ञेय

काव्य व गद्य की लगभग सभी विधाओं पर रचना करने वाले अज्ञेय का एकमात्र-नाट्य रचना है उत्तर प्रियदर्शी। अनेक मंचपर उत्तर प्रियदर्शी का अवतरण हुआ है। इस कारण नाटककार के रूप में भी उनकी ख्याति चारों ओरफैल गयी थी। दिल्ली में त्रिवेणी कला संग्रम के खुले रंगमंच पर 6 मई 1967 को यह पहली बार अभिनीत हुआ। पुरानी कथा का आधार लेकर सृजित होने के कारण यह नाटक अनेक प्रेक्षकों के मन में चिरप्रतिष्ठित हो गया।

1.2.7.1 उत्तर प्रियदर्शी - नाटक

यह नाटक सन् 1967 में प्रकाशित हुआ। इस नाटक का प्रकाशक अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली था। यह एक गीति-नाट्य है। इसमें अशोक के बाल्यकाल से प्रारंभ होकर उसके मुक्ति-स्रोत के वरण तक की घटनाएँ वर्णित हैं। बालक अशोक पूर्व जन्म में अपने आंगन में खेलता है, उसी समय तथागत वहाँ आ जाते हैं। उनके पास एक भिक्षापात्र था। उसमें अशोक एक मुट्ठी धूल डाल देता है। शाक्य मुनि (बुद्ध) उसे पुण्य फल के रूप में भारत को विशाल राज्य देते हैं। कलिंग युद्ध में जीतकर अशोक राजेश्वर एवं प्रियदर्शी परमेश्वर बन जाता है।

अशोक युद्ध में जीत जाते हैं। मगर युद्ध-क्षेत्र में आहतों के चीत्कार में मृतकों की भीषण स्थिति से उसका मन व्याकुल हो जाता है। गद्दी पर बैठते ही अशोक परम क्रूर व्यक्तियों द्वारा नरक-स्थान का निर्माण करा चुका है। अशोक अपने राज्य के उसी निर्मित नरक में प्रवेश करता है। वहाँ का स्वामी घोर नरक की विकराल स्थिति का वर्णन करता है। अशोक एक भिक्षु के साथ जब नरक में पहूँचता है तब उस शोकमूक नरक में शीतलता आ जाती है। नरक में रहनेवाले प्राणी प्रसन्न हो जाते हैं। तत्पश्चात् नरक मिट जाता है। भिक्षु वहाँ के निवासियों को करुणा का स्मरण दिलाता है। प्रियदर्शी कहता है -

कल्मष कलंक धुल गया आह!

युद्धांत यहाँ यात्रान्त हुआ।

'नमो बुद्धाय' की गूँज के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

1.2.8 उपन्यासकार अज्ञेय

अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में व्यक्ति द्वारा अपने अहं को अक्षुण्ण रखने का पूर्ण प्रयास किया है। परिवेश बोध, पात्रों की मानसिकता, जीवन का समग्र रूप आदि दर्शाने का सफल परिश्रम उन्होंने किया है। अज्ञेय द्वारा लिखित तीन उपन्यास हैं।

1. शेखर एख जीवनी (दो भागों में)
2. नदी के द्वीप
3. अपने अपने अजनबी

1.2.8.1 शेखर एक जीवनी

शेखर एक जीवनी अज्ञेय का पहला उपन्यास है। उनके कवि व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा से पूर्व उनके उपन्यास व्यक्तित्व की प्रसिद्धि हो गयी थी। यह दो खण्डों में प्रकाशित हुआ। इसका प्रथम भाग सन् 1941 में तथा द्वितीय भाग सन् 1944 में प्रकाशित हुआ। उपन्यास की सारी कथा शेखर का मानसिक प्रत्यावलोकन है। शेखर को हमेशा लगता है कि उसने जीवन का अर्थ खो दिया है। डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र लिखते हैं, शेखर एक जीवनी अपनी संरचनात्मक विशिष्टता और अनेक स्तरीय संप्रेषणीयता के कारण हिन्दी की पहली आधुनिक कृति है। शेखर का विद्रोह वैयक्तिक स्तर पर जितना उत्कट है उतना ही जीवन के अन्य क्षेत्रों में प्रखर होता है। हिन्दी के इतिहास में यह उपन्यास अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

1.2.8.2 नदी के द्वीप

अज्ञेय का दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास है 'नदी के द्वीप'। जिसका प्रकाशन सन् 1951 में हुआ। नदी के द्वीप एक प्रणयकथा है। बीसवीं शताब्दी की वैज्ञानिक चेतना युक्त आधुनिक काल में मानव जीवन के अत्यधिक निर्वैयक्तिक होते जाने को उपन्यास में अत्यंत संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। यह एक चरित्र प्रधान उपन्यास है। भुवन, चंद्रमाधव, रेखा और गौरा के माध्यम से अज्ञेय ने संवेदना पथ को प्रस्तुत किया है। नदी के द्वीप के बारे में अज्ञेय लिखते हैं कि 'वह व्यक्ति चरित्र का चरित्र के उद्घाटन का उपन्यास है ..... उसमें जो विकास है, वह चरित्र का नहीं, संवेदना का ही है।' यह उपन्यास लघु समाज के व्यक्तित्व के संकट स्थिति को उसके संपूर्ण उथल पुथल के साथ दर्शाता है। इसमें उठाया गया सवाल नैतिक है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

1.2.8.3 अपने-अपने अजनबी

अपने-अपने अजनबी अज्ञेय का तीसरा और अंतिम उपन्यास है। जिसका प्रकाशन सन् 1961 में हुआ। यह अस्तित्ववादी दर्शन पर आधृत उपन्यास है। सेल्मा और योके के माध्यम से इस उपन्यास में अज्ञेय ने मृत्यु-बोध से उत्पन्न निरर्थकता और आंतरिक तनाव की स्थिति में जीवन को खोजने का प्रयास किया है। इस उपन्यास का परिवेश विदेशी है। भाषा की सादगी इस उपन्यास की विशेषता है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं। अपने अपने अजनबी में लेखक उस स्तर पर पहुँच जाता है, जहाँ व्यक्ति, समाज और व्यक्तित्व के भेद नहीं रह जाते जहाँ जीवन अपनी समग्रता में है।

1.2.9 निबंधकार अज्ञेय

अन्य साहित्य-विधाओं की तरह प्रौढ था अज्ञेय का निबंध साहित्य। उन्होंने चार निबंध संग्रह प्रकाशित किए। उनके सभी निबंध ललित-निबंध की कोटि में आते हैं। शुरू में 'कुट्टिचात्तन' साहित्यिक नाम से लिखते थे। उनका प्रथम निबंध संकलन 'सबरंग' था। सन् 1956 में पहली बार वह मुद्रित हुआ था। यही संकलन 'सबरंग' और 'कुछ राग' नाम से 1982 में पुनर्मुद्रित हुआ। उसका परिचय स्वयं लेखक ने इस तरह दिया है कि वह इन रचनाओं पर सटीक टिप्पणी बन जाता है - 'सबरंग और थोडा राग' : राग के नाम पर कुछ एक नये निबंध हैं जिनमें कुछ यहाँ पहली बार प्रकाश में आ रहे हैं। पहले भी सब रंग ही रंग नहीं था, थोडा राग-दोष भी उसमें व्यंग्य था, नये-निबंधों में इसका कसैलापन अधिक है शायद, राग-रंग के बीच इस नये राग स्वर की पहचान पर अपना राग करिबेन ना', यही अनुरोध है। अपने निबंधों में उन्होंने अपनी वाक्-प्रतिभा का परिचय दिया है।

1.2.9.1 कहाँ है द्वारका

अज्ञेय का दूसरा निबंध-संग्रह है - कहाँ है 'द्वारका'। इसका प्रकाशन सन् 1982 में हुआ था। इसमें बारह निबंध संकलित हैं। ललित निबंध की दृष्टि से देखा जाय तो यह एक प्रौढ निबंध संग्रह है। भाषा की गरिमा व श्रेष्ठता अनके निबंधों की विशेषता है।

1.2.9.2 छाया का जंगल

यह अज्ञेय के ललित निबंधों का तीसरा संग्रह है। इसका प्रकाशन 1984 में हुआ था। इस नाम से निबंध लिखने की प्रेरणा लेखक को प्राप्त एक अनुभव से मिली थी। उनके द्वारा ही आयोजित जय जानकी जीवन यात्रा के दौरान वाल्मीकी नगर के अरण्य में हुए एक अनुभव छाया का जंगल शीर्षक निबंध का कारण बना इसमें एक तरह की अनुभव सिद्ध दार्शनिकता भी लक्षित है। छाया का जंगल में तल्लीन होकर अज्ञेय जी लिखते हैं - एक तो प्रेम है जो सूर्य है- उसके धाम में जीना एक आलोकित जीवन है और उससे एक असन्दिग्ध छाया थी पड़ती है। जो प्रेममय है उसकी यह छाया ही उसी के समक्ष उसके अस्तित्व का प्रमाण देती है। नहीं तो वह शायद एकान्त रूप से आत्मविस्मृत हो जाए। उसकी छाया ही उसे संज्ञान दिलाती है, बोध कराती है कि वह है।

उनके निबंध अध्ययनात्मक हैं। उसमें विषय की विभिन्नता के साथ समाजोपयोगी तत्व भी विद्यमान है। समाज की अस्मिता की खोज, आत्म-परिकल्पना विविधोद्देश्य आदि उनके निबंधों की विशेषताएँ हैं।

1.2.10 अज्ञेय का यात्रावृत्त

यात्रावृत्तांत लिखना अज्ञेय को बहुत प्रिय लगता था। उनके द्वारा रचित यात्रावृत्तांत है 'अरे यायावर रहेगा याद' (1983)। वे यात्रा-स्थलों की जानकारी हीं नहीं देता, बल्कि उनसे जुडे मानव के इतिहास और सांस्कृतिक चरित्र पर भी उनकी आँख बराबर रहती है। अज्ञेय का और एक यात्रावृत्तांत है 'एक बूँद सहसा उछली'। 'अरे यायावर रहेगा याद' में लेखक के भारतीय यात्रानुभवों का मार्मिक वर्णन है तो दूसरे में उनके विश्व यात्रा का संवेदना संपन्न चित्रण मिलता है।

Critical Overview / अवलोकन

विशिष्ट साहित्यकार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के साहित्य में प्रवेश तथा उनकी विभिन्न साहित्य धाराओं का अध्ययन हमने किया। हमने पढ़ा कि उनके प्रेरणास्रोत कविगण मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध और श्रीधर पाठक थे। आगे हमने अज्ञेय की काव्यरचनाओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटक तथा निबंधों का परिचयात्मक अध्ययन किया। अज्ञेयजी के साहित्य संसार के विभिन्न पहलुओं से होते हुए उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का यथार्थ चित्र का अध्ययन इस इकाई में हुआ है।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय का जन्म 7 मार्च 1911 को हुआ था।
- उनका असली नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन था।
- वे हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, लेखक और चिंतक थे।
- उन्होंने अपनी कविताओं में जीवन के गहरे और जटिल पहलुओं को व्यक्त किया।
- अज्ञेय ने संस्कृत, अंग्रेजी और फारसी में शिक्षा ली थी।
- उनका साहित्यिक कार्य आधुनिक हिन्दी कविता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- वे प्रयोगवादी कवि थे, जिन्होंने नई शैलियों और विचारों को अपनाया।
- उनकी कविताओं में अस्तित्ववाद, प्रेम, मृत्यु और समाज की समस्याएँ जैसे विषय होते थे।
- अज्ञेय की प्रमुख कविताएँ 'भग्नदूत', 'चिंता' और 'संसार' हैं।
- उन्होंने हिन्दी कहानी लेखन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- अज्ञेय के लेखन में गहरी सोच और बौद्धिकता झलकती है।
- उनकी कविताओं में आंतरिक संघर्ष और जीवन की कठिनाईयों को व्यक्त किया गया है।
- वे हिन्दी साहित्य में अपनी अनूठी शैली के लिए प्रसिद्ध हैं।
- अज्ञेय की साहित्यिक सोच और दृष्टिकोण ने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अज्ञेय को सबसे प्रभावित करने वाले अंग्रेज़ी साहित्यकार कौन थे?
2. अज्ञेय की प्रथम कविता कहाँ छपी थी?
3. अज्ञेय का पहला कविता संकलन का नाम क्या है?
4. असाध्यवीणा किसकी लंबी कविता है?
5. अज्ञेय के किस कविता खण्ड में ग्रीक भाषा से हिन्दी में रूपान्तरित कविताएँ सम्मिलित की गई हैं?
6. अज्ञेय की कहानियाँ किस साहित्यकार की कहानी परम्परा को आगे बढानेवाली हैं?
7. अज्ञेय अपनी कहानियों में किसको ज्यादा महत्व देते हैं?
8. अज्ञेय द्वारा रचित एकमात्र नाटक का नाम क्या है?
9. 'कल्मष कलंक धुल गया आह'-किस पात्र का कथन है?
10. 'शेखर एक जीवनी' किसका प्रसिद्ध उपन्यास है?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

11. 'शेखर एक जीवनी' कितने खण्डों में प्रकाशित हुआ?
12. आरंभ में अज्ञेय ने किस साहित्यिक नाम से निबंध लिखते थे?
13. 'छाया का जंगल' किस साहित्यकार का निबंध संग्रह है?
14. 'अपने अपने अजनबी' में लेखक उस स्तर पर पहुँच जाता है, जहाँ व्यक्ति समाज और व्यक्तित्व के भेद नहीं रह जाते -किसका कथन है?
15. 'अज्ञेय' द्वारा रचित दो यात्रावृत्तांतों के नाम लिखिए?

Answers / उत्तर

1. आल्फ्रेड़ टेनीसन
2. लाहौर कॉलेज की पत्रिका में
3. भग्नदूत
4. अज्ञेय
5. देलोस से एख नाव
6. जैनेन्द्र की कहानी-परम्परा
7. व्यक्ति को
8. उत्तरप्रियदर्शी
9. प्रियदर्शी
10. अज्ञेय
11. दो खण्डों में
12. कुट्टिचात्तन
13. अज्ञेय
14. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
15. अरे यात्रावर रहेगा याद और एक बूँद सहसा उछली

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अज्ञेय की साहित्य साधना की प्रेरणा स्रोत के बारे में लिखिए।
2. अज्ञेय के काव्य-संसार की परिचयात्मक अभिव्यक्ति दीजिए।
3. नाटककार अज्ञेय के बारे में अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. निबंधकार अज्ञेय पर टिप्पणी लिखिए।
5. उपन्यासकार अज्ञेय पर एक लेख तैयार कीजिए।
6. अज्ञेय के निबंधों एवं यात्रावृत्तों पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. लोकप्रिय साहित्यकार अज्ञेय, वाणी प्रकाशन
2. अज्ञेय की जीवन रेखा - गोपाल राय
3. कहानीकार अज्ञेय - गोपाल राय
4. कवि अज्ञेय - गोपाल राय
5. युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार मिश्र
6. अज्ञेय व्यक्तित्व और कृतित्व - कृष्णदत्त पालीवाल
7. युगपुरुष कवि अज्ञेय, डॉ. रामेश्वर बांगड़, विद्याप्रकाशन, कानपुर।
8. तार सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
9. दूसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
10. तीसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
11. संपूर्ण कहानियाँ, अज्ञेय, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।
12. अज्ञेय, रमेशपन्द शाह, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
13. सदानीरा, अज्ञेय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

BLOCK - 02

कवि अज्ञेय

इकाई 1

तारसप्तक और अज्ञेय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- तारसप्तक के नामकरण, प्रयोगवाद आदि के बारे में समझता है
- प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों से परिचित होता है
- नयी कविता के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक एवं चौथा सप्तक के कवियों तथा उनकी कृतियों से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

तार सप्तक से जुड़ी उपयोगी जानकारियों के अतिरिक्त उसका परिवेश, नयी कविता एवं तत्संबंधी जानकारियाँ, आदि के बारे में अध्ययन संभव है। नयी कविता की प्रवृत्तियाँ तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक आदि संपादित कृतियों में जुडे रचनाकारों की परिचयात्मक प्रस्तुति इसमें दी हुई है। विद्यार्थी बंधु की जानकारी के लिए तार सप्तक की भूमिका का अंश भी दिया गया है। इस इकाई की सबसे बडी विशेषता है प्रयोग। प्रयोग से जुडे अनेक संदर्भों से रूबरू होने का अवसर यह अध्याय प्रदान करता है। प्रयोग और नयी कविता, उसका परिवेश समाज में लघुमानव का प्रतिष्ठित होना, उसमें प्रयोगवादी कवियों की प्रयोगधर्मिता आदि विशेष उल्लेखनीय है। तार सप्तक विषयक अपेक्षाओं का पूरा-ध्यान रखा गया है। साहित्य में तारसप्तक की उपस्थिति को भलीभाँति अध्येता समझ सकता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

उथल-पुथल, 'एकस्पेरिमेंटलिज्म', तारसप्तक, लघुमानव

Discussion / चर्चा

2.1.1 तारसप्तक और उसका परिवेश

तार सप्तक का प्रकाशन काल साहित्येतिहास की दृष्टि से ही नहीं सामाजिक, राजनीतिक आदि दृष्टियों से भी एक विशिष्ट काल है। राजनीतिक दृष्टि से यह काल है जिसमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन अत्यंत तेज़ी के साथ चल रहा था। इन दिनों राजनीति में समाजवादी विचार धारा पनपने लगी थी। उस दौरान 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई थी और कविगण प्रगतिशील कविताएँ लिखने में तत्पर थे। अंतर्राष्टीय स्तर पर अनेक घटनाएँ हो रही थीं। फासिज़्म का उदय, म्यूनिख समझौता, द्वितीय महायुद्ध की विनाशकारी छाया आदि अनेक उथल-पुथल चल रहे थे। इसी बीच सन् 1943 में बंगाल का भीषण अकाल पडा, जिसमें लाखों लोग भूख से मारे गये। इन्हीं घटनाओं ने साहित्यकारों को कल्पना लोक से निकलने पर मज़बूर किया। महायुद्ध,

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

भारत छोडो आंदोलन की निराशाजनक परिणति और भीषण दुर्भिक्ष के परिणाम स्वरूप तत्कालीन कवियों में समस्त यथार्थ बोध प्रकट हो गया। इस स्थिति ने समाज में निराशा फैला दी। साहित्य में उसके परिणामस्वरूप पराजय, भ्रम, क्षयग्रस्त कुंठा और अहंवाद की कालिमा छा गई। इसी स्थिति को प्रयोगशीलता ने अपनी रचनाओं के लिए स्वीकारा।

2.1.2 तार सप्तक से पहले की साहित्य-स्थिति

अज्ञेय का प्रयोगवाद समकालीन साहित्य परम्परा का प्रस्थान बिंदु है। उससे पहले हिन्दी कविता के क्षेत्र में प्रगतिवाद का प्रचलन था। मार्क्सवाद से ओतप्रोत (साम्यवादी) रचनाएँ समाज के निम्नवर्ग की जनता के जीवन पर आधृत थीं। सन् 1936 से सन् 1943 तक प्रगतिवाद काल माना जाता है। लेकिन इस युग में सांस्कृतिक समन्वय की एक विचारधारा चल रही थी। प्रगतिवाद का अत्यंत जनवादी दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया प्रयोगवादी कवियों में मिलता है। प्रगतिशील कवियों ने अनुभव किया कि कला को केवल जीवन के लिए मानना उपयुक्त नहीं है, कला का भी कुछ स्वतंत्र महत्व है। प्रयोगवाद के मूल में भी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक असंतोष रहा है। वह मार्क्सवाद और मनोविज्ञान से प्रभावित वाद विशेष है। काव्य के कलापक्ष के संबंध में प्रयोगशील कवि नवीन प्रयोगों के पक्षधर हैं। प्रगतिशील साहित्य में साहित्येतर मूल्यों को के न्द्र में स्थान मिला था, लेकिन प्रयोगवाद साहित्य मूल्यों को के न्द्र में रखकर आगे बढा।

2.1.3 प्रयोगवाद

प्रथम विश्वयुद्ध की भयानक नर-हत्या से आतुर हो यूरोप के अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य में नए-नए प्रयोग किए। अंग्रेज़ी में इस वाद को ‘एकस्पेरिमेंटलिज़्म’ कहा गया। हिन्दी में द्वितीय महायुद्ध के अंत होते होते इस नई विचारधारा का सूत्रपात हुआ। प्रयोगवाद की संज्ञा के संबंध में अज्ञेयजी का वक्तव्य इस प्रकार है - प्रयोग सभी कालों के कवियों ने किया है, किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक ही है। किंतु कवि क्रमशः अनुभव करता आया है कि जिन क्षेत्रों का अन्वेषण होना चाहिए जिन्हें अभी नहीं छुआ गया है या जिनको अभेद्य मान लिया गया है।

प्रयोगवाद ज्ञात से अज्ञात की ओर बढने की बौद्धिक चेतना है। यह चेतना व्यक्ति सत्य और समष्टि-सत्य के स्तरों पर व्यक्ति की अनुभूति की सार्थकता की खोज करता है। प्रत्येक परंपरा काल और देश के अनुसार प्रयोगात्मक रूप में विकसित होती है।

2.1.3.1 हिन्दी में प्रयोगवाद के प्रचलन के कारण

हिन्दी में इस विशिष्ट वाद के जन्म के कुछ कारण थे।

1. छायावाद ने अपने शब्दाडंबर में बहुत से शब्दों, प्रतीकों और बिंबों के गतिशील तत्वों को नष्ट कर दिया।
2. प्रगतिवाद ने सामाजिकता के नाम पर विभिन्न शब्द-संस्कारों को संकेतात्मक बना दिया था।
3. उक्त स्थिति में भाव-बोध को व्यक्त करने के लिए न तो शब्दों में सामर्थ्य था और न परंपरा से प्राप्त शैली में।

इन्हीं स्थितियों के कारण कवियों को नया स्तर और नये माध्यमों का प्रयोग करना पडा। यथार्थ के नये संदर्भ में प्रयोगवाद यथार्थ और जीवन की सापेक्षता को अधिक विस्तार देने का परिश्रम करता है। प्रयोगवाद कवि के व्यक्तित्व की स्वतंत्रता को स्वीकार करता है। प्रयोगवादी कवि अपनी अनुभूतियों के प्रति-अधिक से अधिक ईमानदारी का परिचय देता है। यदि यह ईमानदारी कविता में सुरक्षित है तो उसकी प्रेषणीयता और उसका प्रयोग भी सफल है।

2.1.3.2 प्रयोगवाद नामकरण

प्रयोग शब्द का संबंध विज्ञान के प्रयोग से न होकर आधुनिक चित्रकला के प्रयोग से है। प्रयोगवाद शब्द का प्रयोग सबसे पहले आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने अपने एक निबंध ‘प्रयोगवादी रचनाएँ’ में किया है। इस निबंध में मुख्य रूप से तारसप्तक की समीक्षा की गई है। उसमें उन्होंने लिखा है - पिछले कुछ समय से ही हिन्दी काव्य क्षेत्र में कुछ रचनाएँ हो रही

हैं जिन्हें किसी सुलभ शब्द के अभाव में प्रयोगवादी रचना कही जा सकती है। लेकिन अज्ञेय ने तारसप्तक की रचनाओं को प्रयोगवादी नहीं माना। लेकिन तारसप्तकीय कवियों के वक्तव्यों में इस शब्द का चलन हो जाना स्वभाविक था।

2.1.3.3 प्रयोगवाद के बारे में विभिन्न विद्वानों का मत

अनेक विद्वानों ने प्रयोगवाद पर अपने-अपने मत प्रकट किए हैं, यथा

1. धर्मवीर भारती का मत

"जहाँ तक इस काव्य ने नई परिस्थितियों से प्रभावित नई अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए नए काव्य रूप, नई कल्पनाएँ, नई गठन खोजे वहाँ तक यह काव्य निश्चय ही विकास और प्रगति में केवल सहायक न सिद्ध हुआ है वरन वह एक बहुत महत्वपूर्ण चरण रहा है।

2. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय का मत

'प्रयोगशील कविता में नये सत्यों या नई यथार्थताओं का जीवित बोध भी है, उन सत्यों के साथ नए रागात्मक संबंध भी और उनको पाठक या सहृदय तक पहुँचाने की शक्ति है।

3. गिरिजाकुमार माथुर का मत

'प्रयोगों का लक्ष्य है - व्यापक सामाजिक सत्य के खण्ड अनुभवों का साधारणीकरण करने में कविता को नवानुकूल मध्यम देना, जिसमें व्यक्ति द्वारा इस व्यापक सत्य का सर्वबोधगम्य प्रेषण संभव हो सके।

4. पं. नंददुलारे वाजपेई का मत

'किसी भी अवस्था में यह प्रयोगों का बाहुल्य वास्तविक साहित्य सृजन का स्थान नहीं ले सकता।

5. डॉ. देवराज का मत

'पुरानी कविता रूढिग्रस्त एवं अरोचक हो उठी है, काव्य को जब भाषा के निकट लाना है अथवा काव्य संबंधी अनुभूति को जनजीवन के सम्पर्क में लाना है, तीसरे बदले हुए जीवन की संभावनाओं के उद्घाटन के लिए, अथवा नये मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए नवीन प्रयोग करने हैं। इसीलिए नई-शैली का अर्थ है जीवन या अनुभव जगत के नये पहलुओं को नई दृष्टि से देखना और उन्हें नये चित्रों, प्रतीकों, अलंकारों द्वारा अभिव्यक्ति देना।

6. डॉ. रामेश्वर शर्मा का मत

'प्राचीन रूढियों और संस्कारों से जब मनुष्य को एक प्रकार की ऊब हो जाती है तब वह नवीनता की चाह करता है। इस कारण जीवन और सौंदर्य के मानदण्ड भी बदलते हैं, जैसे छायावाद का सूक्ष्म भाव-सौदर्य-दर्शन प्रगतिवाद युग में सामाजिक दर्शन की भूमिका पर उतर आया।

7. गजानन माधव मुक्तिबोध का मत

प्रयोगवादी सदैव नवीन प्रयोगों के अन्वेषण में लगा रहता है, वर्ण्य-विषय या भाव को मनोरम एवं सुबोध बनाने में वह समर्थ नहीं हो पाता।

हिन्दी की वर्तमान प्रयोगवादी कविता में हृदय और मस्तिष्क, अनुभूति और उक्ति वैचित्र्य के उचित समन्वय की आवश्यकता है।

8. हंसकुमार तिवारी का मत

वर्तमान युग प्रेरणा के प्रयोगों का युग है। इसलिए इसमें त्रुटि है, अभिनय है, असंयम है। जब इसका गवेषण खत्म हो जाएगा और निष्कर्ष हो जाएगा, तो साहित्य की गंगा शिवन धारा-सी संयम और निर्मल हो जाएगी। यही-विद्रोह फिर श्रृंखलाबद्ध हो जाएगा। इसलिए हमें सनातन परिपाटी के ध्वंस का रोना नहीं रोना चाहिए।

2.1.3.4 प्रयोगवाद की उत्पत्ति के मूलकारण

प्रयोगवाद की उत्पत्ति के मूल कारण हैं -

जब कोई प्राचीन सौंदर्य का मानदण्ड रूढिबद्ध हो जाता है, तब मानव का नवीन मानदण्डों का निर्माण करता है।

इन नवीन मानदण्डों से नवीन मान्यताएँ, नवीन सामाजिक क्रम तथा अन्य प्रकार से नवीनता का

प्रादुर्भाव होता है और उसका प्राचीनता से संघर्ष होता है।

कोई भी साहित्य सामाजिक क्रम से कदम मिलाकर नहीं चलता तो पिछड जाता है। इसलिए साहित्य में भाव के क्षेत्र में नूतनता शीघ्र ही ग्राह्य हो जाती है।

शैली क्षेत्र में प्राचीन रूढ एवं परम्पराबद्ध-अभिव्यंजना पद्धति जब नवीन भावनाओं को पूर्ण एवं सही रूप में अभिव्यक्त करने में समर्थ नहीं होती तो लेखक या कवि के मानस में एक संघर्ष पैदा होता है।

लेखक या कवि के हृदय में नवीन वस्तु और प्राचीन शैली के संघर्ष के फलस्वरूप भावव्यंजन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग होते हैं। प्रयोगवाद की नयी कविता का जन्म इन्हीं कारणों से हुआ।

प्रयोगवादी कविता उक्त नवीन वस्तु एवं प्राचीन शैली के संघर्ष के फलस्वरूप उद्‌भूत हुई, इसीलिए उसमें नवीन प्रतीक एवं उपमानों को ग्रहण किया गया है।

2.1.4 प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं -

2.1.4.1 यथार्थवाद का आग्रह

छायावाद में कल्पनाशीलता का आधिक्य था, प्रगतिवाद में सामाजिक यथार्थ की प्रवृत्ति भी और प्रयोगवाद में अतियथार्थवादी प्रवृत्ति की प्रचुरता लक्षित होती है। फ्रोइडियन मनोविश्लेषण के प्रभाव से प्रयोगवादी कविता में अतियथार्थवाद का चित्रण हुआ। प्रयोगवादी यथार्थ की मुख्य विशेषताएँ हैं -

2.1.4.2 गौण सामाजिकता

प्रयोगवादी कवि अपनी वैयक्तिकता का प्रकाशन करके समाज के मध्यवर्गीय मानव की दुर्बलता का प्रकाशन करते हैं। प्रयोगवादी कवि अपनी-यथार्थवादिता दिखाने के लिए यौन वर्णनाओं एवं कुंठित वासनाओं का चित्रण करते हैं। अज्ञेय ने वासना की छाया का वर्णन अपनी 'चिंता' काव्य में किया है -

"छाया छाया तुम कौन

ओ श्वेत, शान्त घन अवगुंठन तुम कौन सी आग की तड़प छिपाए हुए हो।"

2.1.4.3 कल्पनाशीलता

प्रयोगवादी कवियों ने प्रवृत्ति के चिर-परिचित उपमानों को अपनी विशिष्ट यथार्थवादिता का परिचय देने के लिए दर्शाया है। यह नग्न यथार्थ का रूप है। अज्ञेय ने 'शिशिर की राका निशा' कविता में दिखाया है -

"वंचना है चाँदनी रात
झूठ वह आकाश का निरवधि गहन विस्तार
शिशिर की राका निशा की शान्ति है निस्सार!"

2.1.4.4 लघुता के प्रति दृष्टिपात

प्रयोगवादी कवियों ने मानव जगत की लघु वस्तुओं को अपने काव्य में स्थान दिया। उन्होंने प्रकृति और यंत्र-जगत की लघु वस्तुओं को अपने काव्य का विषय बनाया। इसलिए प्रयोगवादी कविता में पहली बार 'कंकरीट के पोर्च', 'चाय की प्याली', 'रेडियम की घडी', 'चूडी का टुकडा' इत्यादि का चित्रण हुआ है। 'रात' शीर्षक कविता के इस चित्रण में यह प्रवृत्ति नज़र आती है।

"ठंडी हो रही है रात
धीमी
यंत्र की आवाज़!
स्तब्धता को चीर देती है
कभी सीटी कहीं से दूर इंजन की,
कहीं मच्छर तडप भन-भन
अनोखा शोर करते हैं,
चूहे भूखे निकलकर
तोड़ ताबड़ जोर करते हैं।

2.1.4.5 बौद्धिकता की प्रतिष्ठा

प्रयोगवादी कवियों ने भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता की प्रतिष्ठा की। प्रयोगवादी कवि-धर्मवीर भारती ने लिखा है - "प्रयोगवादी कविता में भावना है, किन्तु हर भावना के सामने एक प्रश्न चिह्न लगा

हुआ है। इसी प्रश्न चिह्न को आप बौद्धिकता कह सकते हैं। 'हरी घास पर क्षण भर' कविता में अज्ञेय ने बौद्धिकता की प्रतिष्ठा की है -

"चलो उठें अब,
अब तक हम थे बंधु
सैर को आए
और रहे बैठे तो
लोग कहेंगे

धुँधले में दुबके दो प्रेमी बैठे हैं
वह हम हो भी
तो यह हरी घास ही जाने।"

(आ) प्रेम का उदात्त स्वरूप

प्रयोगवादी काव्य में प्रेम का उदात्त स्वरूप मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित है। उसमें दमित वासना की अभिव्यक्ति की प्रचुरता है। इस प्रकार प्रयोगवादी कवि पर मनोविश्लेषण विज्ञान का बहुत बड़ा प्रभाव पडा। वह काम-प्रवृत्ति को समस्त मानव प्रवृत्तियों का केन्द्र बिंदु स्वीकार कर सका। अज्ञेय ने तारसप्तक की भूमिका में कहा है कि आधुनिक युग का साधारण व्यक्ति सेक्स संबंधी वर्जनाओं से आक्रांत है, उसका मस्तिष्क दमन की गई सेक्स की भावनाओं से भरा हुआ है। अज्ञेय ने प्रेम में सरलता एवं स्वच्छंदता के अभाव का कारण धार्मिक और मानसिक संस्कारों को बताया है। यह मनोविश्लेषणवाद का ही प्रभाव है। प्रयोगवादी कवि की वासना बादलों को देखकर उद्दीप्त हो उठती है -

आह, मेरा श्वास है उत्तप्त
धमनियों में उमड़ आई है लहू की धार-
प्यार है, अभिशप्त
तुम कहाँ हो नारी।

(इ) विद्रोहात्मक स्वर -

प्रयोगवादी कवियों ने प्राचीनता का परित्याग कर कला के क्षेत्र में नए प्रयोगों को प्रतिष्ठित किया। वैसे कला के क्षेत्र में छन्दविधान तथा भाषा-शैली के प्रति-विद्रोह हुआ। इसका कारण तत्कालीन मध्यवर्ग की जर्जर अवस्था है। अज्ञेय की कविता में आततायी सामाजिक परिवेश को चुनौती मिलती है -

ठहर, 'हर आततायी ज़रा सुन ले।
मेरे क्रुद्ध वीर्य की पुकार आज सुन जा।

(ई) अतृप्त रागात्मकता

विद्रोह के तीव्र उद्‌गार प्रकट होने के कारण प्रयोगवादी कवियों की रागात्मकता का विकास नहीं हुआ। इन कवियों के प्रयोग की दिशा भी पूर्ण रूप से निश्चित नहीं हुई है। शमशेर की 'शरीर स्वप्न' शीर्षक कविता में इस प्रवृत्ति को देख सकते हैं -

मकई से लाल गेहूँए तलुए
मालिश से चिकने हैं
सूखी भूरी झाडियों में व्यस्त
चलती फिरती पिंडलियाँ।

(उ) सामाजिक विद्रूपता के प्रति व्यंग्य

प्रयोगशील कवि की दृष्टि में संहार के स्वर अधिक तीक्ष्ण है। उसकी दृष्टि जीवन की कुरूपता पर टिकती है। उन्होंने नई सभ्यता से प्रभावित सामाजिक जीवन की विद्रूपता पर व्यंग्य किया है। 'पीस पैगोडा' शीर्षक कविता में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने बडे मार्मिक व्यंग्य प्रस्तुत किया है -

मुझे इसमें इतराज नहीं है
कि तुमने शान्ति लिखते समय
एक-दूसरे की ओर न देखकर
अपने रिवालवरों की ओर देखा
मुझे इसमें भी इतराज नहीं है
कि तुमने करुणा और स्नेह से
एक दूसरे के सम्मुख सर झुकाने के बजाय
अपने भारी फौजी बूटों से ठोकरों
की आवाज़ की।

(ऊ) प्रकृति-चित्रण

प्रयोगवादी कवि ने प्रकृति का दृश्य चित्रण, संश्लिष्ट बिंब-योजना के द्वारा प्रस्तुत किया है। 'रूपांबरा' काव्य संग्रह में भारत भूषण अग्रवाल ने लिखा हैं -

फूटा प्रभात, फूटा विहान
बह चले रश्मि के प्राण, विहग के गान
मधुर निर्झर के स्वर
झर-झर, झर-झर।

(ऋ) वैचित्र्य प्रदर्शन

प्रयोगवादी कवि अपनी मानसिक उलझन को व्यक्त करने के लिए वैचित्र्य प्रदर्शन करते हैं। वह वर्णन वैचित्र्य के साथ वर्ण्य वैचित्र्य भी करता है। अज्ञेय की 'हवाई यात्रा' नामक कविता में इस प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। इसमें उनका लक्ष्य केवल विलक्षणता, आश्चर्य की दुरूहता से अपनी नूतनता प्रकट करना ही प्रतीत होता है। अज्ञेय जी लिखते हैं -

अगर कहीं मैं तोता होता
तो क्या होता
तो क्या होता
तो होता।

(ए) सौंदर्य बोध

सौंदर्यवाद एक शाश्वत प्रवृत्ति है। प्रयोगवादी कवियों ने अति उपेक्षित वस्तु या स्थान का बडा सौंदर्यपूर्ण वर्णन किया। इन्होंने बडे व्यापक स्तर पर दृष्टिपात कर नए सौंदर्य बोध स्थापित किए। 'हवा चली' शीर्षक कविता में हम यह प्रवृत्ति देख सकते हैं -

हवा चली
छिपकली की टाँग
मकडी के जाले में फँसी रही फँसी रही।

(ऐ) शैली-शिल्प के नए रूप

प्रयोगवादी कवियों ने भाषा और शैली के विभिन्न प्रयोग किए हैं। इसकी प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन यहाँ प्रस्तुत है -

1. प्रतीक विधान

प्रयोगवादी कविता में यौन वर्जनाओं की अभिव्यक्ति अधिकतर प्रतीकों के माध्यम से हुई है। प्रयोगवादी कविता में प्रतीकों का प्रचुर प्रयोग देखकर इसे कुछ आलोचक प्रतीकवाद के नाम से पुकारते हैं। इसमें प्रतीकों का अत्यंत सांकेतिक वर्णन मिलता है। अज्ञेय जी की सावन-मेघ कविता में यौन प्रतीकों का प्रयोग किया गया है -

घिर आया नभ, उमड़ आये मेघ काले
भूमि के कंपित उरोजों पर झुका-सा
विशद, श्वासाहत चिरातुर
छा गया इन्द्र का नील वक्ष।

2. नवीन उपमान

आज की नवीन परिस्थितियों में प्राचीन रूढ उपमान भावनाओं को पूर्ण एवं सही रूप में अभिव्यक्त नहीं कर पाते। इसलिए प्रयोगवादी कवि नए उपमानों को व्यवहार में लाए। सक्सेना ने मध्यवर्गीय स्त्री के चित्र उपस्थित करने के लिए नवीन उपमानों का प्रयोग किया है -

थर्मामीटर के पारे सी
चुपचाप जिसमें भावनाएँ चढती उतरती है
अखण्ड कीर्तन की
थकी हुई अस्पष्ट धुन सी
जिसकी जिंदगी है।

3. शैली के नवीन प्रयोग

प्रयोगवादी कवियों ने शैली के अनेक नवीन प्रयोग किए हैं। कहीं कहीं दस-दस पंक्तियों में एक ही वाक्य की योजना की है। प्रयोगवादी कवियों की शैली की एक विशेषता चित्रात्मकता है। गिरिजा कुमार माथुर की 'शाम की धूप' कविता में शैली के नवीन प्रयोगों का नज़ारा मिलता है -

क्योंकि अब बंद हो गए दफ्तर
घंटियाँ बज रही हैं रिक्शों की,
बीसियों साइकिलों की पाँतें
कैरियर टोकरी या हैंडिल में,
कुछ में खाली कटोरदान बँधे,
कुछ में हैं फाइलें हर छिन भूखी।
जो न कभी खत्म हुई आफिस में।

4. शब्द चयन

प्रयोगवादी कवि भाषा की दृष्टि से नवीन प्रयोगों के आग्रही हैं। अपनी कविता के लिए उन्होंने विज्ञान, दर्शन, भूगोल, मनोविश्लेषण, शास्त्र, ग्रामीण बोली, आदि से शब्द लेते हैं। कहीं कहीं प्रादेशिक शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। प्रारंभ में प्रयोगवादी कवि बहुत क्लिष्ट-पद योजना करते थे, जैसे अज्ञेय की इस कविता में है -

निबिडान्धकार
को मूर्त रूप देने वाली

एक अकिंचन, निष्प्रभ अनाहुत
अज्ञात, द्युति किरण
आसन्न पतन .... आदि।

5. छन्द योजना

प्रयोगवादी कवियों ने कहीं कहीं लोक-गीतों की धुन पर गीत गढे हैं, तो कहीं कहीं मुक्त छंदों में नए-नए लय और नए-नए स्वर मिलते हैं। नरेश मेहता के गीतों में वर्ग गीतात्मकता है -

चलते चले चलते चलो।
सूरज के संग-संग चलते चलो, चलते चले।
तुम के जो बंदी थे,
सूरज ने मुख्त किए
किरनों ने गगन पोंछ
छरती को रंग दिये।

6. ध्वन्यात्मकता

प्रयोगवादी कविता में ध्वन्यात्मकता की प्रवृत्ति दृष्टि गोचर होती है, जैसे अज्ञेय की कविता में ओसकण की तिप-तिप, पहाडी कौए की हाक्-हाक आदि।

2.1.5 प्रयोगवादी कविता का भावपक्ष

प्रयोगवादी कविता की विषय-सामग्री का आधार सामायिक जीवन और समाज है। प्रयोगवादी कविताएँ अति वैयक्तिकता, बौद्धिकता और श्रृंगारिकता से परिपूर्ण हैं। प्रयोगवादी कविता में मानव की व्याकुल चेतना के दर्शन होते हैं। नवीन प्रयोगों द्वारा उसकी अभिव्यक्ति की जाती है। कवि अपनी भावाभिव्यंजना में सूक्ष्म नवीन प्रतीक एवं उपमानों का सहारा लेता है।

2.1.6 प्रयोगवाद और नयी कविता

प्रयोगवाद का अगला सोपान है नयी कविता। सन् 1950 के बाद की बदली हुई काव्यधारा को 'नयी कविता' कहा जाने लगा। 'नयी कविता' शब्द अज्ञेय की देन है। यह नाम सन् 1954 में इलाहाबाद से डॉ. जगदीश गुप्त और डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के संपादकत्व में 'नयी कविता' नामक पत्रिका के प्रकाशित होने के बाद प्रचलित हुआ।

2.1.7 नयी कविता

सन् 1954 में प्रकाशित पत्रिका नयी कविता के संकलन में सुमित्रानंदन पंत ने लिखा है -

नयी कविता विश्व वर्चस्व से प्रेरणा ग्रहण करके तथा आज के प्रत्येक पल बदलते हुए युग को अपने मुक्त छंदों के संकेतों की तीव्र मन्द गति-लाने में अभिव्यक्त कर युग मानव के लिए नवीन भाव भूमि प्रस्तुत कर रही है।

नयी कविता भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी कविताएँ हैं, जिसमें नये भावबोध की अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही उसमें नये मूल्यों और नये शिल्प विधानों का अन्वेषण भी किया गया। नयी कविता पर डॉ. नगेंद्र का कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है -

नयी कविता में जीवन को पूर्ण रूप से स्वीकार करके उसे भोगने की लालसा है। मनोविज्ञान द्वारा उद्घाटित सत्यों ने यह प्रमाणित किया है कि हम क्षणों में जीते हैं। क्षणों की अनुभूतियाँ संपूर्ण जीवनानुभूति की बाधक नहीं, साधक हैं। क्षणों को सत्य मान लेने का अर्थ होता है, जीवन की एक-एक अनुभूति को, एक-एक व्यथा को, एक-एक सुख को, सत्य मान कर, जीवन को सघन रूप से स्वीकार करना। लघुमानवत्व की जो बात नयी कविता में उठायी गयी है, उसे भी जीवन की पूर्णता के ही संदर्भ में देखना होगा।

2.1.7.1 लघुमानव का अर्थ

लघुमानव वह सामान्य मनुष्य होता है जो अपनी सारी संवेदना, भूख-प्यास और मानसिक परेशानी को उपेक्षित पाता हो।

नयी कविता के अंतर्गत निम्नलिखित नवीन भावबोध के रूपों का उदय हुआ है -

1. मानव के भविष्य के प्रति आस्था
2. सर्जनात्मक व्यक्तित्व का अन्वेषण
3. अमूर्त सत्य की अभिव्यक्ति
4. अजनबीपन का भाव
5. अकेलेपन की मानसिक स्थिति
6. मूल्यहीनता और उत्तरदायित्व का दर्शन।

2.1.8 नयी कविता की प्रवृत्तियाँ

नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ - निम्नलिखित हैं -

- **बौद्धिकता** - नई कविता में बौद्धिकता का भाव अधिक है। लेकिन कविता को सरल रूप में समझने में बौद्धिकता बाधक रही है।
- **वैयक्तिकता** - नयी कविता में वैयक्तिकता के दो रूप होते हैं -
    1. नये मानवीय मूल्यों में आकृष्ट होने पर यह प्रवृत्ति अनुभूति की सच्चाई को दर्शाती है।
    2. वैयक्तिक स्वतंत्रता ने अनेक उलझी मनोवृत्तियों की सर्जना की है।
    3. मानवता के प्रति नवीन दृष्टिकोण - नयी कविता में मानवीय मूल्यों के अन्वेषण की कोशिश नज़र आती है।
    4. यथार्थवादिता का आग्रह - नयी कविता में यथार्थवादिता का आग्रह है। पहले यथार्थवाद मार्क्सवाद से प्रभावित था। लेकिन नई कविता में यथार्थवाद भावलोक का अंग बन गया।
    5. निराशा की अभिव्यक्ति - नयी कविता में निराशा का स्वर अधिक है। उसमें कुंठा, संदेह आदि की अभिव्यक्ति भी पायी जाती है।
    6. नवीन अप्रस्तुत विधान - नयी कविता में नवीन प्रतीक एवं अप्रस्तुतों का बाहुल्य है। ये अप्रस्तुत अर्थबोध कराने में सक्षम नहीं है।
    7. प्रतीक विधान - नयी कविता में बिंब योजना का प्राधान्य है, और ये बिंब प्रतीकात्मक एवं सांकेतिक हैं। नयी कविता गहरी संवेदनाओं को प्रदृष्ट करने के लिए प्रतीकात्मक और सांकेतिक बिंबों की योजना करती है।
    8. नया लय एवं प्रवाहमयता - नवीन कविता में मुक्त छन्द प्रस्तुत है। उसमें लय एवं आंतरिक तुकों और प्रवाहमयता का ध्यान रखा गया है।

2.1.9 तारसप्तक के कवि और उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ

तारसप्तक के कवि और उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

तारसप्तक के संपादक अज्ञेय के प्रमुख काव्य संग्रह हैं, (1) 'भग्नदूत' (1933), (2) 'चिंता' (1942), (3) 'इत्यलम' (1946), (4) 'हरी घास पर क्षण भर'(1949), (5) 'बावरा अहेरी' (1954), (6) 'आँगन के पार द्वार' (1961), (7) 'कितनी नावों में कितनी बार' (1967) आदि।

उनकी प्रसिद्ध कविताओं में 'असाध्यवीणा', 'कलगी बाजरे की', 'साँप', 'नदी के द्वीप' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

2. गजानन माधव मुक्तिबोध

गहन अनुभूति और तीव्र इंद्रियबोध का कवि मुक्तिबोध के प्रमुख काव्य संग्रह हैं:-

1. चाँद का मुँह टेढा है (1964)
2. भूरि भूरि खाक धूल (1980)

मुक्तिबोध की सबसे प्रसिद्ध कविताएँ 'अंधेरे में' और 'ब्रह्मराक्सस' हैं। अंधेरे में कविता का पहला प्रकाशन 1964 में 'कल्पना' पत्रिका में 'आशंका के द्वीप अंधेरे में' नाम से प्रकाशित हुआ।

3. प्रभाकर माचवे

प्रभाकर माचवे के प्रमुख काव्य संग्रह हैं,

1. मेपल, (2) स्वप्न भंग (3) अनुक्षण

4. रामविलास शर्मा

रामविलास शर्मा की ख्याति मुख्यतः उनकी गद्य कृतियों के कारण मिली हैं। हिन्दी के प्रमुख आलोचक के रूप में उनका नाम मशहूर हुआ। उनके काव्य संग्रह हैं,

1. रूप तरंग (1956)
2. सदियों के सोए जाग उठे (1988)
3. बुद्ध वैराग्य तथा प्रारंभिक कविताएँ (1997)

5. नेमिचन्द जैन

नेमिचन्द जैन के कविता संकलन हैं-

1. अचानक हम फिर
2. एकान्त

6. गिरिजाकुमार माथुर

उनकी 'हम होंगे कामयाब' शीर्षक कविता काफी प्रसिद्ध हुई थी। उनके प्रमुख काव्य संग्रह है;

1. मंजीर
2. नारा और निर्माण
3. धूप के धान
4. शिला पंख चमकीले
5. छाया मत छूना
6. भीतरी नदी की यात्रा
7. अभी कुछ और
8. साक्षी रहे वर्तमान
9. पृथ्वी कल्प आदि।

7. भारतभूषण अग्रवाल

भारत भूषण अग्रवाल के प्रमुख काव्य संग्रह हैं,

1. छवि के बंधन
2. मुक्ति मार्ग
3. ओ अप्रस्तुत मन
4. कागज के फूल
5. एक उठा हुआ हाथ
6. उतना वह सूरज है आदि।

2.1.10 'दूसरा सप्तक' के कवि और रचनाएँ

दूसरा सप्तक का प्रकाशन सन् 1951 में हुआ था। दूसरा सप्तक के सात कवि और उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं,

1. शमशेर बहादूर सिंह

शमशेर बहादूर सिंह का कथन है - "मैं उर्दू और हिन्दी का दोआब हूँ।" उनके चर्चित काव्य-संग्रह हैं -

1. चुका भी हूँ नहीं मैं (1975)
2. इतने अपने पास (1980)
3. उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष (1980)
4. बात बोलेगी (1981)
5. काल तुमसे होड है मेरी (1988)
6. कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ (1995)
7. सुकून की तलाश।

अज्ञेय ने उनके बारे में कहा है कि 'शमशेर कवियों का कवि' हैं। शमशेर की प्रसिद्ध कविताएँ हैं -

1. टूटी हुई बिखरी हुई
2. अमन का राग (लंबी कविता)
3. एक पीली शाम
4. धूप कोठरी के आइने
5. घिर गया है समय का रथ
6. समय साम्यवादी आदि।

2. भवानी प्रसाद मिश्र

कहानीकार उदयप्रकाश ने भवानी प्रसाद मिश्र को 'कविता का गाँधी' कहा है। उन्हें सहजता का कवि कहा गया है। उनके चर्चित काव्य संग्रह है -

1. गीत फरोश (1953)
2. चकित है दुख (1968)
3. अंधेरी कविताएँ (1968)
4. बुनी हुई रस्सी (1971)
5. खुशबू के शिलालेख (1973)
6. इदं न मम (1977)
7. त्रिकाल संध्या (1976)
8. तूस की आग (1985)
9. कालजयी (1980) (खण्डकाव्य)।

3. शकुन्तला माथुर

दूसरे सप्तक के प्रमुख कवि शकुन्तला माथुर के चर्चित काव्य संग्रह हैं -

1. चाँदनी चूनर
2. अभी और कुछ
3. लहर नहीं टूटेगी आदि।

4. हरिनारायण व्यास

हरिनारायण व्यास का पूरा नाम हरिनारायण घनश्याम व्यास था। उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं -

1. मृग और तृष्णा
2. त्रिकोण पर सूर्योदय
3. बरगद के चिकने पत्ते।

5. नरेश मेहता

नये कवियों में नरेश मेहता का नाम प्रमुख है। उन्हें सन् 1992 का ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं -

1. वन पाखी सुनो
2. बोलने दो चीड़ को
3. मेरा समर्पित एकांत
4. चैत्या
5. उत्सवा आदि।

उनके प्रबंध काव्य हैं -

1. संशय की एक रात
2. महाप्रस्थान
3. प्रवादपर्व
4. शबरी।

'समय देवता' शीर्षक कविता इनकी लंबी कविता है जिसमें धरती के विभिन्न भागों की सांस्कृतिक राजनीतिक स्थिति का दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

6. धर्मवीर भारती

वे प्रेम के कवि के नाम से विख्यात हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं -

1. ठण्डा लोहा (1952)
2. अंधा युग (1955)
3. कनुप्रिया (1959)
4. सात गीत वर्ष (1959)
5. देशान्तर

7. रघुवीर सहाय

दूसरा सप्तक का सशक्त कवि है रघुवीर सहाय। उनके कविता संकलन हैं -

1. सीढियों पर धूप में (1960)
2. आत्महत्या के विरुद्ध (1967)
3. हँसो हँसो जल्दी हँसो (1975)
4. लोग भूल गए है (1982)
5. कुछ पत्ते कुछ चिट्ठियाँ (1989) आदि।

2.1.11 'तीसरा सप्तक' के कवि और उनकी रचनाएँ

'तीसरा सप्तक' के कवि और उनकी रचनाएँ निम्न हैं,

1. प्रयाग नारायण त्रिपाठी

वे सन् 1950 से भारत सरकार के सूचना मंत्रालय में सम्पादक रहे। रामायण, गीता, उपनिषदादि पर गंभीर भाषणकर्ता के रूप में वे प्रसिद्ध हैं। उनकी प्रमुख कविताएँ हैं -

1. समाधिस्थ
2. संख्या प्रेम
3. यह हाथ
4. अधूरा गीत
5. अंतिम दो क्षण
6. नयी बरसात
7. विदा के क्षणों में
8. समानान्तर लकीरें
9. प्रभु की खोज आदि।

2.कीर्ति चौधरी

कीर्ति चौधरी हिन्दी साहित्य में तीसरा सप्तक की प्रमुख कवियों में से एक है। इनका मूल नाम कीर्ति सिन्हा था। उनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं -

1. विगत

2. आगत का स्वागत
3. दायित्वभार
4. तुझसे नेह लगाया
5. मन करता है
6. प्रतीक्षा
7. सीमा-रेखा
8. एकलव्य
9. पंख फैलाये
10. बरसते हैं मेघ झर-झर आदि।

3. कुँवर नारायण

अज्ञेय द्वारा संपादित तीसरा सप्तक के विशिष्ट कवियों में कुँवर नारायण का प्रमुख स्थान है। वर्ष 2005 का ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कुँवर नारायण ने अनेक रचनाएँ हिन्दी साहित्य को प्रदान की हैं। उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं -

1. चक्रव्यूह (1956)
2. परिवेश हम-तुम (1961)
3. आमने सामने (1970)
4. कोई दूसरा नहीं (1995)
5. इन दिनों (2002)

उनकी द्वारा रचित खण्ड काव्य हैं -

1. आत्मजयी (1965)
2. वाजश्रवा के बहाने (2008)।

4.केदारनाथ सिंह

हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कवियों में केदारनाथ सिंह का नाम भी शामिल है। वर्ष 2013 का ज्ञानपीठ पुरस्कार केदारनाथ सिंह को प्राप्त हुआ। वे नयी कविता में बिंब को बहुत महत्व देते हैं। उनकी महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ निम्न लिखित हैं -

1. अभी बिलकुल अभी
2. ज़मीन पक रही है
3. यहाँ से देखो
4. अकाल में सारस
5. उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ
6. बाघ (कविता)
7. टालस्टाय और साइकिल

उनकी चर्चित कविताएँ हैं -

1. बनारस
2. अनागत
3. फर्क नहीं पड़ता आदि।

4. मदन वात्स्यायन

मदन वात्स्यायन का मूल नाम लक्ष्मी निवास सिंह है। सॉनेट लिखने में वे सिद्धहस्त थे। उनकी कविताओं का एक संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित हुआ था। उसका शीर्षक था-शुक्रतारा।

उनकी प्रसिद्ध कविताएँ नीचे दी गयी हैं -

1. उषा-स्तवन
2. शुक्र-तारा
3. सुशिप्रा की वर्षगाँठ पर
4. स्वरित्त, मेरी बेटी
5. दो बिहाण
6. अपथगा
7. मिथिला में बाढ आदि।

6. विजयदेव नारायण साही

समाजवादी आंदोलनो में शामिल होकर समाज के लिए कार्य करनेवाले विशिष्ट कवि है विजयदेव नारायण साही। उनके द्वारा रचित काव्य संग्रह हैं -

1. मछलीघर
2. संवाद तुमसे और साखी।

उनकी प्रमुख कविताएँ हैं -

1. मानव राग
2. दर्द की देवापगा
3. नये शिखरों से
4. हिमालय के आँसू
5. रात में गाँव
6. ज्वर की गाँठ
7. खोल दिया पिंजरा आदि।

7. सवेश्वर दयाल सक्सेना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित है -

1. काठ की घण्टियाँ
2. बाँस का पुल
3. एक सूनी नाव
4. गर्म हवाएँ
5. कुआनो नदी
6. जंगल का दर्द

उनकी चर्चित कविताएँ हैं -

1. काफी हाउस में एक मेलोड्रामा
2. अहं से मेरे बडी हो तुम
3. विगत प्यार
4. लिपटा रजाई में
5. मैंने कब कहा आदि।

2.1.12 चौथा सप्तक के कवि

सन् 1979 में अज्ञेय द्वारा प्रकाशित चौथा सप्तक के कवि है -

1. अवधेश कुमार
2. राजकुमार कुंभज
3. स्वदेश भारती
4. नंदकिशोर आचार्य
5. सुमन राजे
6. श्रीराम वर्मा
7. राजेन्द्र किशोर।

2.1.13 अज्ञेय द्वारा संपादित तारसप्तक की भूमिका का अमृतांश

तारसप्तक की भूमिका में अज्ञेय ने लिखा है -

तार सप्तक में सात कवि संगृहीत हैं। सातों एक दूसरे से परिचित हैं - बिना इसके इस ढंग का सहयोग कैसे होता। किंतु इससे यह परिणाम न निकाला जाए कि वे कविता के किसी एक स्कूल के कवि हैं, या कि साहित्य-जगत के किसी गुट अथवा दल के सदस्य या समर्थक हैं। बल्कि उनका एकत्र होने का कारण ही यही है कि वे किसी एक स्कूल के नहीं हैं, किसी मंजिल पर पहुँचे हुए नहीं है, अभी राही हैं-राही नहीं, राहों के अन्वेषी। उनमें मतैक्य नहीं है, सभी महत्वपूर्ण विषयों पर उनकी राय अलग-अलग हैं-जीवन के विषय में, समाज और शैली के , छंद और तुक के, कवि के दायित्वों के प्रत्येक विषय में उनका आपस में मतभेद है। यहाँ तक कि हमारे जगत के ऐसे सर्वमान्य और स्वयंसिद्ध मौलिक सत्यों को भी वे समान रूप से स्वीकार नहीं करते जैसे लोकतंत्र की आवश्यकता, उद्योगों का समाजीकरण, यांत्रिक युद्ध की आवश्यकता, वनस्पति की बुराई अथवा काननबाला और सहगल गानों की उत्कृष्टता इत्यादि। वे सब परस्पर एक-दूसरे पर, एक दूसरे की जीवन परिपाटी पर, और यहाँ तक कि एक दूसरे के मित्रों और कुत्तों पर भी हँसते हैं। तारसप्तक का यह संस्करण बहुत बडा नहीं हैं, अतः आशा की जा सकती है कि उसके पाठक सभी न्यूनाधिक मात्रा में एकाधिक कवि से परिचित होंगे तब वे जानेंगे कि तार सप्तक किसी गुट का प्रकाशन नहीं है क्योंकि संगृहीत सात कवियों के साढे सात अलग-अलग गुट हैं, उनके साढे सात व्यक्तित्व-साढे सात यों कि एक को अपने कवि-व्यक्तित्व के ऊपर-संकलनकर्ता का आधा छद्म व्यक्तित्व और लादना पडा है।

Critical Overview / अवलोकन

तारसप्तक अज्ञेय भारतीय साहित्य में एक नए मोड़ का संकेत हैं, जहाँ प्रयोगवाद और नयी कविता ने साहित्य को नई दिशा दी। इन आन्दोलनों ने पारंपरिक काव्य रूपों को चुनौती दी और जीवन, विचारधारा, और शिल्प के स्तर पर नए प्रयोग किए। अज्ञेय जैसे कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नयी कविता की अवधारणा को साकार किया, जिसमें जीवन की गहरी और जटिल अनुभूतियों को व्यक्त किया गया। इस समय का साहित्य न केवल सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन को प्रतिबिंबित करता है, बल्कि मानव जीवन के सत्य और उसकी विविधता को समझने का प्रयास भी है। तारसप्तक और अज्ञेय का योगदान भारतीय साहित्य को आधुनिकता की ओर अग्रसर करने में अहम रहा, जिसने नए विचारों और शिल्पों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रयोगवाद और तार सप्तक
- प्रयोगवाद में अज्ञेय की भूमिका
- प्रयोगवाद की प्रवृत्तियाँ
- नयी कविता और उसकी प्रवृत्तियों का विस्तृत अध्ययन
- तारसप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक और चौथा सप्तक की

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रयोगवाद किसके प्रकाशन से शुरू हुआ?
2. तार सप्तक का संपादक कौन है?
3. 'प्रयोगवादी रचनाएँ' किसकी रचना है?
4. हिन्दी की वर्तमान प्रयोगवादी कविता में हृदय और मस्तिष्क, अनुभूति और उक्ति वैचित्र्य के उचित समन्वय की आवश्यकता है- किसका कथन है?
5. प्रयोगवाद का आरंभ कब से माना जाता है?
6. नयी कविता का आरंभ कब से माना जाता है?
7. 'नयी कविता' पत्रिका कब प्रकाशित हुई?
8. शमशेर बहादूर सिंह किस सप्तक के कवि थे?
9. गिरिजा कुमार माथुर किस सप्तक के कवि थे?
10. कुँवर नारायण किस सप्तक के कवि थे?

Answers / उत्तर

1. तार सप्तक
2. अज्ञेय
3. नन्ददुलारे वाजपेयी
4. मुक्तिबोध
5. 1943
6. 1950
7. 1954
8. दूसरा सप्तक
9. तार सप्तक
10. तीसरा सप्तक

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचन कीजिए।
2. नयी कविता की प्रवृत्तियों पर एक विस्तृत लेख तैयार करे।
3. तार सप्तक के कवियों का विश्लेषण कीजिए।
4. दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक पर टिप्पणियाँ लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. लोकप्रिय साहित्यकार अज्ञेय, वाणी प्रकाशन
2. अज्ञेय की जीवन रेखा - गोपाल राय
3. कहानीकार अज्ञेय - गोपाल राय
4. कवि अज्ञेय - गोपाल राय
5. युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार मिश्र
6. अज्ञेय व्यक्तित्व और कृतित्व - कृष्णदत्त पालीवाल
7. युगपुरुष कवि अज्ञेय, डॉ. रामेश्वर बांगड़, विद्याप्रकाशन, कानपुर।
8. तार सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
9. दूसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
10. तीसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
11. संपूर्ण कहानियाँ, अज्ञेय, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।
12. अज्ञेय, रमेशपन्द शाह, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
13. सदानीरा, अज्ञेय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

इकाई
2

अज्ञेय की पाँच कविताएँ (विस्तृत अध्ययन के लिए)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय की कविताओं की व्याख्या करता है
- अज्ञेय की कविता की भाषा समझता है
- नवीन प्रयोगों से ओतप्रोत कविता का अध्ययन करता है
- नवीनतम भाषा प्रयोगों के बारे में समझता है
- बिंबों, प्रतीकों को अच्छी तरह से समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यान 'अज्ञेय' हिन्दी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनकी कविताओं में गहरी विचारेशीलता, बैधिकता और आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ठ रूप से देखा जा सकता है। अज्ञेय की कविताएँ न केवल उनकी कविता की कला का बल्कि उनके व्यक्तिगत दार्शनिक दृष्टिकोण का भी प्रतिबिंब है। इनकी कविता में विविध काव्य तत्वों का समावेश होता है। जैसे काव्य भाषा, शब्द, चयन, प्रतीक, योजना और नवीन प्रयोग इस इकाई में अज्ञेय की 'कलगी बाजरे की', साम्राज्ञी का नैवेद्य दान, 'नदी के द्वीप', 'घृणा का गान', 'हरा भरा है देश', शीर्षक पाँच कविताएँ सम्मिलित है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

फिसलनेवाली, विश्रान्तिदायक, ललकार

Discussion / चर्चा

अज्ञेय हिन्दी साहित्य के एक महान कवि और विचारक थे, जिनकी कविताओं में गहरी बैद्धिकता और दार्शनिकता की झलक मिलती है। उनकी रचनाओं में सामाजिक असामानता, शोषण और अस्तित्व के सवालों पर गहरे विचार व्यक्त होते हैं। अज्ञेय की पाँच कविताओं का अध्यायन इस इकाई में अज्ञेय की पाँच कविताओं का अध्ययन किया गया है।

2.2.1 कलगी बाजरे की - कविता

हरी बिछली घास
दोलती कलगी बाजरे की।

अगर मैं तुमको ललाती साँझ के नभ की
अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शब्द के भोर की नीहार न्हायी कुंई,
टटकी कली चंपे की, वगौरह तो
नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि
सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है।
बल्कि केवल यही ये उपमान मैले हो गए हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।
कभी बासना अधिक घिसनो से मुलम्मा छूट

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

जाता है।
मगर क्या तुम नहीं पहचान पाओगी
तुम्हारे रूप के तुम हो, निकट हो, इसी जादू के-
निजी किस सहज, गहरे बोध से, किस प्यार से
मैं कह रहा हूँ-
अगर मैं यह कहूँ-
बिछली घास हो तुम
लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की
आज हम शहरातियों को
पालतू मालंच पर सँवरी जुही के फूल से
सृष्टि के विस्तार का-ऐश्वर्य का-औदार्य का-
कहीं सच्चा, कहीं प्यार एक प्रतीक
बिछली घास है,
या शरद की साँझ के सूने गगन की पीठिका पर
दोलती कलगी
अकेली
बाजरे की।
और सचमुच, इन्हें जब-जब देखता हूँ
यह खुला वीरान संसृति का धना हो सिमट
आता है-
और मैं एकांत होता हूँ समर्पित।
शब्द जादू हैं -
मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है।

कठिन शब्दार्थ

बिछली - फिसलनेवाली,

छरहरी - पतली

नीहार - कुहरा

कुँई - कमलिनी

टटकी - ताजी

कूच करना - चले जाना

बासना- बर्तन

मुलम्मा - द्रदृथ्द्मण

गहरे बोध से - गहन विचार से

लहलहाती - झूमती हुई

शहरातियों - शहरी लोगों

औदार्य- उदारता

पीठिका - पीठ

दोलती - झूलती हुई

वीरान -निर्जन

संसृति - संसार

घना हो सिमट जाता है - शून्य की तरह हो जाता है।

व्याख्या

फिसलनेवाली कोमल घास और शून्य आकाश में लहराती बाजरे की कलगी को संबोधित करते हुए कवि कहता है - यदि मैं तुम्हारे सौंदर्य का वर्णन करने में लज्जा से भरी सांध्य-तारिका, शारदकालीन प्रभात के कुहरे में नहाती हुई कमलिनी एवं अभी -अभी खिली चम्पे की कली आदि प्राचीन उपमानों का प्रयोग नहीं करता हूँ तो तुम उसका अर्थ यह मत निकालना कि मेरे हृदय में तुम्हारे सौंदर्य के आकर्षण के प्रति कुछ कमी आ गयी है या मैं हृदयहीन हो गया हूँ। तुम यह भी मत समझना कि तुम्हारे प्रति मेरे प्यार में कुछ विकार आ गया है। उसका कारण यह है कि परंपरा से चले आते हुए ये उपमान तुम्हारे सौंदर्य को पूर्ण रूपेण अभिव्यक्त करने में अक्षम हो गये हैं। इनके देवता कहीं भाग गए हैं। तुम्हारे सामने जगत का यह उदाहरण स्पष्ट है कि अधिक घिस जाने पर बर्तनों की कलई या मुलम्मे की चमक कम हो जाती है।

आगे कवि कहता है - आज मैं अपने हदय के समूचे प्यार से और अपने सम्पूर्ण ज्ञान के आधार पर यह कह दूँ कि संसार में तुम्हारा ही अस्तित्व और रूप एकमात्र ऐसी वस्तु है जो जादू जैसा अचूक प्रभाव सब पर डालती है, तो क्या तुम मेरे इस भाव का स्वागत एवं अभिनन्दन नहीं करेगी। यहाँ कवि यह कहना चाहता है कि जीवन में शान्ति ही सब कुछ है। अर्थात हम शहर में रहनेवालों के लिए पूरा दिन पेट पालने

के लिए काम-धंधों में लगे रहने के कारण कमज़ोरी हो जाती है तो शान्त और एकान्त स्थल ही एकमात्र विश्रान्तिदायक है।

सृष्टि के विस्तार, वैभव और कार्य का पूरा-पूरा आनंद नगरवासी इस एकान्त और शान्त स्थान में कोमल घास और शून्य आकाश में लहराती बाजरे की कलगी में प्राप्त कर लेते हैं। जब कभी कवि इन्हें देखता है तो बाह्य जगत से उसका ध्यान हटकर इन्हीं की ओर आकर्षित हो जाता है। फलस्वरूप वह अपने को इन वस्तुओं के चरणों पर समर्पित करता है। कवि के शब्दों में जादू है परन्तु क्या यह समर्पण कम महत्व की वस्तु है।

2.2.2 सम्राज्ञी का नैवेद्य-दान - कविता

हे महाबुद्ध।
मैं मंदिर में आई हूँ
रीते हाथ
फूल मैं ला न सकी।
औरों का संग्रह
तेरे योग्य न होता।
जो मुझे सुनाती
जीवन के विह्वल सुख-क्षण का गीत-
खोलती रूप-जगत के द्वार, जहाँ
तेरी करुणा
बुनती रहती है
भव के सपनों, क्षण के आनंदों के
रहः सूत्र अविराम-
उस भोली मुग्धा को
के पती
डाली से विलगा न सकी।
जो कली खिलेगी जहाँ, खिली,
जो फूल जहाँ है,
जो भी सुख
जिस भी डाली पर
हुआ पल्लवित, पुलकित,
मैं उसे वहीं पर
अक्षत, अनाघ्रात, अस्पृष्ट, अनाविल
हे महाबुद्ध
अर्पित करती हूँ तुझे।
वही-वही प्रत्येक भरे प्याला जीवन का,
वही-वही नैवेद्य चढा
अपने सुंदर आनंद निमिष का,
तेरा हो,
हे विगतागत के वर्तमान के, पद्मकोश
हे महाबुद्ध!

कठिन शब्दार्थ

रीते - खाली
औरों - दूसरों
संग्रह - एकत्र किया हुआ
विह्वल - व्याकुल
रूप जगत - सौंदर्य की दुनिया
रहः सूत्र - एकान्त रूपी धागे
अविराम - लगातार
मुग्धा - यौवन से अनजान युवती
विलगा न सकी - अलग नहीं कर सकी
पल्लवित - पत्तोंवाला
पुलकित - प्रसन्न
अक्षत - अपरिवर्तित
अनाघात - बिना सूँघा हुआ
अनाविल - स्वच्छ
नैवेद्य - चढावा
विगतागत - बीते दिन में आए हुए

व्याख्या

महारानी कहती है - हे महा बुद्ध। मैं तुम्हारे मंदिर में खाली हाथ आयी हूँ। मेरे हाथों में किसी प्रकार का पदार्थ नहीं है जो आपको नैवेद्य के रूप में अर्पण किया जा सके। और चीज़ों की बात ही क्या, मैं तो आप पर चढाने के लिए फूल तक नहीं ला सकी। दूसरे लोगों ने जो सामान एकत्र कर रखा है वह आपको चढाना उचित नहीं होगा। यदि मैं उसे समर्पण करने के लिए लाती तो वस्तु मुझे ऐसे गीत सुनाती जो जीवन के व्याकुल और सुख के समय के वर्णन से भरे हुए होते।

तात्पर्य यह है कि दूसरों के श्रम से उत्पादित और दूसरों के द्वारा संग्रह की गयी वस्तु सुंदर संसार के द्वार खोलती। तुम्हारा दया भाव उन द्वारों को खोलती है।

महारानी आगे कहती है - हे भगवान बुद्ध तुम्हारी दया भावना संसार के सब लोगों के स्वप्नों के आनन्दों के रहस्यमय धागे बुनती रहती है। तात्पर्य यह है कि लगातार इन आनंदों का निर्माण करती है। वह उस भोली और यौवन से अपरिचित युवती को कम्पित करती रहती है। मैं उन सुख और आनन्द के भावों को उसके मन से उसी प्रकार अलग न कर सकी, जिस प्रकार डाली से फूल अलग हो जाता है। जो कली जहाँ पर खिलेगी, वह वहीं रहेगी। उसे कोई तोडेगा नहीं। जो भी फूल किसी डाली पर है, वह वहीं रहेगा। जो भी सुख जहाँ है, वह वहीं रहेगा। किसी का सुख नष्ट नहीं होगा। सभी सुखी रहेंगे। जो डाली जहाँ पर पत्तों से लगी हुई है तथा प्रसन्न जान पडती है मैं उसे तोडती नहीं हूँ, सूँघती नहीं हूँ उसे छूती भी नहीं हूँ। खिला हुआ, बिना छुआ हुआ तथा स्वच्छ फूल जहाँ पर भी है, मैं उसे वहीं पर रखती हूँ, या आपको अर्पित कर रही हूँ। आप तो सर्वज्ञ हैं, आप मेरे इस उपहार को स्वीकार करो।

हे भगवान महाबुद्ध। मैं खाली हाथ आयी हूँ, पर सभा कलियाँ और सारे फूल आपको अर्पित हैं।

जिस व्यक्ति का जीवन आनंदपूर्ण हो, वह ही अपने जीवन का प्याला भरकर तुम पर अर्पण करे, जिसका जीवन सुन्दर हो, वह अपने एक क्षण का चढावा चढाकर आपको अर्पित करे। हे जन्म-मरण से रहित भगवान बुद्ध। वे लोग वर्तमानकाल रूपी कमल के भीतर वर्तमान सुगन्ध एवं सौंदर्य आपको अर्पण हो। तात्पर्य यह है कि सम्राज़ी भगवान बुद्ध के सम्मुख सुखीजनों के सुख और प्रसन्न जनों की प्रसन्नता को अपना उपहार बता रही है। सम्राज़ी का विश्वास है कि जो भी सुख हैं, वह भगवान बुद्ध की कृपा से प्राप्त है।

2.2.3 नदी के द्वीप - कविता

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्त्रोतस्विनी
बह जाए।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकत
कूल,
सब गोलाइयाँ उसकी गढी है।
माँ है वह। है इसी से हम बने हैं।
किंतु हम द्वीप हैं द्वीप
हम धारा नहीं है।
स्थिर समर्पण हैं हमारा, हम सदा से द्वीप हैं
स्त्रोतस्विनी के
किंतु हम बहते नहीं है। क्योंकि बहना रेत होना
है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखडेंगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह
जाएँगे।
और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या
धार बन सकते हैं
रेत बनकर हम सलिल को तनिक गँदला ही
करेंगे।
अनुपयोगी ही बनाएँगे।
द्वीप हैं हम।
यह नहीं है शाप। यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी के क्रोड में।
वह बृहद् भूखंड से हमको मिलाती है।
और वह भूखंड अपना पितर है।
नदी तुम बहती चलो।
भूखंड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा है,
माँजती, संस्कार देती चलो
यदि ऐसा कभी हो,
तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी स्वैराचार
से-अधिचार से-

तुम बढो, प्लावन तुम्हारा धरधराता उठे,
वह स्त्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर
काल प्रवाहिनी बन जाए
तो हमें स्वीकार है वह भी। इसी में रेत होकर
फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर
टेकेंगे।
कहीं फिर भी खडा होगा नए व्यक्तित्व का
आकार।
मातः उसे फिर संस्कार तुम देना।

कठिन शब्दार्थ

स्त्रोतस्विनी - नदी
अंतरीप - वह पतला भाग जो नदी या सागर में दूर तक चला जाता है।
सैकत-कूल - रेतीले किनारे
प्लावन - बाढ
चूर्ण होकर - रेत बनकर
सलिल - पानी
नियति - विधान, भाग्य
क्रोड - गोदी
पितर - पिता
दाय - उत्तराधिकार
आह्लाद - आनंद
स्वैराचार - स्वेच्छाचार
घोर काल प्रवाहिनी - मृत्यु की भयानक नदी
कर्मनाशा - एक नदी का नाम, कर्मों को नष्ट करनेवाली
कीर्तिनाशा - यश मिटानेवाली

व्याख्या

हमारे चारों ओर जल इससे घिरे धरती के छोटे भाग के समान दिखाई देनेवाले, अपने को आकार देने वाली नदी के द्वीप कहलाते हैं। जल के अंदर रहना कष्ट दायक होता है। लेकिन हम न तो यह चाहते और न ही यह करते हैं कि नदी की धारा में हमें छोडकर बहती हुई कहीं चली जाये। हम इसे सोच भी कैसे सकते हैं। नदी के जल की यह धारा ही तो हमें स्वरूप प्रदान करती है। हम किनारे, गलियाँ, भीतरी आकार-प्रकार की स्थिति, उभरा हुआ रूप, रेतीले किनारे और हमारे सभी गोल-घेरे या सीमाएँ इस नदी की जलधारा द्वारा ही तो बनती हैं।

इस नदी की धारा ने ही हमें बनाया, संजोया, सवारा है, इस कारण वह हमारी माँ है। ध्यान देने की बात यह है कि नदी की सन्तान होने पर भी हमारा अस्तित्व उसके समान गतिमान न होकर स्थिर है। अपनी स्थिरता के कारण ही हम हमेशा से बहती जलधारा के द्वीप बने हुए हैं। हम धारा के समान या नदी की तह में बहती रहनेवाली मिट्टी के समान अपनी माँ नदी के साथ इस कारण नहीं बहते हैं कि हमारे लिए बहने का अर्थ अपने अस्तित्व को रेत के रूप में परिवर्तित कर देना है। यदि हम भी धारा के साथ बहेंगे तो अपने वर्तमान रूप में रह ही नहीं पायेंगे। हमारे पैर उखडते ही बाढ आ जाएगी, जो हमें गिरा देगी। उसे सहने में असमर्थ होकर हमारा अस्तित्व ही बह जाएगा।

अपने अस्तित्व को उखडकर, नदी की रेत बनकर भी तो हम द्वीप उसकी धारा नहीं बन सकते। हमें तब भी धारा के भीतर रहना है। हाँ, उस स्थिति में हम रेत के रूप में पानी को गंदला और अनुपयोगी बनाने में ही सहायक हो सकते हैं, जिसे उचित नहीं कहा जा सकता। इसका मतलब यह है कि मानवता की मूल चेतना एवं अवस्थिति से उखडकर व्यक्ति या समूह मानवता की अविरल धारा को गंदा ही बना सकता है। अपने मूल्यों में स्थिरता ही जीवन की सहज गति है।

हम स्थिर द्वीप हैं। इस जलधारा के अंदर एकान्त में अलग-अलग पडे हैं। हम इसे नियति का विधान ही मानते हैं। इस बात पर हमें गर्व है कि हम इस सतत प्रवाहशील जीवन-रूपी नदी की ही संतानें हैं। हम अपनी माँ की गोद में बैठे पल रहे हैं और जी रहे हैं। नदी की धारा उस छोर तक बहकर हमें-इस विस्तृत धरती से मिलाती है और एक प्रकार से हमें एकाकार करती रहती है। इस प्रकार नदी यदि हमारी माँ है, तो यह विस्तृत विशाल भूमि का भारत हमारा पिता एवं पूर्वज है।

द्वीप की आत्मकथा या आत्म-परिचय की शैली में कवि कह रहा है - हे जीवन के बहाव या गतिशीलता की प्रतीक नदी की धारा। तुम अपनी गतिशीलता में अनवरत बहती रहो। इस विस्तृत भूखण्ड ने अपने पितर के रूप में हम छोटे द्वीप-पुत्रों को दायित्व प्रदान किया है। तुम अपने अविरल बहाव से उसका संस्कार, उसकी शुद्धि करती चलो। फिर भी यदि कभी ऐसा अवसर आ जाये कि तुम्हारे अपने ही आनन्द से, या किसी स्वेच्छाचारी के अत्याचारों से तुम्हारी धारा में बाढ आ जाये। तुम्हारी यह सहज धारा ही सभी कर्मों, मूल्यों तथा कीर्तिमानों के नाश के लिए मृत्यु का यथावत रूप बन जाये, तो वह भी हमें स्वीकार है। हम द्वीप उस बाढ में रेत बनकर बह जायेंगे। रेत बनकर छन कर, कण-कण-एकत्रित होकर हमारा अस्तित्व फिर से जमेगा। नए व्यक्तित्व का आकार लेकर फिर से खडा होगा। हे माँ नदी। उसको फिर से नया संस्कार देना।

2.2.4 घृणा का गान - कविता

सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान।
तुम, जो भाई को अछूत कह, वस्त्र बचाकर भागे,
तुम, जो बहिनें छोड़ बिलखती बढे जा रहे आगे।

रुककर उत्तर दो, मेरा है अप्रतिहत आह्वान-
सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान!
तुम, जो बडे-बडे गद्दों पर, ऊँची दूकानों में,
उन्हें कोसते हो जो भूखे मरते हैं खावों में।

तुम, जो रक्त चूस ठठरी को देते हो जलदान-
सुनो, तुम्हें लालकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान!
तुम जो महलों में बैठे दे सकते हो आदेश,
मरने दो बच्चे, ले आओ खींच पकड़कर केश
नहीं देख सकते निर्धन के घर दो मुट्ठी धान-
सुनो तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान!

तुम, जो पाकर शक्ति कलम में हर लेने की प्राण,
निरशक्तों की हत्या में कर सकते हो अभिमान।
जिनका मत है, नीच मरें, दृढ रहे हमारा स्थान-
सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान!

तुम जो मंदिर में वेदी पर डाल रहे हो फूल,
और इधर कहने जाते हो, जीवन क्या है धूल।
तुम, जिसकी लोलुपता ने ही धूल किया उद्यान-
सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान!

कठिन शब्दार्थ

ललकार - चुनौती
घृणा - नफरत
अछूत - अस्पृश्य
वस्त्र - कपडा
बिलखना - रोना
अप्रतिहत - जो प्रतिहत न हो
कोसना - शाप देना
चूस - मुँह से रस अंदर खींचना
धान - अनाज आदि

व्याख्या

ऊँच जातवालों को ललकारते हुए कवि उन्हें ललकारने का आह्वान करते हैं। ऊँच जातवालों ने निम्नजात के अपने भाइयों को अछूत कहा है। जब नीच जात कहे जानेवाले पास आते हैं तो वह अपना वस्त्र बचाकर भागा करता है। तुम अपनी ही बहनों को रूलाने में मग्न हो। बहिनें रोती हुई रहती हैं। उस समय तुम उन्हें छोडकर आगे चले जाते हो। तुम्हें रुककर उत्तर देना होगा। मेरे आह्वान को कोई रोक न पाएगा। मैं तुम्हें ललकार रहा हूँ साथ में यह घृणा का गान भी सुना रहा हूँ।

तुम ऊँचे-ऊँचे पदों पर बैठे हुए और ऊँची-ऊँची दुकानों में बैठकर कारखानों तथा अन्य खानों में काम करते विवश भूखे लोगों को कोसते हो। गरीबों से ज़्यादा परिश्रम कराके व्यर्थ लोगों को जलदान करते हो। इसलिए तुम्हें ललकार रहा हूँ।

ललकारते हुए कवि कहते हैं कि - तुम अपने बडे घर में बैठकर आदेश दे सकते हो। तुम गरीबों को

उसके बाल पकड़कर खसीट सकते हो। गरीब बच्चे भूख के कारण मर रहे हैं और तुम उन्हें मरने देते हो। भूख से तडपते लोगों के घर में दो मुट्ठी अनाज तुम देख नहीं सकते। इसलिए मैं तुम्हें ललकार रहा हूँ।

तुम अपनी शक्ति पाकार गरीबों के ज़मीन ज़ायदाद को लिखवाकर अपने वश में कर लेते हो। गरीब कर्ज़ लेते हैं इसके लिए उसे अमीरों के दिखाए कागज़ों पर अपने ज़मीन सब कुछ गिरवी रखना पड़ता है। वैसे उसके प्राणों को ही ऊँचे कहे जाने वाले लोग नष्ट कर लेते हैं। दुर्बलों की हत्या कर अपने आपको अभिमानी समझने वाले हो तुम। उन नीचों का मत होता है, नीच लोगों को मरना चाहिए। और बडे लोगों का स्थान ज्यों का त्यों स्थिर रहना भी चाहिए। ऐसे लोगों को कवि ललकारते हुए कहते हैं कि अब घृणा का गान भी सुन लो।

तुम बडे बडे मंदिरों पर जाकर उसकी वेदी पर फूल डालते हो। जिसने उस फूल को उद्यान में अपने परिश्रम से उगाया है उसे जाकर कहता है कि यह जीवन क्या है। बस धूल ही होता है। ऐसी सारी सुविधाएँ स्वयं भोगकर गरीबों का नाश करने वाले ऊँच जात के लोगों को ललकारते हुए कवि अपना घृणा का गान सुनाता है।

2.2.5 हरा भरा है देश - कविता

हरे भरे हैं खेत
मगर खलिहान नहीं
बहुत महतो का मान
मगर दो मुट्ठी धान नहीं।
भरा है दिल पर नीयत नहीं
हरी है कोख-तबीयत नहीं
भरी है आँखें पेट नहीं
भरे हैं बनिये के कागज़
टेंट नहीं।
हरा भरा है देश
रुँधा मिट्टी में ताप
पोसता है विष वट का मूल
फलेंगे जिसमें शाप।
मरा क्या और मरे
इसलिए अगर जिए तो क्या
जिसे जीने को पानी नहीं
लहू का घूँट पिये तो क्या
पकेगा फल, चखना होगा
उन्हीं को जो जीते हैं आज
जिन्हें है बहुत शील का ज्ञान
नहीं है लाज।
तपी मिट्टी जो सोख न ले
अरे, क्या है इतनी पानी?
कि व्यर्थ है, उदधोधन, आह्वान
व्यर्थ कवि की बानी?

कठिन शब्दार्थ

खेत	-	क्षेत्र जहाँ खेती होती है
खलिहान	-	काटी हुई फसल रखने का स्थान
नीयत	-	लक्ष्य
कोख	-	कुक्षि
बनिया	-	वणिक
रुधा	-	रुका हुआ
पोसना	-	पालना
घूँट	-	चुसकी
चखता	-	स्वाद देखना
लहू	-	रक्त
लाज	-	मान

व्याख्या

खेत पूरा धान से हरा भरा है। मगर खलिहान, जहाँ फसल काटकर धान डाला जाता है, शून्य हैं। पूरा महतो के घर पर चला गया है। महतो, जो खेत का मालिक होता है, उसका बहुत मान होता है। किसान उसे बहुत ही सम्मानित करते हैं। लेकिन महतो किसानों को एक मुट्ठी धान तक नहीं देता। पूरा धान प्राप्त करने के बाद भी उसकी इच्छा की कोई कमी नहीं हुई है। उसका पेट पूरा खा-खाकर भर गया है मगर फिर भी वह संतुष्ट नहीं है। फसल देख उसकी आँखें भर गयी हैं मगर उसका पेट अभी भरा नहीं है। बनिये को फसल भरपूर देने से उसका खाता भर गया है।

उसके टेंट अभी ढीला नहीं हुआ है।

हमारा देश हरा भरा है। मिट्टी में किसान द्वारा खेती करने का ताप अभी भी रुका हुआ। वह वृक्ष के मूल में विष दिया जाता है तो उससे शाप ही निकलेगा। जिस किसान ने महतो को वह वृक्ष बनाया उसे विष प्रदान करेगा तो उसके मुँह से शाप वचन ही निकलेंगे। किसान मर मरकर जी रहे हैं। जो मरकर जीता है उसे और क्या मारना है। वह जिएगा तो भी अपना खून पीकर जीता होगा। उसे पीने के लिए पानी तक नसीब नहीं है। उससे क्या फायदा होगा। आज गरीब किसानों का शाप महतो लोगों को भोगना ही पडेगा। शील का ज्ञान पालने वाला महतो किसी किसान को मानता तक नहीं है। उसे सम्मान नहीं करता। जीने लायक कुछ पानी भी गरीब नहीं ग्रहण करते तो कवि कहते हैं कि उनका कहना व्यर्थ है। उनके द्वारा दिया जाने वाला उद्बोधन आह्वान, सब व्यर्थ हैं। कवि की वाणी भी व्यर्थ हैं।

Critical Overview / अवलोकन

इस इकाई में अज्ञेय की पाँच कविताओं का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट होता है कि उनके काव्य में गहरी सामाजिक और दार्शनिक आलोचना छिपि हुई है। 'कलगी बाजरे की' में परंपरावाद का खण्डन करते हुए उन्होंने नवीन प्रयोगों पर जोर दिया है, जो उनकी कविताओं को विशिष्ट और आधुनिक बनाता है। 'साम्राज्ञी का नैवेध दान' में उन्होंने बुद्ध के गुणगान के साथ-साथ असमान वितरण और शोषण को उजागर किया है, जो सामाजिक असमानता की आलोचना करती है। 'नदी के द्वीप' में अज्ञेय ने जीवन के निरंतर प्रवाह और आत्मा के अकेलेपन को प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया है, जिससे उनके मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि कोण का पता चलता है। 'घृणा का गान' में समाज में व्याप्त नफरत और अशांति की आलोचना की गई हैं, जो उनके सामाजिक जागरूकता और मानवता के प्रति गहरी चिन्ताओं को दर्शाती है। 'हरा भरा है देश' में प्रकृति और जीवन के समंजस्य को दर्शाते हुए अज्ञेय के भीतर सकारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- कलगी बाजरे की कविता के द्वारा यह अध्ययन किया कि कवि प्रकृति-सौदर्य का एक मात्र उपासक है और वे उसकी प्राप्ति हेतु पूर्ण रूप से समर्पित है
- साम्राज्ञी का नैवेद्य दान शीर्षक कविता में वर्णित घटना को समझ लिया है
- नदी के द्वीप शीर्षक कविता में कवि द्वारा अपने अस्तित्व एवं स्वरूप में आने का संकेत को ज्ञान लिया है
- घृणा का गान शीर्षक कविता में समाज में व्याप्त ऊँच-नीच भाव पर कवि के आक्रोश के बारे में सीखा है
- हरा भरा है देश शीर्षक कविता में महतो द्वारा खेतीहर किसान को एक मुट्ठी धान भी नहीं देने विषय के समाजोद्धार चिंतन वर्णन के बारे में जाना है

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. चिकनी घास और बाजरे की कलगी को अज्ञेय ने किसका प्रतीक माना?
2. बिछली घास हो तुम, लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की - में कौन सा अलंकार है?
3. रानी कहाँ खाली हाथ गयी थी?
4. 'साम्राज्ञी का नैवेद्य' दान किस की मन की अभिव्यक्ति हुई है?
5. नदी के द्वीप कविता किसके संबंधों पर आधृत है?
6. हमें स्वरूप कौन प्रदान करता है?
7. 'घृणा का गान' कविता का प्रतिपाद्य क्या है?
8. ऊँच जात वालों ने निम्नजात के अपने भाइयों को क्या पुकारता है?
9. कवि अज्ञेय समाज में बुरा करने वालों को ललकारते हुए क्या सुना रहे हैं?
10. खेत पूरा किससे भरा है?
11. मदनो क्या पालने वाला होता है?

Answers / उत्तर

1. सौंदर्य का
2. रूपक अलंकार
3. बुद्ध के मंदिर
4. जापान की महारानी कोमियो।
5. व्यक्ति और समाज के संबंधों पर
6. नदी की जल की धारा।
7. ऊँच -नीच भाव के विरुद्ध आक्रोश है।
8. अछूत
9. घृणा का गान
10. धान से
11. शील का ज्ञान

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हरा भरा है देश कविता की व्याख्या कीजिए।
2. घृणा का गान कविता कवि का आक्रोश है - सारांश प्रस्तुत कीजिए।
3. नदी के द्वीप में प्रतिपाद्य अस्तित्ववाद को समझाइए।
4. साम्राज्ञी का नैवेद्य दान कविता की व्याख्या कीजिए।
5. कलगी बाजरे की कविता का आशय सविस्तार बताइए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. लोकप्रिय साहित्यकार अज्ञेय, वाणी प्रकाशन
2. अज्ञेय की जीवन रेखा - गोपाल राय
3. कहानीकार अज्ञेय - गोपाल राय
4. कवि अज्ञेय - गोपाल राय
5. युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार मिश्र
6. अज्ञेय व्यक्तित्व और कृतित्व - कृष्णदत्त पालीवाल
7. युगपुरुष कवि अज्ञेय, डॉ. रामेश्वर बांगड़, विद्याप्रकाशन, कानपुर।
8. तार सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
9. दूसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
10. तीसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
11. संपूर्ण कहानियाँ, अज्ञेय, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।
12. अज्ञेय, रमेशपन्द शाह, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
13. सदानीरा, अज्ञेय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

BLOCK - 03

कहानीकार
अज्ञेय

SGOU

इकाई 1

अज्ञेय की कहानियों की विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- अज्ञेय की प्रमुख कहानियों से अवगत होता है
- अज्ञेय की कहानियों की विशेषता को समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अज्ञेय आधुनिक हिन्दी साहित्य के शिखर रचनाकार हैं जिन्होंने कविता, उपन्यास, निबंध और आलोचना के साथ-साथ कहानी लेखन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जो परंपरा जैनेन्द्र ने शुरू की थी, उसे पूर्णता अज्ञेय ने ही प्रदान की।

Keywords / मुख्य बिन्दु

क्रान्ति-समर्थक कहानियाँ, असम्पृक्त शौर्य, आदर्शोन्मुख स्वर

Discussion / चर्चा

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के बाद हिन्दी साहित्य में दूसरी आधुनिकता की शुरुआत सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने की। छायावाद के बाद हिन्दी साहित्य को जिस प्रकार की नवीनता और बदलाव की ज़रूरत थी उसे सर्वप्रथम अज्ञेय जी ने समझा और न केवल समझा बल्कि अपने कृतित्व से नवीनता और आधुनिकता को अनेक आयाम भी दिए। हिन्दी में पहले आधुनिक काल का नेतृत्व भारतेन्दु ने किया तो दूसरे आधुनिक काल का नेतृत्व अज्ञेय ने किया। अज्ञेय के समय की आधुनिकता अनेक प्रकार की जटिलताओं से भरी हुई थी। यह वह कठिन समय था जब भारतवर्ष आज़ादी के लिए अंतिम लड़ाई लड़ रहा था और सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन के दौर से गुज़र रहा था। दूसरी तरफ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनेक घटनाएँ घटित हो रही थीं। अनेक विचारधाराओं की टकराहट से पूरा विश्व नया करवट ले रहा था और जीवनमूल्य बहुत दिनों के बाद नए ढंग से परिभाषित हो रहे थे। पुरानी रूमानियत टूट रही थी और एक नई आधुनिकता जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे जीवन नए ढंग से परिभाषित हो रहा था।

जिज्ञासा अज्ञेय की पहली कहानी है जो 1929 में मूल रूप में लिखी गयी थी और 1935 में प्रकाशित हुई थी। मनुष्य के आदिम काल के जीवन के प्रति जिज्ञासा कहानी में पायी जाती है 'द्रोही', 'क्षमा', 'गैंग्रीन', 'चिड़ियाघर', 'लैटर बॉक्स', 'मेजोर चौधरी की वापसी', 'देवी सिंह', 'हजामत का साबुन', 'नितिन बाबू', 'सांप', 'कलाकार की मुक्ति' जैसी उनकी कहानियाँ आत्मकथन प्रणाली में लिखी गयी हैं।

'ताज की छाया में', 'पगोडा वृक्ष', 'इंदु की बेटी' आदि किसी विशिष्ट क्षण के सार्थक होने की अनुभूति की कहानियाँ है। 'विपथगा', 'मिलन', 'हारिति', 'अकलंक', 'अभिशापित', 'कैसान्ड्रा का अभिशाप', 'पगोडा वृक्ष', शत्रु जैसी कहानियाँ हिन्दी की ही नहीं बल्कि पश्चिम जगत की कहानी से भी समतुल्यता करनेवाली हैं और निश्चय ही हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती है।

'छाया', 'विवेक से बढ़कर', 'कडिया', 'कोठारी की बात', 'नंबर दस', 'दारोगा अमीनचंद', आदि कहानियाँ उन्होंने अपने जेल जीवन के समय लिखी है। इन कहानियों में उन्होंने अपनी यंत्रणाओं की अपेक्षा मनुष्य के मन की ऊर्जा और संकल्प शक्ति पर बल दिया है।

'मेजोर चौधरी की वापसी' और 'नागा पर्वत की एक घटना में' सैनिक जीवन का वर्णन है। विभाजन से सम्बंधित पांच कहानियाँ अज्ञेय ने लिखी। वे हैं 'लैटर बॉक्स', 'शरणदाता', 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई भाई', 'रमन्ते तत्र देवता' और 'बदला'।

अज्ञेय मनुष्य के मांस की पहचान करनेवाले साहित्यकार हैं। 'अकलंक', 'गैंग्रीन', 'अलिखित कहानी', 'शान्ति हंसी थी', 'सिग्नेलर', 'अछूते फूल', 'सेब और देव', 'वे दूसरे', 'सानी', 'हीली बॉन की बतखें' आदि कहानियों में मनोवैज्ञानिक तथ्य प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

1975 में अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियों का संकलन दो भागों में 'छोड़ा हुआ रास्ता' और 'लौटती पगडंडियाँ' शीर्षकों से प्रकाशित हुआ।

स्वाधीनता-आन्दोलन के इतिहास से हम जानते हैं कि किस प्रकार ब्रिटिश शासन ने 1928-35 की अवधि में आतंकवादी क्रान्तिकारी आन्दोलन का दमन किया था। 1931 में भगतसिंह आदि की फाँसी के बाद इस आन्दोलन की रीढ़ टूट गयी। अज्ञेय 1928 में ही इस आन्दोलन में शामिल हो चुके थे और 1929 में तो उसके सक्रिय सदस्य भी बन गये थे। स्वाभाविक है कि क्रान्तिकारियों के जीवन, उनके चरित्र, मानसिकता आदि से उनका घनिष्ठ परिचय होता था। भारत के बाहर, चीन, रूस, क्यूबा, यूनान, तुर्की, आयरलैण्ड आदि देशों में हुई क्रान्तियों का अज्ञेय ने गहन अध्ययन किया था। 'विपथगा', 'हारीति', 'मिलन', 'अभिशापित', 'अकलंक' और 'कैसांड्रा का अभिशाप', चीनी, रूसी, क्यूबा, यूनान, तुर्की क्रान्ति की पृष्ठभूमि में लिखी कहानियाँ हैं। शेष कहानियों की पृष्ठभूमि भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की है। अज्ञेय हिन्दी के पहले कहानीकार हैं, जिन्होंने आतंकवादी क्रान्ति-चेतना पर आधारित इतनी अधिक कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में उनका अपना अनुभव और संवेदना व्यक्त हुई है। जिस 'अनुभव की प्रामाणिकता' का राग 'नयी कहानी' के आन्दोलन के दौर में आलापा गया, उसे यहाँ अपने उत्कृष्ट रूप में देखा जा सकता है। क्रान्तिकारियों के अंतर्द्वन्द्व का चित्रण करने में अज्ञेय को अद्भुत सफलता मिली है। यह द्वन्द्व कभी राष्ट्रभक्ति और प्रेम, मित्रता, वात्सल्य, सांसारिक सुख की लालसा आदि भावों के बीच है, कभी कर्तव्य-पालन और भय, स्वार्थ आदि के बीच। 'द्रोही' में विश्वासघाती क्रान्तिकारी के अन्तर्द्वन्द्व से उत्पन्न अनुताप, बेचैनी और विकलता का मार्मिक चित्रण है।

उनकी कहानियों में क्रान्ति-चेतना के साथ-साथ दूसरी प्रमुख भूमिका प्रेम-संवेदना की है। इनमें प्रेम के मानवीय और अमानवीय चेहरों, त्रासद प्रेम और मोहभंग, विश्वास का संकट, प्रेम के लिए आदर्श का त्याग, हिंसा के साथ जुड़े त्याग और जुनून, मित्रता बनाम देशप्रेम, व्यक्ति बनाम राष्ट्र, क्रान्ति बनाम मानवीय संवेदना, बलिदान, विवशता, जीवन के प्रति मोह आदि की संवेदनाएँ व्यक्त की गयी हैं। इन कहानियों में 'हारिति', 'पुलिस की सीटी', 'गृह-त्याग' और 'पुरुष का भाग्य' क्रान्तिकारियों की बेखौफ निष्ठा और संवेदनात्मक घार की वजह से अविस्मरणीय कहानियाँ हैं। 'हारिति' में कर्तव्य के प्रति निष्ठा का बेहद प्रभावी अंकन हुआ है, पर कहानी का चरमोत्कर्ष उस 'एण्टी क्लाइमेक्स' की स्थिति में है, जहाँ कर्तव्य-पालन के लिए अपने व्यक्तिगत प्रेम और जीवन को

भी दाँव पर लगा देने वाली हारिति को पता चलता है कि उसका उपयोग कितने घटिया काम के लिए किया गया है। 'पुलिस की सीटी' में पुलिस से जूझते हुए एक क्रान्तिकारी के रोमांचक, पर परिणाम की तरफ से सर्वथा असम्पृक्त शौर्य का बेजोड़ चित्रण हुआ है; और सबसे बड़ी बात यह है कि इसके पीछे एक गहरी मानवीय संवेदना प्रेरणा के रूप में विद्यमान है। 'पुरुष का भाग्य' में एक क्रान्तिकारी की पत्नी के वात्सल्य की त्रासदी का चित्रण है। 'हारिति', 'द्रोही' जैसी कुछ कहानियों में क्रान्तिकर्मियों के पतन का भी चित्रण हुआ है। ये अज्ञेय के सीधे अनुभव से निकली हुई कहानियाँ थीं।

जेल और नजरबन्दी की स्थिति से निकलने के बाद अज्ञेय के विचारों और कहानियों में भी एक बदलाव आता दिखाई पड़ता है। सम्भवतः 1930 में पकड़े जाने और आन्दोलन के दमन के साथ ही इस आन्दोलन के प्रति उनकी निष्ठा भी कमजोर हो गयी। स्वयं अज्ञेय के अनुसार, 'चार-एक वर्ष जेल में और वर्ष भर नजरबन्दी में बिताकर जब मुक्त हुआ तब यह नहीं कि क्रान्ति का उत्साह ठण्डा पड़ चुका था, पर आतंकवाद और गुप्त आन्दोलन अवश्य पीछे छूट गये थे और हिंसा की उपयोगिता पर अनेक प्रश्नचिह्न लग चुके थे।' विद्यानिवास मिश्र के अनुसार यह पूरी अवधि उनके लिए शारीरिक यातना, आत्ममन्थन और स्वप्नभंग की थी। 1936 में जेल और नजरबन्दी से मुक्त होने के बाद 1937 में मेरठ के किसान-आन्दोलन में भाग लेने के अतिरिक्त, उसके बाद, अज्ञेय के किसी राजनीतिक गतिविधि में शिरकत करने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। उनका 'क्रान्ति का उत्साह' भले ही ठण्डा न पड़ा हो, पर वह उनके व्यवहार में नहीं दिखाई पड़ता। देश की आजादी की समस्या उनके लिए गौण हो गयी और अन्तरराष्ट्रीय राजनीति अधिक महत्त्वपूर्ण।

इसी मानसिकता के तहत उन्होंने सुभाषचन्द्र बोस और 1942 के जन-आन्दोलन का विरोध किया और दिल्ली में साम्यवादियों के साथ मिल कर 'अखिल भारतीय फासिष्ट-विरोधी सम्मेलन' का आयोजन किया। इतना ही नहीं, 1943 में वे उसी ब्रिटिश शासन की फौज में भरती हो गये, जिसे उखाड़ फेंकने के लिए वे आतंकवादी क्रान्तिकारिता की शरण में गये थे। ब्रिटिश शासन द्वारा उन्हें अपनी फौज के एक अफसर के रूप में स्वीकार करने का मतलब ही है, उसका, उनकी निष्ठा में विश्वास। सेना में उन्हें काम भी यही दिया गया था कि वे प्रचार माध्यमों और नाटकों के मंचन द्वारा जनता के बीच यह भावना पैदा करें कि जापानी और आजाद हिन्द फौज उनके शत्रु हैं और ब्रिटिश सेना उन्हें उनसे मुक्ति दिलाने वाली है। अज्ञेय की ये गतिविधियाँ उनके चरित्र के सम्बन्ध में अनेक शंकाएँ पैदा करती हैं। पर यह एक अलग और विवादास्पद प्रश्न है।

पर यह निर्विवाद है कि जेल और नजरबन्दी से मुक्त होने पर अज्ञेय ने साहित्य को अपने जीवन का एकमात्र ध्येय बना लिया। लगभग एक साथ उन्होंने कविता, उपन्यास और कहानी लेखन का कार्य आरम्भ किया और दिल्ली, लाहौर और मुल्तान की जेलों में (1931-34) अट्ठारह तथा नजरबन्दी में (1934-36) ग्यारह कहानियाँ लिखीं। इनमें से प्रथम अट्ठारह कहानियों की पृष्ठभूमि गुप्त सशस्त्र आन्दोलन है।

नजरबन्दी की स्थिति में (मार्च, 1934 - फरवरी, 1936) लिखित कहानियों में 'मनसी', 'रोज़' (गैंग्रीन), 'पहाड़ी जीवन', 'अलिखित कहानी', 'दुःख और तितलियाँ', 'हरसिंगार', (सभी का रचनाकाल 1934) 'शान्ति हँसी थी', 'सूक्ति और भाष्य', 'शत्रु', 'प्रतिध्वनियाँ', (सभी का रचनाकाल 1935) 'ताज की छाया में' (1936) आदि आती हैं। उसके बाद लिखित कहानियाँ हैं 'नयी कहानी का प्लाट', 'सभ्यता का एक दिन', 'इन्दु की बेटी' (सभी का रचनाकाल 1936), 'नम्बर दस', 'अछूते फूल', 'सिगनेलर', 'जीवन शक्ति' (जिजीविषा), 'चिड़िया घर', 'कविता और जीवन एक कहानी', 'सेब और देव' (सभी रचनाकाल 1937) 'पुलिस की सिटी', 'दारोगा अमीचन्द' (रचनाकाल 1938), 'आदम की डायरी', 'परम्परा एक कहानी'

(रचनाकाल 1939), 'पुरुष का भाग्य' (रचनाकाल 1940) और 'बन्दों का खुदा, खुदा के बन्दे' (रचनाकाल 1941) आदि। अज्ञेय ने इन्हें अपनी 'दूसरे खेप की कहानियाँ कहा है। इस 'खेप' या दौर की कहानियों में भी 'मनसो', 'दारोगा अमीचन्द', 'पुलिस की सीटी', 'पुरुष का भाग्य' आदि की पृष्ठभूमि भूमिगत आन्दोलन या जेल-जीवन है, अतः कथ्य की दृष्टि से इन्हें पहले दौर की कहानियों के साथ ही रखना चाहिए। 'मनसो' में प्रेम की और 'पुरुष का भाग्य' में वात्सल्य की संवेदना का बहुत मार्मिक अंकन हुआ है। 'पुलिस की सीटी' यद्यपि मुख्यतः एक क्रान्तिकारी (सम्भवतः चन्द्रेशखर आजाद) के शौर्य और बलिदान की रोमांचक कथा है, पर इसे भी धार देने का काम मानवीय संवेदना ही करती है। 'दारोगा अमीचन्द' में जेल के एक खूंखार दारोगा को हास्य का आलम्बन बना कर व्यवस्था पर चोट की गयी है, जिसे अज्ञेय अपने 'दूसरे खेप' की कहानियों का कथ्य मानते हैं।

अज्ञेय के अनुसार उनके 'दूसरे खेप' की कहानियों में एक पुराने गुप्तकर्मी आतंकवादी का खुले समाज में एक 'जाने हुए' व्यक्ति के रूप में जीने, समाज से मिलनेवाले सम्मान के बीच उस समाज के और उस सम्मान के खोखलेपन के बोध की अभिव्यक्ति हुई है। इनमें एक आक्रोश है जो व्यंग्य-मिश्रित है। 'चिड़ियाघर', 'सेब और देव', 'दारोगा अमीचन्द' आदि इस प्रकार की कहानियाँ हैं। 'सेब और देव' शिक्षित और सुसंस्कृत कहे जाने वाले लोगों पर तीखे व्यंग्य की कहानी है। दरअसल दूसरे 'खेप' की कहानियों में बृहत्तर जीवन की संवेदनाओं का अंकन अधिक महत्त्वपूर्ण है। इन कहानियों में संवेदनात्मक उत्कर्ष और तीव्रता की दृष्टि से 'रोज' (गैंग्रीन), 'अलिखित कहानी', 'दुख और तितलियों', 'शान्ति हँसी थी', 'सूक्ति और भाष्य', 'इन्दु की बेटी', 'नम्बर दस', 'अछूते फूल' 'सिगनेलर', 'जीवन-शक्ति', ('जिजीविसा') आदि उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में मानवीय संवेदना के अनेक रूप अपनी तीव्रता में उद्घाटित हुए हैं। रोज़ (गैंग्रीन) निम्नमध्यवर्गीय जीवन को दहला देने वाली तसवीर है। इस वर्ग के दाम्पत्य जीवन के नीरस, बुझे, रुआंसे, सारहीन परिवेश को अंकित करने में अज्ञेय को अद्भुत सफलता मिली है। 'घण्टाघर की घड़ी' में एक-एक कर समयसूचक घण्टों की आवाज सुनाई पड़ना और सरकारी अस्पताल में गैंग्रीन के रोगियों के अक्सर पैर काटे जाने की सूचना प्रतीक रूप में इस मनहूस जीवन की त्रासदी को प्रभावी बनाती है। 1934 में नजरबन्दी की हालत में लिखी हुई यह कहानी अज्ञेय की कहानी-कला को अचानक एक ऊँचाई पर अवस्थित कर देती है। 'अलिखित कहानी' एक मध्यवर्गीय हिन्दी लेखक के जीवन के कटु यथार्थ और सपनों की कहानी है। 'दुःख और तितलिया' माँ की मृत्यु और उसके बाद घटित होने वाले सामाजिक कर्म के दौरान पुत्र की संवेदना के अंकन का प्रयास है। 'शान्ति हँसी थी' बेकारी के यथार्थ की कहानी है, जिससे किसी घोर प्रगतिवादी को भी ईर्षया हो सकती है। 'सूक्ति और भाष्य' भी एक यथार्थवादी कहानी है जिसमें एक राजस्थानी गरीब परिवार की लड़की की अभावजन्य मनोदशा और उससे जुड़ी संवेदना का सांकेतिक अंकन हुआ है। 'इन्दु की बेटी' एक मध्यवर्गीय संवेदनशील पति के अपराध-बोध की कहानी है। 'नम्बर दस' मानवीय संवेदना से लबालब एक ऐसे युवक की कहानी है, जो अपनी बीमार बहन के इलाज के लिए चोरी करता है, जेल जाता है और जेल से बाहर आकर अपनी पत्नी का इलाज कराने में असमर्थ एक युवक पति को चोरी के अपराध में जेल जाने से बचाने के लिए स्वयं को पुलिस के हवाले कर देता है। इस कहानी का कहानीपन युवक चोर के संवेदनात्मक चिन्तन और अंतर्द्वन्द्व में निहित है। 'अछूते फूल' प्रेम-संवेदना की एक विशिष्ट कहानी है, जिसमें एक आधुनिक एग्रेसिव लड़की के प्यार की संवेदना कैक्टस में खिल जाने वाले फूल की तरह जाग्रत हो जाती है। सिगनेलर गहरी प्रेम-संवेदना की कहानी है, जो प्रेम को सेक्स से अभिन्न मानने वालों के लिए बकवास या उदार दृष्टि से देखने पर किसी 'रोमांस' से अधिक नहीं है। पर अज्ञेय ने बड़े कौशल से एक तीसरे व्यक्ति को इस प्रेम का साक्षी बनाते हैं, डायरी प्रविधि के प्रयोग द्वारा, कहानी को 'रोमांस' के

सस्तेपन से बचा लिया है। उपयुक्त शिल्प के आविष्कार द्वारा किस प्रकार प्रेम की संवेदना को रोमांस से 'पीड़ा की अनुभूति' में बदला जा सकता है, 'सिगनेलर' इसका उदाहरण है। 'जीवन-शक्ति' ('जिजीविषा') कलकत्ता में भीख माँग कर जीवन-यापन करने वालों की जिन्दगी की एक मार्मिक कहानी है। मानवीय करुणा को जागृत करने वाली कचोट इस कहानी को विशिष्ट बनाती है। वस्तुतः ये ही वे कहानियाँ हैं, जो अज्ञेय को कहानीकार के रूप में आज भी प्रासंगिक और विशिष्ट बनाती हैं। 1943 में अज्ञेय सेना में भरती हो गये थे और 1946 के आरम्भ में उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी थी। अप्रैल 1941 से दिसम्बर, 1946 के बीच अज्ञेय ने एक भी कहानी नहीं लिखी। पर 1947 में, अपने इलाहाबाद प्रवास में उन्होंने एक साल के भीतर 'हीली-बोन् की बत्तखें', 'मेजर चौधरी की वापसी', 'लेटरबॉक्स', 'शरणदाता', 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई', 'रमन्ते तत्र देवता', 'बदला' आदि सात कहानियाँ लिखी थीं, जिनमें से प्रथम दो सैनिक जीवन से और अन्तिम पाँच भारत-विभाजन के समय हिन्दू-मुस्लिम दंगों की विभिन्न मनोदशाओं से सम्बंधित हैं। सैनिक जीवन से सम्बद्ध कहानियों को अज्ञेय ने अपनी 'तीसरे खेप की कहानियाँ' कहा है जो सैनिक जीवन से, और उन प्रदेशों के जीवन, समाज अथवा इतिहास से सम्बंधित हैं। इन कहानियों में 'मेजर चौधरी की वापसी' (1947), 'जय-दोल (1950), 'नगा पर्वत की एक घटना' (1950) आदि शामिल हैं। 'मेजर चौधरी की वापसी' युद्ध-समाप्ति के बाद सैनिकों की मनःस्थिति की कहानी है। इसमें विशेष रूप से युद्ध में आहत होकर सन्तानोत्पत्ति के लिए असमर्थ हो गये युवा पति की मनोव्यथा का चित्रण हुआ है। 'जय-दोल' का कथ्य है निरंकुश शासन की प्रतीक एक नागा रानी की दृढ़ता का चित्रण। 'नागा पर्वत की एक घटना' में युद्ध-संहिता की नैतिकता पर बौद्धिक विमर्श है। संख्या, रचना-काल और 'कहानीपन' की दृष्टि से इन कहानियों को अज्ञेय की कहानी-कला की कोई प्रावस्था मानना संगत नहीं है। इनकी प्रशंसा में इतना ही कहा जा सकता है कि कदाचित् और किसी हिन्दी कहानीकार ने इस विषय पर कहानियाँ नहीं लिखी हैं। इससे यह भी सिद्ध होता है कि जो अनुभव ओढ़ा हुआ होता है, उससे अच्छी कहानी नहीं निकलती है। 'हीली-बोन् की बत्तखें' एक अच्छी कहानी इसलिए है कि उसकी पृष्ठभूमि सैनिक जीवन की होने पर भी उसमें अंकित संवेदना स्त्री की सन्तानहीनता की मनोवैज्ञानिक स्थिति से सम्बद्ध है।

1947 में लिखित मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई', 'रमन्ते तत्र देवताः और बदला भारत-विभाजन की त्रासदी पर आधारित हिन्दू-मुस्लिम दंगों की विभिन्न घटनाओं से सम्बंधित है। इसके एक दशक बाद, 1957 में, अज्ञेय ने इस विषय पर एक और अच्छी कहानी नारंगियाँ लिखी, जो देश-विभाजन की त्रासदी की पृष्ठभूमि में मानवीय संवेदनाओं के जीवित रह जाने पर आधारित है। इन्हें अज्ञेय ने अपनी 'चौथी खेप' की कहानियों में शामिल करते हैं। अक्षय के शब्दों में ये कहानियाँ 'भारत-विभाजन के विवाद और उससे जुड़ी मनःस्थितियों' तथा आहत मानवीय संवेदन और मानव मूल्यों के आग्रह की कहानियाँ हैं।' इन कहानियों के बारे में अज्ञेय ने एक आश्चर्य-सी लगने वाली चाल यह कही है कि वे उनके 'जीवनानुभवों' के वृत्त में नहीं आतीं। यह तो हम जानते हैं कि अज्ञेय उन दिनों इलाहाबाद में रहते थे और ऐसी घटनाएँ पंजाब, पूर्वी भारत या उसके आसपास के क्षेत्रों में घटित हो रही थीं। पर बिना संवेदना का अंग बने ही कोई घटना रचना का विषय बन जाए, यह अज्ञेय को स्वीकार्य नहीं है। फिर ऐसा कैसे हुआ? सम्भवतः इलाहाबाद में पहुंचने वाले शरणार्थियों और समाचार-पत्रों में छपने वाली खबरों ने उनकी कथा-संवेदना को प्रेरित किया होगा। 1949 में, इलाहाबाद-प्रवास में ही, अज्ञेय ने 'वसन्त' और 'कविप्रिया' नामक कहानियों लिखीं। 'वसन्त' एक स्त्री की मनोदशा की कहानी है। वसन्त प्रतीक है और कहानी कविता की सरहदों को छूती हुई भारतीय परिवार की स्त्री की मनोदशाओं को व्यक्त करती है। 'कविप्रिया' वार्तालाप की प्रविधि में लिखित 'कवि' नामक प्राणी पर व्यंग्य और कवि-पत्नी की पति-निष्ठा और स्थिति को स्वीकार करने की विवशता की

कहानी है। यह 'विवशता' भी पाठक में व्यथा नहीं, व्यंग्य का बोध ही जगाती है। 1950 में दिल्ली आ जाने पर उन्होंने उसी वर्ष पांच कहानियाँ लिखीं जिनमें से 'जय-दोल' और 'नगा पर्वत की एक घटना' तो सैनिक जीवन से सम्बद्ध 'तीसरे खेप' की कहानियाँ हैं, पर 'वे दूसरे', 'पठार का धीरज' और 'साँप' कथ्य की दृष्टि से किसी एक वर्ग के अन्तर्गत नहीं रखी जा सकीं। 'वे दूसरे' प्रेम, विवाह और तलाक की मिली-जुली जटिल मनःस्थिति की कहानी है। इसका आधार शायद अज्ञेय का अपना भोगा हुआ अनुभव भी है। 'पठार का धीरज' प्रेम की संवेदना पर एक प्रकार का बौद्धिक, या चाहें तो प्रतीकात्मक भी कह लें, विमर्श है। 'साँप' में भी सौन्दर्य की संवेदना ही सामने आती है, पर उसे कहानी कहना संगत नहीं लगता। 'साँप' के बारे में अज्ञेय की शिकायत है कि इसमें कुछ लोगों को 'अतिरिक्त रोमानी तत्व' मिला है। स्वयं अज्ञेय के अनुसार इस कहानी में 'प्रिय को आदर्शीकृत करके देखने वाले पहले प्यार में और उसके समानान्तर सिर उठाना चाहने वाली वासनबा में 'होने वाले 'संघर्ष' का चित्रण हुआ है। अपने दिल्ली-प्रवास में ही, 1951-1959 की अवधि में, अज्ञेय ने 'देवी सिंह', 'खितीन बाबू', 'शिक्षा', 'नीली हंसी', 'कलाकार की मुक्ति', हजामत का साबुन (जनवरी, 1959 अज्ञेय की अन्तिम कहानी) आदि सात कहानियों लिखीं। 'देवी सिंह' व्यक्ति की अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए विजय हासिल करने और सुसंस्कृत समाज पर व्यंग्य करने वाली कहानी है। 'खितीन बाबू अदम्य जिजीविषा और संकल्प-शक्ति की कहानी है। पर यदि यह कहानी है तो प्रतीति-रहित है और यदि तथ्य है तो कहानी नहीं, संस्मरण या रेखाचित्र है। 'शिक्षा' एक बोध-कथा मात्र है। 'नीली हंसी' प्रेम की संवेदना की कहानी है; जैनेन्द्र की कहानियों की याद ताजा कराती हुई। 'कलाकार की मुक्ति' कलाकार की चरम साधना को प्रतीतित करने वाली एक बोध कथा है। 'हजामत का साबुन' एक साधारण-सी कहानी है, जो मानवीय संवेदना पर ही आधारित है।

यों तो अज्ञेय की अन्तिम कहानी जनवरी, 1959 की है, पर सर्जनात्मक दृष्टि से 1947 की भारत-विभाजन की त्रासदी से सम्बद्ध कहानियों के साथ ही 1957 में लिखी कहानी 'नारंगियाँ' को भी शामिल किया जा सकता है। इसे अज्ञेय के कहानीकार रूप का पटाक्षेप माना जा सकता है। पर 1931-1950 अवधि के हिन्दी कहानी के इतिहास में अज्ञेय का कभी न मिटने वाला स्थान है। कव्य की नवीनता के साथ-साथ कहानी के शिल्प और भाषा सम्बन्धी उनके प्रयोग उनकी सर्जनात्मकता को एक विशिष्ट ऊँचाई प्रदान करते हैं। अज्ञेय ने अपनी कहानियों के बारे में लिखा हैः '...मैंने प्रयोग किये तो शिल्प के भी किये, भाषा के भी किये, रूपाकार के भी किये, वस्तु-चयन के भी किये, काल की संरचना को लेकर भी किये, लेकिन शब्द-मात्र की व्यंजकता और सूचकता की एकान्त उपेक्षा कभी नहीं की। खुद अपनी कहानियों के बारे में कहे जाने पर भी इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। कहानी के क्षेत्र में जैनेन्द्र को छोड़ कर अन्य किसी लेखक ने इतने अधिक शिल्पगत प्रयोग नहीं किये हैं। तटस्थ नरेटर या कहानी के ही किसी पात्र के अवलोकन-विन्दु से कहानी प्रस्तुत करने तथा नाटकीय सम्भावनाओं से भरे संवाद की प्रविधि का उपयोग तो हिन्दी कहानी में इसके पहले से ही होता आ रहा था, जिसका उपयोग अज्ञेय ने भी किया; इसके साथ ही आत्मालाप, स्वगत-चिन्तन, आत्ममन्थन, आत्मालोचन, आत्मशोध, आत्मान्वेषण, कहानी के भीतर कहानी, अतीत के पुनरवलोकन, निर्जीव वस्तु के मानवीकरण, प्रतीक, स्वप्न, रूपक, पत्र, गाइड की कमेन्ट्री, साक्षात्कार, पाठक को सम्बोधित करते किस्सागो, पूर्णतः नाटकीय संवाद, पुराण-कथा आदि प्रविधियों के प्रयोग में भी अज्ञेय ने पहल की। यह तो नहीं कहा जा सकता कि सर्वत्र ये प्रयोग कहानी को प्रभावी बनाने में सहायक ही हुए हैं, पर कम-से-कम प्रयोग की दृष्टि से तो इनका महत्व है ही। 'अमर वल्लरी', हारिति', 'द्रोही', 'छाया', 'क्षमा', 'दारोगा अमीचन्द', 'अलिखित कहानी', 'शान्ति हंसी थी',

‘शत्रु’, ‘सिगनेलर’, ‘कोठरी की बात’, चिड़ियाघर’, ‘पठार का धीरज’ आदि कहानियाँ शिल्पगत प्रयोग की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

पाँचवें दशक में अज्ञेय ने केवल सात कहानियों लिखीं, जिनमें से एक ‘नारगियाँ (1957) भारत-विभाजन के सन्दर्भ से जुड़ी है। शेष छह कहानियों में ‘देवी सिंह’ (1951) भी एक अच्छी कहानी है। अन्य कहानियों, ‘खितीन बाबू’, (1952) ‘शिक्षा’, (1954) ‘नीती हंसी’, (1954) कलाकार की मुक्ति’ (1954) और ‘हजामत का सावुन’ (1939) प्रभाव की धार की दृष्टि से अपने समय का साथ नहीं देतीं।

अज्ञेय ने छठे दशक के अन्त में ही कहानी लिखना क्यों छोड़ दिया, उसके उत्तर में उनका कहना है कि मेरे लिए रचना-कर्म हमेशा अर्थवत्ता की खोज से जुड़ा रहा है। और यही खोज मुझे कहानी से दूर ले गयी है क्योंकि कहानी को मैंने उसके लिए ना-काफी पाया।... अर्थवत्ता में एक तरफ वस्तु की सही और मजबूत पकड़ और दूसरी तरफ उसके सही सम्प्रेषण पर मेरा समान बल रहा है। यानी खोज निरन्तर यथार्थ की पर्याप्त व्याप्ति और गहराई को समझने और सम्प्रेषण प्रक्रिया की अधिक समर्थ बनाने की रही है। जो रास्ता इस खोज में मुझे और आगे ले जाता नहीं जान पड़ा है, चाहे इसलिए कि वह रास्ता ीक नहीं है, चाहे इसलिए कि मेरे लिए वह दुर्गम है, उसे छोड़ कर मैंने अपनी यात्रा के लिए दूसरा पथ बनाना शुरू कर दिया है; और अपने पाठक अथवा समाज को साथ लिये चलने का प्रयत्न करता रहा हूँ क्योंकि असल बात तो समाज को ही साथ ले चलने की है, सम्प्रेषण की है, स्वयं कहीं पहुँच जाने-भर की नहीं, अभिव्यक्ति मात्र की नहीं। अज्ञेय का मानना है कि ‘आज तो सचमुच टाइम ‘आउट ऑफ जॉयन्ट’ है, न केवल सभी कुछ संदिग्ध है बल्कि हमारा यह भरोसा भी दिन-प्रति-दिन उठता जाता है कि कुछ भी हम असंदिग्ध रूप से जान सकेंगे और अनेक कारणों के अलावा एक इस कारण से भी कि जानकारी हासिल करने के (या जानकारी को विकृत करके जबरन वह विकृति ही स्वीकार कराने के) साधन लगातार ऐसे लोगों के दृढ़तर नियन्त्रण में चले जा रहे हैं जिन पर हमारा नियन्त्रण लगातार कमजोर होता जा रहा है। यहाँ तक कि हम स्वयं कहाँ खड़े हैं, और जिस युग अथवा काल-खण्ड में जी रहे हैं वह वास्तव में क्या है, उससे हमारा रिश्ता क्या अथवा कैसा है, यही पहचानना हमारे लिए प्रतिदिन कठिनतर होता जा रहा है। इस प्रत्यय को आगे बढ़ाते हुए अज्ञेय इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस स्थिति में ‘अवश्य ही कहानी भी ‘आउट ऑफ जॉयन्ट’ होगी। आज है भी; और इसमें एक तर्क सांगत है और युक्ति युक्त भी। इस सन्दर्भ में पहला प्रश्न उठता है, ‘यथार्थ’ का। अयथार्थ पद पर बहुत इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि ‘पयार्य इकहरा या सपाट या एकहा भी कहा जा सकता है कि कला के क्षेत्र में एक विशेष अर्थ में अर्थहीन होता है। निस्सन्देह वस्तु-जगत के तथ्यों की, परिवेश की स्थिति और किया-व्यापारों की, सामाजिक सम्बन्धों की पकड़ या समाप्त विषयी की जैसी होगी, जीवन-मात्र से जैसा उसका सम्बन्ध होगा, उससे वह विषयीगत यथार्थ भी प्रभावित होगा। लेकिन कला-वस्तु से परिवेश के सम्बन्ध का यह दूसरा वृत्त है। पहले और दूसरे वृत्त के बीच स्वयं कलाकार खड़ा है।

इस तर्क के बाद अज्ञेय ‘यथार्थ’ को ‘हमेशा अर्थहीन और इसके बावजूद ‘अर्थ की खोज’ को कलाकार मात्र के लिए, और अपने लिए भी, रचना-कर्म की शर्त मानते हैं। वे लिखते हैं: ‘मेरे लिए रचना-कर्म हमेशा अर्थवत्ता की खोज से जुड़ा रहा है। साहित्यकार के नाते मुझे अर्थहीन यथार्थ की तलाश नहीं भाती है।’

इस यथार्थ-विमर्श को अज्ञेय के कहानी लिखना छोड़ने से इसी अर्थ में जोड़ा जा सकता है। उनका उपन्यास लेखन भी लगभग इसके साथ ही समाप्त हो गया। इस विमर्श में अज्ञेय यह निष्कर्ष भी प्रस्तुत करते हैं कि ‘कहानी’ ‘सबसे जल्दी पुरानी’ पड़ जाती है; ‘फिर कहानियों में वे या वैसी कहानियों और भी जल्दी पुरानी पड़ती हैं जो अपने समय के समाज के बाह्य यथार्थ से बंधी होती हैं।’ उनका अगला निष्कर्ष है: ‘...वे कहानियाँ जल्दी पुरानी नहीं होती हैं, या

जो पुरानी होकर भी नयी बनी रही हैं या नयी हो गयी हैं, उनमें रचनाकार की दृष्टि सामाजिक यथार्थ की परिधि में बँधी न रह कर मानवीय यथार्थ पर केन्द्रित रही होंगी।' मुझे लगता है कि अज्ञेय का विमर्श यहाँ 'आउट ऑफ जॉयन्ट' हो गया है। यदि उनके इस निष्कर्ष में कोई दम होता तो प्रेमचन्द की कहानियाँ कब की अप्रासंगिक हो गयी होती। इतना ही नहीं, स्वयं उनकी कहानियाँ भी बीस वर्ष बाद पढ़ने और पुनमुदित होने लायक नहीं रहतीं। किन्तु यदि वे आज भी सार्थक या 'अर्थवत्ता' से युक्त हैं तो केवल इस कारण कि बाह्य यथार्थ से जुड़ी होने के बावजूद वे लेखक द्वारा 'स्वायत्त किये गये' होने तथा 'संवेदना से छनकर' आने का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। अज्ञेय यह भी मानते दीखते हैं कि 'कहानीकार के अन्य गुणों से सम्पन्न व्यक्ति में कवि-दृष्टि भी होने पर वह अधिक महत्वपूर्ण कहानी-लेखक हो सकता है।' दूसरी तरफ अज्ञेय के ही अनुसार, 'कवि न होना, कवि-दृष्टि न रखना, कहानीकार का सबसे बड़ा गुण माना और सिद्ध किया जाता है।' यहाँ सारी कठिनाई 'कवि-दृष्टि' के अर्थ-ग्रहण से जुड़ती है। यदि 'कवि-दृष्टि' संवेदना-दृष्टि का पर्याय है तो वह कहानी के लिए भी उतनी ही जरूरी है, जितनी कविता के लिए; पर यदि वह कवि की हवाई और अराजक कल्पना की परिचायक है तो कहानी में उसकी उपयोगिता नकारात्मक ही होगी। अज्ञेय की कहानियों में भी जहाँ संवेदना का क्षण घना और तीव्र है, वहाँ कहानी अपने उत्कर्ष पर पहुँचती है, पर जहाँ कल्पनाजन्य वर्णन या सजावटी भाषा की बहुलता है, वहाँ कहानी कमजोर हो गयी है। अज्ञेय का यह कथन पूर्वग्रह से भरा हुआ है कि ... हिन्दी में भी अपने समकालीनों में और युवा लेखकों में भी जिनकी कहानियाँ हम दोबारा पढ़ते हैं और रुचि से पढ़ सकते हैं, वे भी कवि हैं-कवि भी हैं और कहानीकार से पहले कवि रूप में पहचाने जाते हैं।' निष्कर्ष के रूप में हमें यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि हिन्दी कहानी के इतिहास में अज्ञेय की जगह सुरक्षित है। 'हारिति', 'गृहत्याग', 'रोज़' (गैंग्रीन), 'अलिखित कहानी', 'शान्ति हँसी थी', 'अछूते फूल', 'जीवन-शक्ति' (जिजीविषा), 'पुलिस की सीटी', 'हीली बोनू की बत्तखें', 'लेटरबॉक्स', 'शरणदाता', 'रमन्ते तत्र देवता', 'बदला', 'नारंगियाँ' आदि कहानियाँ आज भी उतनी ही पठनीय हैं जितनी अपने प्रथम प्रकाशन के समय थीं।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय की कहानियाँ मानवता, क्रान्ति और मानविक संघर्षों को बखूबी दर्शाती है। वे अपनी कहानियों में क्रातिकारी आन्दोलनों की गहरी समझ उनके पात्रों के आतंरिक द्वन्द्व को उजागर करते हैं। उनकी लेखनी में प्रेम, बलिदान और निष्ठा की जटिलताएँ है, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं। अज्ञेय का लेखन प्रामाणिक अनुभवों और संवेदनाओं पर आधारित है। अज्ञेय की कहानियाँ व्यक्तिगत और राष्ट्रीय संघर्षों के बीच के तर्कों और भावनाओं को विरोती हैं। इनका लेखन साहित्यिक दृष्टिकोण से अत्यधिक गहरे और विचारशील है।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय की कहानियाँ हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं
- उनकी रचनाओं की गहराई उन्हें खास बनाती है।
- वे गहरे भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को छूते हैं, जिससे पाठक आसानी से कहानी से जुड़ पाते हैं।
- अज्ञेय की कहानियों में विविधता का भी विशेष ध्यान रखा गया है; वे विभिन्न विषयों और चरित्रों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं

- उनकी लेखनी की सारगर्भिता महत्वपूर्ण है-वे संक्षेप में गहरी बातें कहने में माहिर हैं। साथ ही, वे सामाजिक और व्यक्तिगत संवेदनाओं को गहराई से व्यक्त करते हैं, जिससे पाठक के मन में प्रश्न उठते हैं।
- उनकी शैली में एक विशेष शिल्प होता है, जो पाठक को आकर्षित करता है।
- अज्ञेय की कहानियों में जीवन के गूढ़ दर्शन को समझाने की कोशिश की जाती है, जो उन्हें और भी विचारशील बनाती हैं। साथ ही, वे आधुनिकता के तत्वों को भी शामिल करते हैं, जिससे उनकी रचनाएँ समकालीन संदर्भ में भी प्रासंगिक रहती हैं।
- इन विशेषताओं के कारण, अज्ञेय की कहानियाँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे पाठक को सोचने और महसूस करने के लिए भी प्रेरित करती हैं।
- अज्ञेय का साहित्यिक योगदान न केवल हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण है, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति की गहरी समझ को भी उजागर किया।
- उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रेरित करती हैं और आधुनिक लेखन में उनकी छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अज्ञेय की पहली कहानी क्या है?
2. 'विपथगा' संकलन का प्रकाशन कब हुआ था?
3. अज्ञेय की कहानियों की प्रमुखता क्या है?
4. 'पुरुष का भाग्य' में किसकी त्रासदी का चित्रण है?
5. अज्ञेय की अन्तिम कहानी कब लिखी गई थी?
6. शिल्पगत प्रयोगों की दृष्टि से अज्ञेय की कौन सी कहानियाँ उल्लेखनीय हैं?
7. अज्ञेय ने शिल्प, भाषा और रूपाकार में किस प्रकार के प्रयोग किए?
8. अज्ञेय की कहानियों में किस क्षण में कहानी अपने उत्कर्ष पर पहुँचती है?

Answers / उत्तर

1. 'जिज्ञासा'
2. 1932
3. मानवीय अनुभूतियाँ
4. पत्नी का वात्सल्य
5. जनवरी, 1959
6. 'अमर वल्लरी', 'हारिति', 'द्रोही'
7. नवीनता
8. संवेदना का क्षण

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अज्ञेय की कहानियों के बारे में अपना विचार प्रकट कीजिए।
2. अज्ञेय की कहानियों की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
3. अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत प्रयोगों को व्यक्त कीजिए।
4. अज्ञेय की कहानियों की भाषा का प्रयोग स्पष्ट कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय का कथा - साहित्य : नारी मानसिकता के आयाम - डॉ श्रीप्रकाश यादव
2. अज्ञेय का कथा साहित्य - ओम प्रभाकर
3. युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार मिश्र
4. अज्ञेय व्यक्तित्व और कृतित्व - कृष्णदत्त पालीवाल
5. लोकप्रिय साहित्यकार अज्ञेय, वाणी प्रकाशन
6. अज्ञेय की जीवन रेखा - गोपल रॉय
7. कहानीकार अज्ञेय - गोपाल रॉय

इकाई 2

अज्ञेय की पाँच कहानियाँ विस्तृत अध्ययन के लिए

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय के कहानियों के बारे में समझता है
- अज्ञेय की कहानियों के पात्रों से परिचय प्राप्त करता है
- अज्ञेय की कहानियों की शैली समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचन्द के बाद जिन कहानीकारों ने अपनी प्रतिभा से हिन्दी कहानी जगत् को सहसा आलोकित कर दिया था उनमें 'अज्ञेय' अग्रणी है। 'अज्ञेय' ने सामान्य मध्यवर्गीय अभिजात सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय क्रान्तिकारियों का जीवन, शरणार्थी का जीवन, पर्यटक जीवन तथा स्त्री-पुरुष के नैतिक सम्बन्धों के विश्लेषण को अपनी कहानियों का उपजीव्य बनाया है। 'अज्ञेय' के लिये प्रारम्भ से ही सन्दर्भ महत्वपूर्ण नहीं रहा है। वे व्यक्ति चरित्र की गहन संवेदना को व्यक्त करने के लिये प्रयत्नशील रहे हैं। देशकाल और सामाजिक सन्दर्भ उनकी कहानियों का प्राण तत्व नहीं है, वह केवल क्षीण आधार भूमि प्रस्तुत करता है। उनकी दृष्टि व्यक्ति वैशिष्ट्य की ओर केन्द्रित रही है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

रिफ़्यूजी, आजीविका, सांप्रदायिक संघर्ष, इर्द-गिर्द, गोलीबारी की आवाज़, जटिल संबंधों

Discussion / चर्चा

3.2.1 नारंगियाँ

नारंगियाँ कहानी दो रिफ़्यूजी भाइयों, हरसू और परसू के जीवन के संघर्षों और उनके रिश्ते की जटिलताओं को दर्शाती है। दोनों भाई एक मोहल्ले में बसे हुए हैं, लेकिन न तो उन्होंने कोई स्थिर काम शुरू किया है और न ही किसी तरह की आजीविका कमाने का स्पष्ट तरीका अपनाया है। उनके बारे में मोहल्ले वाले अक्सर यह सोचते हैं कि वे किसी न किसी अनैतिक तरीके से अपना जीवन चला रहे होंगे, हालांकि न तो वे भीख मांगते हैं और न ही चोरी करते हैं।

कहानी में एक दिन हरसू एक सड़क किनारे नारंगियाँ बेचने की दुकान लगाता है। वह अपनी दुकान को बहुत साधारण तरीके से, एक बोरिये और पुआल के टुकड़े पर सजाकर लगाता है। इस दुकान को देखकर मोहल्ले के बच्चे आकर्षित होते हैं, लेकिन सबसे ज्यादा कौतूहल इस बात को लेकर है कि हरसू, जो किसी कामकाजी व्यक्ति की तरह कभी नहीं दिखाई देता था, अचानक दुकान चला रहा है। दूसरी ओर, उसका भाई परसू दुकान से दूर पुलिया पर बैठा होता है और हरसू के काम का मजाक उड़ाता है, यह कहते हुए कि वह बच्चों को फुसलाकर पैसे जुटा रहा है।

हरसू, जो कि एक शांत और शालीन व्यक्ति है, बच्चों को नारंगी देने में कोई आपत्ति नहीं करता, जबकि परसू बच्चों को पैसे लाने के लिए कहता है और फिर भी हरसू की उदारता का मजाक उड़ाता है। परसू का दृष्टिकोण जीवन को लेकर कठोर है, और वह हमेशा हरसू को ताना मारता है, यह कहते हुए कि वह रिफ़्यूजी होने के बावजूद कुछ हासिल नहीं कर पा रहा है। हालांकि, हरसू अपनी परिस्थिति के साथ संतुष्ट रहता है और बच्चों को नारंगी देकर उनकी मदद करता है।

परसू अंततः हरसू को पैसे देता है, लेकिन उसका यह व्यवहार भी दिखाता है कि वह केवल अपने स्वार्थ के लिए ऐसा करता है, और वह कभी भी दूसरों की मदद करने को सही नहीं मानता। हालांकि हरसू उदार है, लेकिन उसे भी अपनी कठिनाइयों का एहसास है, और वह जानता है कि यह स्थिति अस्थायी है। वह अपने भाई परसू के तानों को नजरअंदाज करता हुआ चुपचाप अपनी दुकान चलाता रहता है, भले ही वह जानता है कि यह छोटा सा व्यापार उसे कभी बड़ी आर्थिक स्वतंत्रता नहीं दे सकता।

कहानी अंततः यह दिखाती है कि हरसू और परसू के बीच का संघर्ष केवल बाहरी नहीं है, बल्कि यह उनके भीतर की मानसिकता का भी परिणाम है। जहाँ हरसू अपनी उदारता और सम्मान के साथ जीवन जीने की कोशिश करता है, वहीं परसू की आलोचनाएँ और नकारात्मक दृष्टिकोण उसे जीवन के प्रति निराशा और कठोरता से भर देते हैं। दोनों भाई अपनी - अपनी सोच और दृष्टिकोण से अपने जीवन की जद्दोजहद कर रहे हैं, और यही उनके रिश्ते की जटिलता को जन्म देता है।

यह कहानी एक सामाजिक और मानसिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करती है, जिसमें दो रिफ़्यूजी भाइयों के जीवन की जटिलताएँ और संघर्ष सामने आते हैं। हरसू और परसू दोनों की उपस्थिति और उनके बीच के रिश्ते का द्वन्द्व इस कहानी का केंद्रीय तत्व है।

3.2.1.1 हरसू और परसू के बीच का संघर्ष:

हरसू और परसू के संबंधों में जो खींचतान है, वह मात्र बाहरी संघर्ष नहीं है, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक द्वन्द्व का प्रतीक है। हरसू एक ऐसा व्यक्ति है जो जीवन की कठिनाइयों को अपनी शालीनता से झेलने की कोशिश करता है, जबकि परसू अपनी तीखी टिप्पणियों और असंवेदनशीलता से उसे और दबाव में डालता है। परसू की आँखों में जीवन के प्रति एक कड़ा दृष्टिकोण है, और वह हरसू की इस 'निर्धनता' और 'रिफ़्यूजी' वाली स्थिति का मजाक उड़ाता है। परंतु, यह दोनों भाई एक - दूसरे से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं, और उनकी समस्याएँ एक दूसरे के बिना अधूरी हैं।

3.2.1.2 हरसू की दुकान और उसकी मानसिक स्थिति:

कहानी में हरसू की दुकान उस जीवन के संघर्ष को दिखाती है, जिसे वह अपनी सीमित और कठिन परिस्थितियों में भी चलाने की कोशिश कर रहा है। नारंगियाँ एक प्रतीक हैं, जो उसकी छोटी - मोटी सफलता का रूप दिखाती हैं, लेकिन वह जानता है कि इस सफलता का कोई स्थायित्व नहीं है। दुकान लगाना, बच्चों को नारंगियाँ देना, ये सब एक तरह से उसके जीवन के साधारण से सुखों को व्यक्त करता है, लेकिन यह सुख उसे अपने भाई और समाज से मिल रही आलोचना के बीच फीका सा लगता है। उसका संघर्ष केवल पैसे के लिए नहीं है, बल्कि अपनी गरिमा और अस्तित्व के लिए भी है।

3.2.1.3 परसू का दृष्टिकोण

परसू का दृष्टिकोण कहानी में अधिक कटु और व्यंग्यात्मक आवाज़ के रूप में उभरता है। वह अपने छोटे भाई को अपने तरीके से 'कड़ा' बनाने की कोशिश करता है, और अपने कठोर शब्दों से उसकी कमजोरियों का मजाक उड़ाता है। वह हर समय अपने भले के लिए सोचता है और समझता है कि दूसरों की मदद करने से कोई लाभ नहीं होता। लेकिन फिर भी, अपने भाई की सहानुभूति और बच्चों के प्रति उसकी 'दया' को वह छुपा नहीं पाता, और कभी -

कभी अपनी आलोचना में थोड़ी नरमी दिखाता है। उसके अंदर की उलझन, यह बिंदु भी कहानी में बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक व्यक्ति के अंदर की विपरीत भावनाओं और संघर्षों को दर्शाता है।

3.2.1.4 कहानी का सामाजिक सन्दर्भ :

कहानी रिफ़्यूजी समुदाय की ज़िंदगी, उनके सामाजिक और मानसिक संघर्षों को उभारती है। एक ओर जहां हरसू एक छोटे से प्रयास से अपने अस्तित्व को बनाए रखने की कोशिश करता है, वहीं परसू का दृष्टिकोण जीवन के प्रति निराशा और कड़वाहट से भरा हुआ है। दोनों भाई समाज में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यह प्रक्रिया आसान नहीं है। मोहल्लेवाले उनका मजाक उड़ाते हैं, लेकिन हरसू फिर भी अपने तरीके से एक स्थिरता की तलाश करता है। उसकी दुकान का छोटा सा कारोबार उसकी आज़ादी का प्रतीक है, लेकिन वह जानता है कि यह 'स्वतंत्रता' अस्थायी है।

3.2.1.5 समाप्ति और विचार :

कहानी के अंत में, जब हरसू और परसू अपने - अपने तरीकों से जीवन को समझने की कोशिश करते हैं, तो यह दर्शाया जाता है कि कभी - कभी बाहरी परिस्थितियाँ और समाज की आलोचनाएँ हमारी मानसिकता और रिश्तों को जटिल बना देती हैं। हरसू और परसू का संवाद, उनकी मानसिकता और उनका एक - दूसरे के प्रति रवैया इस विचार को जाहिर करता है कि जीवन की सच्चाई न केवल बाहरी संघर्षों से जुड़ी होती है, बल्कि यह हमारी मानसिक स्थिति और आंतरिक संघर्षों पर भी निर्भर करती है।

यह कहानी हमसे यह सवाल पूछती है कि जब हम एक दूसरे की मदद करते हैं या आलोचना करते हैं, तो क्या हम पूरी तस्वीर को समझते हैं या केवल एक छोटे से हिस्से पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं।

3.2.2 बदला

यह कहानी एक ट्रेन यात्रा के दौरान होने वाली घटनाओं के माध्यम से हिंसा, धर्म और पहचान के सवालों को उठाती है। मुख्य पात्र सुरैया, एक मुसलमान महिला, अपनी यात्रा पर बच्चों के साथ ट्रेन में बैठी होती है। यात्रा के दौरान वह दो सिख यात्रियों से मिलती है, जिनकी आँखों में वह कुछ अजनबी और खौफनाक सा महसूस करती है। सुरैया के मन में सिख यात्रियों के बारे में डर और आशंका पैदा होती है, लेकिन जैसे - जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उनके बीच बातचीत होती है और वह समझ पाती है कि सिख व्यक्ति भी अपने परिवार और घर को खोने के बाद शरणार्थी के रूप में जीवन बिता रहे हैं।

कहानी में सुरैया का डर और सिख यात्रियों के प्रति पूर्वाग्रह धीरे - धीरे बदलता है, खासकर एक सिख के साथ हुई बातचीत के बाद। सुरैया और एक हिन्दू यात्री के बीच भी संवाद होता है, जिसमें हिन्दू व्यक्ति सिखों की खिलाफ किए गए अत्याचारों के बारे में बात करता है। इस दौरान सिख व्यक्ति अपनी पीड़ा और दर्द को साझा करता है, और बताता है कि उसने और उसके परिवार ने अपने घरों, अपनी जमीनों, और अपने अपनों को खो दिया है।

कहानी का मुख्य संघर्ष धर्म और पहचान के आधार पर उत्पन्न हुई नफरत और असहमति को दर्शाता है। सिख पात्र, जो खुद शरणार्थी हैं, उनका मानना है कि बदला कभी खत्म नहीं हो सकता, क्योंकि जिन्दगी की सबसे बड़ी सज़ा यह है कि कोई इंसान नफरत और हिंसा का शिकार हो। वह यह भी कहता है कि किसी की बहन - बेटी के साथ हुई बेइज्जती का बदला कभी नहीं लिया जा सकता और उसकी पीड़ा को कोई भी नहीं समझ सकता।

अंत में, जब सिख व्यक्ति अपनी बातें खत्म करता है, तो सुरैया को एहसास होता है कि इन दोनों पक्षों का दर्द एक जैसा है, और उनका संघर्ष भी समान है। उसने इस यात्रा के दौरान सिख व्यक्तियों से जो सीखा, वह है इंसानियत और बदला लेने की निरर्थकता।

कहानी के अंत में, सुरैया अपनी यात्रा को लेकर मन में कुछ सवाल और विचार लेकर अलीगढ़ पहुँचती है। हालांकि उसने सिख व्यक्ति को धन्यवाद नहीं

कहा, लेकिन उसकी आँखों में एक नया दृष्टिकोण और समझ विकसित हो चुकी होती है।

3.2.2.1 मुख्य विषय:

धर्म, हिंसा और शरणार्थी जीवन

नफरत और बदला लेने की निरर्थकता

इंसानियत और सहानुभूति

हिन्दू - मुसलमान - सिख के बीच के साम्प्रदायिक तनाव

कहानी में एक गहरी सच्चाई है, जो हमें यह समझने के लिए प्रेरित करती है कि युद्ध और संघर्ष से उत्पन्न नफरत कभी भी किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकती।

यह कहानी भारतीय उपमहाद्वीप के सांप्रदायिक संघर्ष और उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न दर्द और नफरत की गहरी वास्तविकताओं को चित्रित करती है। इसका शीर्षक 'बदला' है, जो इस कथा के मुख्य भाव को रेखांकित करता है - बदले की भावना और उसका निरर्थकता के रूप में परिणाम। यह कहानी एक ट्रेन यात्रा के दौरान होने वाली एक गहरी बातचीत के माध्यम से कई सामाजिक और व्यक्तिगत सवालों को उठाती है। कहानी में मुख्य पात्र सुरैया, एक मुस्लिम महिला, और एक सिख परिवार के सदस्य हैं, जो दोनों ही विभाजन और साम्प्रदायिक हिंसा का शिकार हुए हैं।

3.2.2.2 कहानी का संदेश:

कहानी का मुख्य संदेश यह है कि हिंसा और बदला कभी भी दर्द का समाधान नहीं हो सकते। ये सिर्फ नफरत और घृणा को बढ़ाते हैं। सिख का दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि इंसानियत और समझदारी से ही जीवन में शांति और समाधान संभव है। यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि एक इंसान का दर्द और पीड़ा दूसरे इंसान से बहुत अलग हो सकता है, और जब हम उसकी पीड़ा को समझते हैं, तो हम एक बेहतर समाज की ओर बढ़ सकते हैं। यह कहानी साम्प्रदायिक तनाव और नफरत के बीच इंसानियत, सहानुभूति, और एकता की आवश्यकता को दर्शाती है।

3.2.3 इंदु की बेटी

'इन्दु की बेटी' गहरी संवेदनाओं और पछतावे की कहानी है, जो मुख्य रूप से रामलाल और उसकी पत्नी इन्दु के संबंधों के इर्द-गिर्द घूमती है। रामलाल का दाम्पत्य जीवन शुरुआत में नीरस और संघर्षपूर्ण था, और वह अक्सर अपनी पत्नी इन्दु से असंतुष्ट रहता था। एक यात्रा के दौरान, जब रामलाल को अपनी पत्नी के प्रति अपने भावनात्मक संघर्ष का अहसास होता है, तो वह गुस्से में भर जाता है। इस यात्रा के दौरान एक दुखद घटना घटती है: इन्दु की ट्रेन के नीचे गिरकर मृत्यु हो जाती है।

रामलाल को इस हादसे के बाद गहरा पछतावा होता है। वह सोचता है कि अगर उसने अपनी पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार किया होता, तो शायद उसका जीवन और उसकी शादी कुछ और ही दिशा में जाती। रामलाल को महसूस होता है कि वह अपनी पत्नी के साथ प्रेम और समझदारी से पेश नहीं आया था, और अब वह अपनी गलतियों को सुधारने का प्रयास करता है।

कहानी का एक और महत्वपूर्ण पहलू तब सामने आता है जब रामलाल को एक abandoned (उपेक्षित) बच्ची मिलती है। यह बच्ची, जिसे रामलाल अपनी गोद में लेता है, उसकी पत्नी इन्दु के रूप में एक नया जीवन प्रतीत होती है। रामलाल इस बच्ची को इन्दुकला नाम देता है और उसे अपनी बेटी की तरह पालता है।

कहानी के अंत में, रामलाल अपनी पुरानी भूलों का प्रायश्चित करता है और अब उसे लगता है कि इन्दु की मृत्यु के बाद उसकी जगह एक नया जीवन, इन्दुकला, उसकी ज़िन्दगी में आई है। वह जानता है कि यह बच्ची उसकी पत्नी इन्दु की तरह ही उसे प्यार और स्नेह देगी, और उसे अपनी गलतियों के लिए कुछ हद तक शांति मिलेगी।

3.2.3.1 कहानी का संदेश:

यह कहानी जीवन के पछतावे, दाम्पत्य जीवन के संघर्ष, और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के कारण उत्पन्न होने वाले आंतरिक द्वंद्वों को दर्शाती है। रामलाल का जीवन इस बात का उदाहरण है कि हम अक्सर अपने प्रियजनों के साथ सही व्यवहार नहीं करते और बाद में उस अपराधबोध से जूझते हैं। फिर भी, यह कहानी इस सत्य को भी उजागर करती है कि हर व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी रूप में उभर सकता है, और क्षमा और प्यार के साथ अपनी गलतियों की भरपाई कर सकता है।

3.2.4 दारोगा अमीचन्द

यह कहानी दारोगा अमीचन्द, एक कठोर और क्रूर जेल अधिकारी की है, जो पंजाब की हज़ारा जेल में तैनात थे। उनके कड़े अनुशासन और भयावहता के कारण जेल में उनका खौफ़ फैला हुआ था। विशेषकर उनके प्रसिद्ध मूँछों और घमंड के चलते, वे क़ैदियों के बीच आतंक का प्रतीक बन चुके थे।

कहानी 1934 के समय की है, जब जेलों में सियासी क़ैदी भी थे, और उनमें से बहुत से अकाली क़ैदी संघर्ष कर रहे थे। दारोगा अमीचन्द को अकालियों को दबाने के लिए विशेष रूप से भेजा गया था। जेल में खाने के खराब होने की वजह से अकालियों ने विरोध प्रदर्शन शुरू किया, और कई शर्तों की मांग की। दारोगा अमीचन्द ने इन मांगों को नज़रअंदाज़ करते हुए, क़ैदियों पर सख़्ती बढ़ा दी, जिससे उनका संघर्ष और बढ़ा।

कहानी का एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आता है जब आई.जी. (इंस्पेक्टर जनरल) का दौरा आने वाला होता है। दारोगा अमीचन्द चाहते थे कि वे आई.जी. को यह दिखा सकें कि उन्होंने क़ैदियों का विद्रोह शांत कर दिया है। लेकिन जब अकालियों ने अपनी मांगों को छोड़ने की घोषणा की, तो वे यह शर्त रखते हैं कि दारोगा को अपनी मूँछें नीची करनी होंगी। यह शर्त किसी के लिए भी अप्रत्याशित थी, लेकिन दारोगा ने यह स्वीकार कर लिया और अकालियों के सामने अपनी मूँछों को नीचा कर दिया, जिससे जेल के अंदर एक नई स्थिति उत्पन्न हुई।

यह कदम दारोगा के लिए अपमानजनक था, लेकिन इसके बाद क़ैदी उनके इस कृत्य पर हँसी उड़ाने लगे और धीरे-धीरे यह बात जेल में फैलने लगी। आई.जी. के दौरे पर यह मसला सामने आया, और दारोगा की छवि को नुकसान पहुँचा। बाद में उनकी बदली कर दी जाती है, और वह कहीं भी अपना प्रभाव बनाने में असफल होते हैं। अंततः वह सेवानिवृत्त हो जाते हैं, और जेल के भीतर उनका नाम केवल एक मूछों वाला दारोगा के रूप में रह जाता है।

कहानी का संदेश यह है कि अहम और अहंकार अंततः व्यक्ति को कमजोर कर देते हैं, और समझौता भी कभी-कभी किसी बड़े संघर्ष को सुलझाने का तरीका बन सकता है।

3.2.5 एक घंटे में

यह कहानी प्रभाकर और रजनी नामक विवाहित जोड़े के बीच के जटिल संबंधों को दर्शाती है, जो राजनीतिक उथल-पुथल और क्रांतिकारी आंदोलनों के संदर्भ में घटित होती है।

प्रभाकर, एक कॉलेज में लेक्चरर, एक गुप्त क्रांतिकारी दल से जुड़ा हुआ है, जबकि उसकी पत्नी रजनी, एक संपन्न और शिक्षित परिवार से आती है। रजनी को शुरू में अपने पति के विचारों और जीवनशैली से सामंजस्य बैठाने में कठिनाई होती है। उसे अपने घर की पुरानी संस्कृति और उनके विचारों से टकराव महसूस होता है। उसका विश्वास था कि पैसे और सत्ता से ही सब कुछ चलता है, लेकिन प्रभाकर के साथ आने पर उसे मजदूरों, किसानों, और सामाजिक समानता के विचारों का सामना करना पड़ता है।

रजनी, प्रभाकर के क्रांतिकारी विचारों के खिलाफ विद्रोह करती है, क्योंकि यह उसके परिवार की परंपराओं और उसकी सोच से बहुत अलग था। वह

अपनी किताबों और शिक्षा का सहारा लेकर अपने विचारों को प्रमाणित करने की कोशिश करती है, लेकिन प्रभाकर हमेशा उसे सहजता से हंसी में टाल देता है।

धीरे - धीरे रजनी की सोच में बदलाव आता है। वह प्रभाकर की किताबों को पढ़ने लगती है, और उसके पुराने विश्वास टूटने लगते हैं। हालांकि, वह अपने परिवर्तित दृष्टिकोण को प्रभाकर से छुपाती है।

एक दिन प्रभाकर रजनी को बताता है कि उसने क्रांतिकारी दल जॉइन किया है और पुलिस ने उसके खिलाफ वारंट जारी कर दिया है। रजनी को झटका लगता है, लेकिन वह अपने पति का साथ देने का फैसला करती है, हालांकि वह क्रांतिकारी विचारों से सहमत नहीं है। वह निर्णय लेती है कि वह चुप रहकर उसकी मदद नहीं करेगी, लेकिन उसका विरोध भी नहीं करेगी।

प्रभाकर घर छोड़कर छिपने जाता है। एक रात घर के पास गोलीबारी की आवाज़ें सुनकर रजनी चिंतित हो जाती है और सोचने लगती है कि अगर पुलिस प्रभाकर को पकड़ लेगी तो क्या होगा। वह डर और गुस्से से जूझती है, लेकिन साथ ही वह इस स्थिति को स्वीकार करने की कोशिश करती है।

रजनी के मन में अपने पति के साथ चलने और न चलने को लेकर गहरे संघर्ष होते हैं। वह विचार करती है कि यदि वह पकड़ा गया तो क्या होगा, और कैसे उसे इस मुश्किल स्थिति से निपटना होगा। वह इन विचारों से निकलने के लिए और अपने कर्तव्यों को समझने के लिए अपने मन को शांत करने की कोशिश करती है।

एक दिन, दिवाली की रात प्रभाकर घर लौटता है। वह रजनी के लिए मिठाई लाता है और दोनों चुपचाप एक दूसरे के साथ बिताते हैं। रजनी अपने पति की सुरक्षित वापसी पर खुश होती है, लेकिन उसे अंदर ही अंदर बहुत बदलाव महसूस होता है। उसने अब यह तय किया है कि वह अपने पति के साथ रहेगी, लेकिन उसके क्रांतिकारी विचारों को लेकर कोई मदद नहीं करेगी।

अंत में रजनी दिवाली मनाने का निर्णय लेती है, भले ही उनका जीवन इस समय संकट में हो। वह घर में दीप जलाती है और अपने पति के साथ घर में शांति और स्नेह से भरी छोटी सी खुशी का अनुभव करती है। प्रभाकर भी उसकी ओर स्नेहपूर्ण नजरों से देखता है और उसे स्वीकार करता है।

3.2.5.1 कहानी का संदेश:

यह कहानी रजनी के व्यक्तिगत विकास और संघर्ष की कहानी है, जो अपने पति के साथ अपनी वैवाहिक और राजनीतिक यात्रा में बदलावों का सामना करती है। यह दिखाती है कि कैसे विचारधाराओं और व्यक्तिगत विश्वासों के बीच संतुलन साधना कठिन होता है, लेकिन अंततः प्यार, समझ और समर्थन से किसी भी कठिन परिस्थिति से निपटा जा सकता है।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय की कहानियाँ जीवन के गहरे पहलुओं को समझने की कोशिश करती हैं। वे अपनी कहानियों में बाहरी और आंतरिक संघर्षों को समान रूप से दिखाते हैं। जैसे 'नारंगियाँ' में दो भाइयों के रिश्ते की जटिलता को दिखाया गया है, जहां एक भाई जीवन की कठिनाइयों से शांतिपूर्वक निपटता है, जबकि दूसरा आलोचना करता है। 'बदला' में धर्म और सांप्रदायिकता के संघर्षों को प्रस्तुत किया गया है, जहां यह बताया गया है कि हिंसा और बदला कभी समस्या का समाधान नहीं हो सकते। अज्ञेय का लेखन यह संदेश देता है कि हमें इंसानियत और सहानुभूति को प्राथमिकता देनी चाहिए, ताकि हम समाज में शांति और समझ बना सकें।

अज्ञेय की कहानियाँ रिश्तों, प्यार और व्यक्तिगत संघर्षों को भी गहराई से दिखाती हैं। 'इन्दु की बेटी' और 'एक घंटे में' में पात्र अपनी गलतियों और फैसलों को समझने की कोशिश करते हैं, जिससे वे अपने रिश्तों को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं।

'दारोगा अमीचन्द' में अहंकार और घमंड के कारण गिरावट को दर्शाया गया है, यह बताने की कोशिश की गई है कि शक्ति का दुरुपयोग कभी फायदेमंद नहीं होता। इस तरह अज्ञेय की कहानियाँ हमें यह सिखाती हैं कि जीवन में सबसे अहम चीज इंसानियत, समझदारी और सहानुभूति है।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय की नारगियाँ शीर्षक
- कहानी दो रिफ़्यूजी भाइयों, हरसू और परसू के संघर्ष को दर्शाती है
- हरसू नारंगियाँ बेचता है, जबकि परसू उसका मजाक उड़ाता है
- हरसू उदार है, परसू नकारात्मक दृष्टिकोण रखता है
- दोनों के बीच मानसिक और रिश्तों की जटिलता है
- बदला शीर्षक कहानी ने सुरैया नाम की मुसलमान महिला ट्रेन यात्रा में सिख यात्रियों से मिलती है
- शुरुआत में उसे सिखों से डर लगता है, लेकिन बातचीत से वह समझती है कि दोनों पक्षों का दर्द समान है
- कहानी यह सिखाती है कि बदला नफरत बढ़ाता है और इंसानियत से समाधान होता है
- रामलाल को अपनी पत्नी इन्दु के साथ रिश्ते में पछतावा होता है, जब उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है
- वह एक बच्ची को गोद लेता है और उसका नाम इन्दुकला रखता है
- कहानी यह दिखाती है कि पछतावे और गलतियों से उबरने के लिए प्रेम और माफी की आवश्यकता होती है
- दारोगा अमीचन्द एक क्रूर जेल अधिकारी हैं जिनका अहंकार उन्हें नुकसान पहुँचाता है
- जब उसे अपनी मूँछें नीची करने का आदेश मिलता है, तो उसकी प्रतिष्ठा गिर जाती है
- कहानी सिखाती है कि अहंकार अंततः व्यक्ति को कमजोर कर देता है
- प्रभाकर और रजनी के रिश्ते में राजनीतिक और वैचारिक संघर्ष होता है
- रजनी धीरे-धीरे अपने पति के विचारों को समझने लगती है, लेकिन उनका विरोध भी नहीं करती
- कहानी यह बताती है कि प्यार और समझ से कठिन परिस्थितियों का सामना किया जा सकता है

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'नारंगियाँ' कहानी का मुख्य पात्र कौन है?
2. 'बदला' कहानी में सुरैया किस समुदाय से संबंधित है?
3. 'इन्दु की बेटी' कहानी का मुख्य संदेश क्या है?
4. 'दारोगा अमीचन्द' कहानी में दारोगा को किस चीज़ का अहंकार था?
5. 'एक घंटे में' कहानी में रजनी के पति का नाम क्या है?
6. 'नारंगियाँ' कहानी में परसू का दृष्टिकोण क्या था?
7. 'बदला' कहानी में सिख व्यक्ति का क्या दृष्टिकोण था?
8. 'इन्दु की बेटी' कहानी में रामलाल ने बच्ची का क्या नाम रखा?

Answers / उत्तर

1. हरसू
2. मुस्लिम
3. प्रेम और माफी के महत्व को समझना
4. मूँछें
5. प्रभाकर
6. कठोरता और आलोचना
7. जीवन में कभी भी नफरत नहीं फैलानी चाहिए
8. इन्दुकला

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. 'नारंगियाँ' कहानी में हरसू और परसू के रिश्ते की जटिलता को समझाते हुए इस पर एक निबंध लिखें।
2. 'बदला' कहानी के माध्यम से धर्म, हिंसा और पहचान के सवालों पर चर्चा करें। इसके सामाजिक प्रभावों को भी समझाएँ।
3. 'इन्दु की बेटी' में रामलाल का पछतावा और बदलाव कैसे दर्शाया गया है? क्या आप इस बदलाव को सही मानते हैं? अपने विचार व्यक्त करें।
4. 'दारोगा अमीचन्द' कहानी में दारोगा के अहंकार और उसके परिणामों को समझाइए।
5. 'एक घंटे में' में रजनी के व्यक्तिगत विकास को परखते हुए बताएँ कि कैसे उसने अपने विश्वास और विचारों में बदलाव किया।
6. 'नारंगियाँ' कहानी में हरसू का जीवन जीने का तरीका और परसू का दृष्टिकोण क्या दर्शाता है? इन दोनों पात्रों के दृष्टिकोण में क्या अंतर है?
7. 'बदला' कहानी में सुरैया के मन में सिख यात्री के प्रति डर और उसके बाद की समझ में बदलाव को विस्तार से समझाएँ।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. लोकप्रिय साहित्यकार अज्ञेय, वाणी प्रकाशन
2. अज्ञेय की जीवन रेखा - गोपल रॉय
3. कहानीकार अज्ञेय - गोपाल रॉय
4. कवि अज्ञेय - गोपाल रॉय
5. युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार मिश्र
6. अज्ञेय व्यक्तित्व और कृतित्व - कृष्णदत्त पालीवाल
7. युगपुरुष कवि अज्ञेय, डॉ. रामेश्वर बांगड़, विद्याप्रकाशन, कानपुर।
8. तार सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

9. दूसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
10. तीसरा सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ
11. संपूर्ण कहानियाँ, अज्ञेय, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

SGOU

BLOCK - 04

उपन्यासकार अज्ञेय

SGOU

इकाई 1

अज्ञेय के उपन्यासों का परिचय और विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकार अज्ञेय की परिचय प्राप्त करता है
- अज्ञेय के उपन्यासों की जानकारी प्राप्त करता है
- उपन्यासों की विशेषताओं को समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय का जन्म 7 मार्च 1911 में उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में हुआ। अज्ञेय का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे एक सफल कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, संपादक एवं वक्ता थे। हिन्दी साहित्य में वे प्रयोगवाद के जनक के रूप में जाने जाते हैं। अज्ञेय जी को 'कितनी नावों में कितनी बार' नामक काव्यकृति पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है। इन्होंने 'दिनमान' नामक साप्ताहिक पत्र के संपादक पद पर कार्य करते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में एक नया युग का प्रणयन किया। इसके पहले प्रतीक, नई कविता नामक पत्रिकाओं का संपादन भी कर चुके हैं। अज्ञेय का रचना संसार विविधतापूर्ण है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी, औपन्यासिक विकास, व्यक्ति स्वतंत्रता, मार्मिक यथार्थवादी, व्यक्ति स्वातंत्र्य, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषण

Discussion / चर्चा

4.1.1 शेखर एक जीवनी (सारांश)

'शेखर एक जीवनी' अज्ञेय की बृहत एवं बहुचर्चित औपन्यासिक कृति है जिसके दो भाग प्रकाशित हुए हैं। प्रथम भाग का प्रकाशन सन् 1941 ई. में और द्वितीय भाग का प्रकाशन सन् 1944 ई. में हुआ। प्रथम भाग का नामकरण 'उत्थान' और द्वितीय भाग का नाम 'संघर्ष' रखा। उत्थान के अंतर्गत चार खंड हैं - उषा और ईश्वर, बीज और अंकुर, प्रकृति और पुरु ष, पुरुष और परिस्थिति। उसी प्रकार संघर्ष में भी चार खंड हैं - पुरुष और परिस्थिति, बंधन और जिज्ञासा, शशि और शेखर, धागे रस्सियाँ गुंझर।

पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक) शैली में लिखा उपन्यास है 'शेखर एक जीवनी'। यह उपन्यास स्मृति चित्रों का एक एलबम है। फांसी की सज़ा पाकर शेखर अपने विगत जीवन पर विहंगम दृष्टि डालता हुआ अपने जीवन के एलबम के पृष्ठ पलट रहा है। शेखर एक

क्रान्तिकारी युवक है। बचपन से ही उसे जिज्ञासा वृत्ति उद्वेलित करती रही है। माता-पिता एवं शिक्षक उसकी रुचि पर ध्यान नहीं देते और अपने अनुकूल चलने के लिए बाध्य करते हैं। वह स्कूल में पढ़ने नहीं जाता, घर आनेवाले मास्टरों को परेशान करता है। ऐसे-ऐसे उसमें विद्रोही वृत्ति आ गयी।

शेखर की सर्वाधिक अंतरंगता, किशोरावस्था में अपनी मौसेरी बहन शशि से होती है। शशि का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध रामेश्वर से हो जाता है। शशि एवं शेखर के आत्मीय एवं अंतरंग क्षणों का सुन्दर चित्रण उपन्यास में है। शेखर के पिता में अधिकार भाव तीव्रतम रूप में था। उसकी माँ अधिक पढ़ी-लिखी नहीं थी और उदार भी नहीं थी। उसके माता-पिता की प्रकृति एकदम भिन्न थी और इसका प्रभाव शेखर के जीवन पर पड़ा। किशोरावस्था में उठनेवाले अनेक प्रश्न शेखर को बेचैन कर रहे थे।

शेखर जब इण्टर में पढ़ रहा था तब उसकी भेंट हाईस्कूल में पढ़नेवाली शारदा से हुई। वयःसंधि की इस वेला में शारदा का परिचय शेखर में एक अपूर्व सम्मोहन जगाता है। शारदा शेखर से प्यार तो करती है पर माँ के अनुशासन से डरती है। उस समय शेखर को मेट्रिक परीक्षा के लिए लाहौर जाना पड़ता है। लाहौर से दक्षिण में लौट कर वह पाता है कि शारदा के घर में ताला लगा हुआ है, मकान खाली है। वयःसंधि का ज्वर वहाँ समाप्त होता है। इन दिनों एक किताब पढ़ने से स्त्री-पुरुष संबध के बारे में उसे ज्ञान होता है। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में वह मद्रास जैसे बडे शहर में होस्टल में रहकर पढ़ रहा था। वह अकेला था। अकेलेपन की इस अवस्था में कुमार नामक एक लड़के से परिचय होता है। वह कुमार के प्रति अत्यन्त आकृष्ट था और उसके प्रति समलैंगिक आकर्षण का अनुभव करता था। इसलिए वह मैत्री टूट जाती है। इससे शेखर के मन को बहुत चोट पहूँची। इन दिनों शेखर समाज सेवा के आदर्श से आक्रांत होता है। ब्राह्मणों का होस्टल छोडकर अछूतों के होस्टल में जाता है तथा समाज परिवर्तन की अनेक योजनाएँ बनाता है। धर्म एवं संस्कृति की चर्चा करता है, अछूतों के मुहल्ले में रात्रि पाठशाला करता है। यहीं पर प्रथम भाग समाप्त होता है।

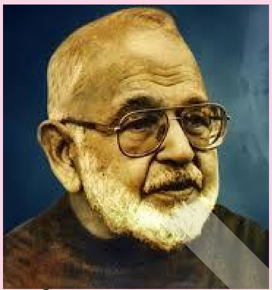

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

प्रमुख रचनाएँ

काव्य संकलन - आँगन के पार द्वार, हरी घास पर क्षण भर, अरी ओ करुणा प्रभामय, चिंता, कितनी नावों में कितनी बार, असाध्यवीणा, इत्यलम, भग्नदूत

कहानी संग्रह - परंपरा, विपथगा, जयदोल, शरणार्थी

उपन्यास - शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी

निबंध - त्रिशंकु, संस्कृतिपरक स्फुट निबंध

द्वितीय भाग का आरंभ शेखर की रेल यात्रा से होता है। मद्रास छोडकर वह लाहौर जा रहा है और वहाँ एक कॉलेज में बी.ए. में प्रवेश लेता है। वहाँ मौसी विद्यावती और उनकी बेटी शशि है। कॉलेज से अनेक अच्छे-बुरे अनुभव उन्हें मिले। अपने इन अनुभवों को लिपिबद्ध करना भी उसन यही से सीखा। लिखकर उसे पूरी तरह संतोष मिलता था। परीक्षा के बाद शशि के पिता के देहावसान का समाचार पाकर वह शशि के घर जाता है। एक गहरी संवेदना से शेखर उस घर का सदस्य बन जाता है। उन्हीं दिनों लाहौर में राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें उसन स्वयंसेवक की तरह भाग लिया। लेकिन एक सी.ऐ.डी. को पीट ने के मामले में शेखर को पकड़कर जेल में बंद किया जाता है। जेल में उसका परिचय बाबा मदनसिंह और मुहम्मद मुहासिन से हुआ, जिनके क्रान्तिकारी विचारों

से वह प्रभावित हुआ। उस समय शशि का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्‌ध रामेश्वर नामक व्यक्ति से होता है।

जेल से मुक्त होने के बाद शेखर एक कमरा किराए पर लेता है। वह फिर से लेखन कार्य शुरु करता है। उस समय उसकी माँ की मृत्यु होती है। पैसे के अभाव में वह घर न जाता है। आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण कोई भी प्रकाशक उसकी पुस्तक छपने को तैयार न था। हताश होकर वह शशि के पास गया। शशि के पति को शशि एवं शेखर के संबध पर संदेह था। फलस्वरूप पति ने शशि को घर से बाहर निकाल दिया। शशि और उसके पति को एक करने का श्रम शेखर ने किया, लेकिन विफल हुआ। शशि को उसका पति मारपीट कर घर से निकाल देता है। शशि और शेखर साथ रहने लगते हैं क्योंकि शशि एकदम व्याधिग्रस्त है। शेखर उसकी सेवा में लग जाता है। शशि के आग्रह पर शेखर पुनः लेखन कार्य में जुट जाता है। अनेक समस्याएँ दोनों के सामने हैं, उस समय आतंकवादी दल से शेखर का संपर्क होता है और वह उस संगठन का सक्रिय सदस्य हो जाता है। यहीं उसने एक क्रान्तिकारी उपन्यास लिखा और फलस्वरूप उन्हें लाहौर छोड़कर दिल्ली जाना पड़ा। वहाँ शेखर यमुना के किनारे शशि के साथ एक कमरा लेकर रहने लगा। लेकिन शशि की तबीयत गिरने लगती है और शेखर के सान्निध्य में उसकी मृत्यु हो जाती है। अंत में शेखर शशि का स्मरण लेकर लाहौर वापस जाता है।

शशि की स्मृति से शेखर ने अपनी जीवनी का आरंभ किया था और शशि की आखिरी विदा के साथ समाप्ति। उपन्यास की सारी कथा शेखर का दीर्घ प्रत्यावलोकन है। प्रतीक एवं बिंबों के सहारे उपन्यास का शिल्प पक्ष काव्यात्मक बन गया। प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग अज्ञेय ने सुन्दर ढंग से उपन्यास में किया। पात्रानुकूल संवाद एवं उचित कहावतों, मुहावरों का प्रयोग उपन्यास में यदा-कदा मिल जाता है। समग्र दृष्टि डालने पर यह कहना उचित है कि अज्ञेय कृत 'शेखर एक जीवनी' हिन्दी उपन्यास साहित्य की अमूल्य कृति है।

4.1.2 नदी के द्वीप

'नदी के द्वीप' सन् 1951 में प्रकाशित अज्ञेय का उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास को अज्ञेय ने 'चार संवेदनाओं का अध्ययन' कहा है। लेखक ने सिर्फ चार पात्रों को केन्द्र में रखा है - भुवन, चंद्रमाधव, रेखा और गौरा। उपन्यास में कुल ग्यारह प्रकरण हैं। आठ प्रकरण पात्रों के नाम पर हैं, दो प्रकरण 'अंतशल और अंतिम एक 'उपसंहार'। इन प्रकरणों के विभाजन से अज्ञेय उपन्यास को एक सार्थक रूप प्रदान करता है। प्रत्येक चरित्र के नाम पर दो प्रकरण हैं जो उस चरित्र की संवेदना अधिकाधिक प्रकट करती है। प्रकरणों का यह आयोजन समग्र कथा के संदर्भ में सुगठित है।

उपन्यास के प्रारंभ में इसके प्रमुख पात्र भुवन स्वल्प-परिचिता महिला रेखा के स्पर्श से रोमांचित स्थिति में हमारे सामने आता है। भुवन एक वैज्ञानिक है। कुछ दिन पहले वह अपने मित्र और पत्रकार चंद्रमाधव के घर लखनऊ गया था। वहाँ उसने पहली बार रेखा को देखा था। चंद्रमाधव के घर पर इन तीनों में अनेक प्रकार की चर्चाएँ होती हैं। भुवन की संवेदन-प्रवण दृष्टि से रेखा और रेखा की आलोक दीप्त बुद्धि से भुवन प्रभावित होते हैं। भुवन को चंद्रमाधव से रेखा के बारे में जानकारी मिलती है कि वह विवाहिता है लेकिन छह वर्ष से अपने पति से अलग है। रेखा भी भुवन के बारे में पूछती है और उसे पता चलती है कि वह भी अकेला है। लखनऊ से रेखा और भुवन एक ही गाड़ी से, लेकिन अलग-अलग डिब्बों में यात्रा करते हैं। रेखा को प्रतापगढ़ और भुवन को इलाहाबाद जाना था। प्रतापगढ़ स्टेशन पर रेखा के साथ भुवन भी उतरकर दोनों बातें करते हैं। चर्चा के दौरान जब गाड़ी चल पड़ती है तब कुहनी पकड़कर रेखा भुवन को गाड़ी में बैठने के लिए कहती है। गाड़ी में अपनी सीट पर जाकर बैठने के बाद भी भुवन के मन में उस 'स्पर्श' का विचार था।

रेखा और भुवन को विदा करने के बाद चंद्रमाधव अनमना-सा होकर सिनेमा देखने जाता है। रेखा को भुवन की ओर आकृष्ट देखकर चन्द्रमाधव ईर्ष्यालू

होता है। फिर भी वह भुवन को बीच में रखकर रेखा के अधिक निकट आने का प्रयत्न करता है। चंद्रमाधव की नारी-लिप्सा और भी स्पष्ट रूप में तब दीख पड़ती है जब वह भुवन की शिष्या गौरा से भी संबन्ध स्थापित करना चाहता है। वह गौरा से हमेशा पत्र-विनिमय करता रहता है, जिसमें गौरा को दिलचस्पी नहीं। भुवन और रेखा तथा चन्द्रमाधव और रेखा के बीच पत्र-विनिमय होता है। चन्द्रमाधव एक साथ रेखा और गौरा दोनों को पत्र लिखकर डबल मेन का रोल करता दिखता है। वह गौरा के पत्र में भुवन के रेखा से प्रभावित होने की बात लिखकर उनके संबन्धों में एक दरार पैदा करने की कोशिश करता है।

भुवन और रेखा को अधिक निकट होने का अवसर उनकी दिल्ली मुलाकात के समय मिलता है। इन दिनों दोनों हर रोज़ मिलते हैं और दोनों के हृदय एक हो जाते हैं। भुवन की अनुमति से रेखा उसके साथ वैज्ञानिक प्रयोग के स्थल तुलियन झील पर जाती है। वहाँ भुवन और रेखा एक दूसरे के प्रति समर्पित होते हैं। चंद्रमाधव रेखा की कश्मीर यात्रा के बारे में जानकर जल उठता है। वह रेखा से भुवन और गौरा के संबन्ध को बढ़ा-चढ़ाकर कहता है। मुलाकात के आरंभ में गौरा और रेखा एक दूसरे से उखड़ी-सी रहती हैं, लेकिन रेखा के व्यवहार से उन दोनों के बीच की दूरी मिट जाती है। एक दिन रेखा अपनी शादी की अँगूठी गौरा को पहनाने का उपक्रम करती है जिसे गौरा भविष्य में स्वीकार करेगी कहकर वापस करती है। तुलियन से लौटने के बाद रेखा कश्मीर में एक पादरी की विधवा एंजेला ग्रीव्ज़ की संगिनी के रूप में नौकरी करती है। उस समय वह गर्भवती होती है। रेखा से यह समाचार सुनकर भुवन शादी का प्रस्ताव रखता है। इन दिनों रेखा का पति हेमेन्द्र भारत आता है और उसकी भेंट चंद्रमाधव से होती है। चंद्रमाधव हेमेन्द्र की सहायता से रेखा को परेशान करने की बात सोचता है। इसके बीच रेखा आनेवाले शिशु के लिए अपने को गौरवान्वित मानकर गर्भपात करा लेती है। उसकी तबीयत खराब होती है और स्वास्थ्य लाभ के बाद वह कलकत्ता की मौसी के पास जाती है। रेखा को तलाक मिलने के बाद चंद्रमाधव उसको पत्र लिखकर उसकी सहानुभूति पाने का प्रयत्न करता है।

उन दिनों भुवन अत्यन्त मनोपीड़ा सहकर जीवन बिताते थे। उसकी दशा के बारे में जानकर गौरा उनको पत्र लिखती है, लेकिन उस समय भुवन अकेला रहना चाहता है। वह गौरा को अपने यहाँ आने की अनुमति नहीं देता। वैज्ञानिक रिसर्च के लिए वह जावा चला जाता है। भुवन का जावा जाना एक तरह से पलायन था, अपने से, रेखा से और गौरा से। उन दिनों रेखा के एक पत्र से भुवन को पता चलता है कि उसकी तबीयत फिर से खराब हुई, लेकिन अब वह स्वस्थ है। अपनी स्वस्थता का श्रेय एक डॉ. रमेशचन्द्र को है - ऐसा ही उसने खत में लिखा था। इतने में जापान में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाता है। भुवन भारत लौट आता है और गौरा के यहाँ मसूरी में ठहरता है। उस समय वह गौरा से रेखा तथा अपनी सारी बातें बताता है। भुवन की यह कथा गौरा को और भी उसके निकट लाती है। रेखा के एक पत्र से भुवन को यह जानकारी मिलती कि उसकी शादी डॉ रमेशचन्द्र से होनेवाली है। वह भुवन को भटकता हुआ जीवन छोड़कर गौरा से विवाह कर लेने का उपदेश देती है। इस बीच गौरा को रेखा की ओर से एक पार्सल मिलता है जिसमें पत्र के साथ, वह अँगूठी भी थी। अंत में मकान पाकर भुवन गौरा को पत्र लिखने बैठता है। पत्र में यह प्रस्ताव रखता है कि गौरा उसके साथ विवाह करेगी या नहीं। फिर पत्र फाड़ डालता है। अंत में अपने विचारों में मग्न भुवन को हम देख सकते हैं।

यहाँ अज्ञेय ने कुछ चरित्रों के द्वारा मानव की विभिन्न संवेदनाओं को जीवन देने का प्रयास किया है। पाठक को उन पात्रों की संवेदनाओं के निकट लाने की कोशिश की। निकट ही नहीं, उनके भीतर लेकर उन पात्रों के सुख-दुख, आशा-निराशा, हर्ष-विषाद सबकी सृष्टि के साथ तद्रूपता स्थापित करता है। इस उपन्साय के द्वारा अज्ञेय ने उपन्यास क्षेत्र में एक नवीन दृष्टि कोण की सृष्टि की।

4.1.3 अपने अपने अजनबी

अपने अपने अजनबी अज्ञेय का तीसरा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1961 में हुआ। उपन्यास की कथा तीन प्रकरणों में विभक्त किया गया है - योके और सेल्मा, सेल्मा, योके। उपन्यास के प्रमुख दो पात्र हैं - सेल्मा और योके।अन्य पात्र उतने प्रमुख नहीं है। दरअसल यह उपन्यास सेल्मा और योके की मानसिकता की विविध स्थितियों को रेखांकित करते हुए मृत्यु साक्षात्कार का चित्रण हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

एक बर्फीले प्रदेश में काठ के मकान में श्रीमती सेल्मा एकेलोफ के साथ तरुणी योके कुछ दिन के लिए रह रही है। योके काठ घर की स्थिति से आकृष्ट होकर वहाँ रहने के लिए तैयार होती है। बर्फ के पहाड़ टूट गिरने के कारण दोनों इस काठ घर में जाडों का समाप्त होने की प्रतीक्षा करती हैं। बूढी सेल्मा कैंसर से पीड़ित एक व्यक्ति है। बीमार होने के कारण वह मृत्यु को सामोद स्वीकार करने के लिए तैयार है। इसलिए सेल्मा के लिए बर्फ के नीचे दब जाना कोई नई बात नहीं है। लेकिन सैलानी योके के लिए यह नई बात थी। बंद हो जाने के दसवें दिन से योके डायरी लिखना शुरु करती है। इसमें दैनिक घटनाएँ और सेल्मा के प्रति उसकी प्रतिक्रियाओं का वर्णन है।

सेल्मा और योके दोनों अपने-अपने दृष्टि भेद की वजह से एक दूसरे से अलगाव महसूस करती है। बूढी सेल्मा के लिए मृत्यु ही जीवन का सबसे बडा सत्य है और इसलिए वह जीवन को अस्वतंत्र मानना चाहती है। लेकिन तरुणी योके जीवन में पूर्ण स्वतंत्रता और संतोष चाहनेवाली है। युवती होने के नाते जीवन जीने की एक अजीब सा ललक उसमें देख सकते हैं। इसलिए काठ घर की ज़िन्दगी उसे खलती है।

क्रिसमस के दिन सेल्मा और योके दोनों काठ घर में बिताती हैं योके के मन में सेल्मा के प्रति अनेक बातों पर घोर विरोध है। उस घर में सेल्मा और योके के अलावा एक तीसरा भी है 'मृत्यु'। सेल्मा के मन में मृत्यु के प्रति हमेशा स्वीकार का भाव है। लेकिन योके मृत्यु सत्य से डरती है। उसके मन में या विचार में कभी मृत्यु के लिए स्थान नहीं है। इसलिए योके हमेशा उस संसार सत्य से डरती है। सेल्मा अनेक भयावह अवस्थाओं से गुज़री एक व्यक्ति है। वह अपनी उस 'दूसरी - दुनिया' की कथा योके को सुनाती है जब वह स्वयं योके की तरह तरुणी थी।

उस समय सेल्मा की एक दूकान थी। दूकान तो नदी के पुल पर था। एक बार भारी बाढ़ की वजह से पुल की नींव हिल गयी और पुल के बीच का हिस्सा एवं ऊपर स्थित तीन– चार दूकानें नदी में गिरे। बाढ़ ऐसी थी कि वहाँ कोई भी सहायता नहीं पहुँचा सकता था। वहाँ से बचे लोगों में सेल्मा, यान एक लोफ और एक फोटोग्राफर थे। बाढ़ की इस कठिनाई स्थिति में सेल्मा अपनी दूकान में खाने-पीने की चीजों का दाम बढ़ा देती है। इसके बीच वह फोटोग्राफर नदी की धारा में कूदकर आत्महत्या कर लेता है। अब सिर्फ दो प्राणी ही रह जाते हैं - सेल्मा और यान। यान सामान खरीदने के लिए सेल्मा के यहाँ कभी - कभी आता है। अंत में दोनों मिलकर ज़िन्दगी का एक नया अध्याय शुरु करता है। अपने पूर्व जीवन की कहानी कहकर सेल्मा मर जाती है। योके प्रयत्न करके बर्फ में खाई बनाकर लाश को उसमें लिटा देती है। वह सेल्मा से क्षमा माँगती है। उसी समय उसका प्रेमी पॉल चिल्लाता हुआ आता दिखाई पड़ता है, जो अब योके को अजनबी लग रहा है।

शहर पर जर्मनों का अधिकार एवं आतंक चल रहा है। जर्मन सिपाहियों द्वारा वेश्या वृत्ति के लिए मज़बूर की गयी तरुणी योके को अब हम देखते हैं। अब वह पॉल की प्रमिका नहीं है, तरुणी योके नहीं है और कोई व्यक्ति है। उसका रूप, रंग सब कुछ बदल गये। जगन्नाथन नामक एक आदमी से योके की मुलाकात होती है। उस जगन्नाथन की गोद में योके अंतिम साँस लेती है।

संपूर्ण उपन्यास में मृत्यु का भय व्याप्त है। अज्ञेय ने युद्धकालीन वातावरण के परिप्रेक्ष्य में उत्पन्न लोगों के बीच की शंका, भय एवं कायरता जैसी

मनःस्थितियों का एक यथार्थ प्रतिच्छवि दिखाने का प्रयत्न 'अपने अपने अजनबी' में किया है।

4.1.4 उपन्यासों की प्रमुख विशेषताएँ

- अज्ञेय के तीन उपन्यास - शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी - आधुनिक भावबोध तथा नवीन विचारों से संपृक्त उपन्यास हैं।
- व्यक्ति जीवन और सामाजिक जीवन के प्रति अज्ञेय के विचार मौलिक हैं। व्यक्ति और समाज को एक दूसरे के पूरक के रूप में वे स्वीकार करते हैं। अज्ञेय के उपन्यासों की विशिष्टता यह है कि उनमें वैयक्तिक जीवन और सामाजिक जीवन के सरोकारों को प्रमुखता दी गयी है।
- शेखर एक जीवनी में अज्ञेय आत्महीनता को त्यागकर जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टि को अपनाकर सार्थक जीवन बिताने का उपदेश अपने पात्रों के माध्यम से देते हैं।
- मनोविज्ञान और समाजविज्ञान से जुड़े कई पक्षों से अभिज्ञ होने के कारण उपन्यासकार ने व्यक्ति और समाज की क्रिया-प्रतिक्रियाओं का यथार्थ अंकन बखूबी से शेखर एक जीवनी में किया है।
- नदी के द्वीप और अपने अपने अजनबी में जीवन के प्रति व्यक्ति की आसक्ति एवं अनासक्ति, आत्म-समर्पण की भित्ति पर उदात्त प्रेम की परिकल्पना व्यवस्था के प्रति असंतोष और व्यवस्था की अस्वीकृति के कारण खंडित व्यक्तित्व आदि में अज्ञेय की क्षमता के अनेक प्रमाण मिलते हैं।
- नदी के द्वीप में काम और प्रेम के द्वन्द्व को सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है।
- अपने अपने अजनबी में पात्रों की नवीन जीवन - दृष्टि परिलक्षित होती है। पाश्चात्य विचारों और पश्चिम की मानसिकता को लिए हुए अज्ञेय ने पात्रों की यथार्थ परिकल्पना की है।
- अपने अपने अजनबी में अज्ञेय ने अपने पात्रों के माध्यम से मृत्यु - दर्शन को दो भिन्न संदर्भों में देखने का सफल प्रयास किया है।
- अज्ञेय के उपन्यासों में समकालीन जीवन के संवेदनात्मक पक्षों को सार्थक अभिव्यक्ति मिली है।
- स्त्री-पुरुष संबन्धों को अपने उपन्यासों में कई रूपों में चित्रित किया गया है। वासनात्मक एवं अवसनात्मक दोनों दृष्टियों से इन संबन्धों का यथार्थ अंकन किया गया है। पुरुष के जीवन को पूर्णत्व देने में नारी की भूमिका को शेखर और शशि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।
- समकालीन जीवन के राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक पक्षों का यथार्थ अंकन अज्ञेय के उपन्यासों में पाया जाता है।
- गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव अज्ञेय पर है। गाँधीवादी विचारों को आत्मसात करने का संदेश शेखर एक जीवनी उपन्यास के माध्यम से देते हैं।
- अज्ञेय अपने उपन्यासों में पात्रानुकूल संवाद एवं उचित भाषा और शैली का प्रयोग करते हैं। पूर्वदीप्ति, आत्मकथात्मक, विवरणात्मक एवं भावात्मक शैलियों का प्रयोग आपके - उपन्यास की विशेषताएँ हैं। प्रतीकात्मक एवं आलंकारिक भाषा तथा उचित मुहावरों का प्रयोग अज्ञेय करते हैं। हिन्दी के अलावा उर्दू, फारसी तथा अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग उपन्यासों में पाया जाता है।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय के उपन्यास आधुनिक हिन्दी साहित्य की विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं। आधुनिक भावबोध को उपन्यास में लाने का प्रयास अज्ञेय ने किया है। वस्तुपक्ष एवं शिल्पपक्ष में नवीनता अज्ञेय के उपन्यासों की विशेषता हैं। 'शेखर एक जीवनी' में पात्र की मनःस्थिति एवं चरित्र विश्लेषण पर अज्ञेय ने ध्यान दिया। इसके लिए उन्होंने मनोवैज्ञानिक तथ्यों का सहारा लिया। 'नदी के द्वीप' उपन्यास में नदी और द्वीप के संबन्ध के बहाने समाज और व्यक्ति के संबन्ध को तलाशने की कोशिश उपन्यासकार ने किया है। नदी और द्वीप का यह प्रति रेखांकित करता है की समाज और व्यक्ति के संबन्ध नदी तथा द्वीप के संबन्ध की तरह होना चाहिए। 'अपने-अपने अजनबी' एक अस्तित्वावादी उपन्यास है। उपन्यास में दो विदेशी केन्द्रीय पात्र सेल्मा और योके के माध्यम से उपन्यासाकर ने पात्रों के अंतर्द्वन्द्व, अकेलापन, मृत्युभय आदि आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति किया है।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय ने तीन उपन्यासों की रचना की है - शेखर एक जीवनी (दो भाग), नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी
- 'शेखर एक जीवनी' प्रथम भाग का प्रकाशन सन् 1941 ई. में और द्वितीय भाग का प्रकाशन सन् 1944 ई. में हुआ
- 'शेखर एक जीवनी' के प्रथम भाग का नाम 'उत्थान' और द्वितीय भाग का नाम 'संघर्ष' है
- पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक) शैली में लिखा उपन्यास है 'शेखर एक जीवनी'
- प्रतीक एवं बिंबों का प्रयोग 'शेखर एक जीवनी' के शिल्प पक्ष को सुन्दर बनाया
- 'शेखर एक जीवनी' के प्रमुख पात्र - शेखर, शशि, शारदा
- 'नदी के द्वीप' उपन्यास का प्रकाशन सन् 1951 में हुआ
- 'नदी के द्वीप' उपन्यास को अज्ञेय ने स्वयं 'चार संवेदनाओं का अध्ययन' कहा है
- 'नदी के द्वीप' के प्रमुख पात्र - भुवन, चंद्रमाधव, रेखा, गौरा। उपन्यास में ग्यारह प्रकरण हैं
- मानव की विभिन्न संवेदनाओं का सुन्दर चित्रण 'नदी के द्वीप' में है
- 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास का प्रकाशन सन् 1961 में हुआ
- उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं सेल्मा और योके
- उपन्यास तीन प्रकरणों में विभक्त हैं
- अपने - अपने अजनबी पूर्ण रूप से अस्तित्ववादी उपन्यास है

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अज्ञेय का पूरा नाम क्या है?
2. प्रयोगवाद के जनक कौन हैं?
3. अज्ञेय को किस काव्यकृति पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?
4. 'शेखर एक जीवनी' किस शैली में लिखा गया उपन्यास है?
5. 'चार संवेदनाओं का अध्ययन' किसे कहा गया है?
6. अज्ञेय का तीसरा उपन्यास कौन-सा है?
7. 'सेल्मा' किस उपन्यास का पात्र है?
8. रेखा और भुवन किस उपन्यास के पात्र हैं?

Answers / उत्तर

1. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय
2. अज्ञेय
3. 'कितनी नावों में कितनी बार'
4. पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक) शैली
5. नदी के द्वीप

6. अपने अपने अजनबी
7. अपने अपने अजनबी
8. ‘नदी के द्वीप’

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. ‘शेखर एक जीवनी’ उपन्यास के आधार पर शेखर का चरित्र चित्रण तैयार करें।
2. वैयक्तिक संवेदना की औपन्यासिक सृष्टि है ‘नदी के द्वीप’। उपन्यास के आधार पर प्रमुख पात्र भुवन की संवेदनाओं का चित्रण कीजिए।
3. अपने-अपने अजनबी उपन्यास का सारांश लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल
2. हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश
3. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियों - शिवकुमार शर्मा
4. हिन्दी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैल रस्तोगी

इकाई 2

अज्ञेय के उपन्यास-अपने अपने अजनबी (सामान्य अध्ययन केलिए)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय के उपन्यास अपने-अपने अजनबी से परिचित होता है
- अपने अपने अजनबी उपन्यास का आशय ग्रहण करता है
- अकेलापन, मृत्युभय, जैसे मानवीय आंतरिक भावनाओं को समझता है
- असित्ववादी दर्शन से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अज्ञेय का तीसरा उपन्यास है 'अपने अपने अजनबी जो सन् 1961 ई में प्रकाशित हुआ। उपन्यास पूर्ण रूप से विदेशी पृष्ठभूमि में रचित है। दो विदेशी केन्द्रीय पात्र सेल्मा और योके के माध्यम से उपन्यासकार ने पात्रों के मानसिक अंतर्द्वन्द्व, अकेलापन एवं मृत्युभय को यहाँ चित्रित किया है। उपन्यास में सर्वत्र व्याप्त मृत्यु - गंध इसे 'मृत्यु से साक्षात्कार' का आख्यान बनाती है। 'अपने अपने अजनबी' मूलतः विचारप्रधान अस्तित्ववादी उपन्यास है। अस्तित्व के संकट से भोगे हुए पात्रों की मनः स्थितियों का यहाँ सुन्दर चित्रण किया है। साथ ही मृत्यु-भय से पीड़ित व्यक्तियों का सच्चा चेहरा भी देख सकते हैं। उपन्यास में केवल दो पात्र हैं - सेल्मा और योके। सेल्मा में मृत्यु की स्वीकृति है लेकिन योके मृत्यु के आतंक से शिथिल। इस प्रकार मृत्यु साक्षात्कार की दो विभिन्न स्थितियों का चित्रण 'अपने अपने अजनबी' का मुख्य केंद्र है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अस्तित्ववादी उपन्यास, मानसिक अंतर्द्वन्द्व, मृत्युभय, चारित्र चित्रण

Discussion / चर्चा

4.2.1 चर्चा

'अपने-अपने अजनबी' तीन प्रकरणों में विभक्त एक छोटा उपन्यास है। पात्रों के नाम ही प्रकरण का नाम रखा है - योके और सेल्मा, सेल्मा, योके। योके और सेल्मा के अलावा तीन पात्र भी हैं। वे हैं यान एक्लोफ, फोटोग्राफर, जगन्नाथन। उपन्यास में इन तीनों की भूमिका बहुत कम है।

4.2.1.1 योके और सेल्मा

प्रथम प्रकरण का नाम 'योके और सेल्मा' है। एक बर्फीले प्रदेश में काठ के मकान में सेल्मा के साथ तरुणी याके कुछ दिन के लिए रह रही है। योके वहाँ सैर करने और बर्फ पर दौड करने के लिए आयी थी और काठ - बँगले की स्थिति से आकृष्ट होकर वहाँ रहने का प्रस्ताव भी उसी ने किया था। सेल्मा गडरियों की माँ है - दो लड़के गडरिए है, एक लकडहारा हो गया

है। तीनों पहाड के नीचे गए हैं और जाड़ों के बाद ही लौटकर आयेंगे। यह तो उनका हर साल का काम है। सेल्मा इस साल नहीं गयी।

उपन्यास का आरंभ काठ-घर पर बर्फ के पहाड का टूटकर गिरने से होता है। इसलिए सेल्मा और योके काठ - घर में बंद हो जाती हैं। कम-से-कम ढाई से तीन महीने बर्फ से बंद घर में समय काटने की नौबत आ जाती है। सेल्मा के लिए यह नई बात नहीं। लेकिन तरुणी योके इस सच्चाई को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं। बंद हो जाने के दसवें दिन से योके डायरी लिखना शुरु करती है। हर दिन की घटनाएँ और सेल्मा के प्रति उसकी प्रतिक्रियाएँ सब डायरी में लिखती है। सेल्मा और योके दोनों दृष्टि-भेद की वजह से एक-दूसरे से अलगाव महसूस करती हैं, लेकिन यह भेद तरुणी योके में ही ज्यादा बना रहता है। यहाँ आने के बाद योके हमेशा मृत्युभय से पीड़ित है। इसके बारे में वह सेल्मा से भी बातें करती है। लेकिन सेल्मा कैंसर से पीड़ित होने के कारण वह मृत्यु को स्वीकार करने के लिए तैयार है। क्रिसमस के दिन दोनों काठ-घर में बिताती हैं। सबेरे योके ने नाश्ता तैयार किया। सेल्मा ने कुछ नहीं खाया। उसने थोडा पानी मिलाकर दो- चार घूँट पिये। क्रिसमस के दिन सेल्मा योके से कहती कि वह कैंसर से पीड़ित एक व्यक्ति है।

आगे आते-आते योके के मन में अनेक बातों पर घोर विरोध के भाव प्रबल होते हैं और वह महसूस करती कि इन दोनों के अलावा यहाँ एक तीसरा भी है - 'मृत्यु'। योके का मन भय से भर जाती है। साथ ही काठ- घर के जीवन की एकरसता उसे खलती है। सेल्मा के प्रति योके के मन में कोई दोस्ती या करुणा, सहानुभूति न पैदा होती हैं। सेल्मा को तकलीफ़ में देखकर योके को एक प्रकार का संतोष होता है। किन्तु सेल्मा के मन में योके का विचार है। सेल्मा यह नहीं चाहती कि बर्फ के पिघलने से पहले वह मर जायें, क्योंकि वह योके को बन्दी बनाकर रखना नहीं चाहती। एक बार योके जिज्ञासा की आत्यंतिकता में अपने हाथ सेल्मा के गरदन की ओर बढ़ा देती है, लेकिन रुक जाती है। उसे अब आसन्न मृत्यु की गंध आने लगती है। वह मृत्यु भय से तड़पती है। तब सेल्मा उससे कहती कि यह सब वह पहले एक बार अनुभव कर रही है। इस प्रकार सेल्मा अपनी दूसरी दुनिया की बात सुनाती है, उस समय वह स्वयं योके के समान तरुणी थी।

4.2.1.2 सेल्मा

द्वितीय प्रकरण का नाम सेल्मा रखा है। यहाँ सेल्मा अपनी उस तारुव्य की बात सोच रही है। उस समय सेल्मा की एक दूकान थी। दूकान शहर के पास से बहती हुई नदी के पुल पर थी। नदी में बाढ हर साल ही आती थी। हर साल की बाढ़ सड़क को छूकर धीरे-धीरे उतर जाती थी। लेकिन भूचाल के साथ आनेवाली बाढ़ में सारे पुल की नींव हिल गयी। दोनों सिरे तो टूटकर बह ही गये। इस टूटन और प्रलयंकर विनाश के बीच में खडा रह गया तीन खम्भों पर टँगा हुआ पुल के बीच का हिस्सा और उसके ऊपर की तीन-चार दूकानों और उनमें बसे हुए तीन -चार लोग। उनमें एक थी सेल्मा, एक यान एकलोफ और एक फोटोग्राफर। बाढ़ ऐसी थी कि वहाँ कोई भी सहायता नहीं पहूँच सकती थी।

ऐसी स्थिति में सेल्मा अपनी दूकान में खाने-पीने की चीज़ों का दाम बढ़ा देती है। यान वहाँ सामान खरीदने के लिए आता है और दाम के बारे में सोचकर वह आश्चर्य चकित होता है। चौथे दिन यान फिर कुछ खरीदने के लिए वहाँ आता तो सेल्मा अनुभव करती है कि उसके मन में यान के प्रति एक कठोरता का भाव उठ आया है। बाढ़ उतरने का कोई चिह्न तक नहीं। एक दिन सेल्मा देखती है कि फोटोग्राफर की दूकान जल रही है, इतना ही नहीं फोटोग्राफर अपनी दूकान से निकल कर ज़ोर से चीखकर नदी की धारा में कूदकर आत्महत्य कर लेता है। अब सिर्फ दो प्राणी रह जाते हैं - यान और सेल्मा। एक दिन रात में यान पकाया हुआ गोश्त लेकर सेल्मा के यहां आकर दरवाज़ा खटखटाता है। सेल्मा भय से लोहे की सलाख लेकर दरवाज़ा खोलती है। अपने आने का इरादा

बताते हुए वह कहता है - इसलिए साझा करना आया हूँ। अपनी अंतिम पूँजी देकर यह अंतिम भोजन मैंने खरीदा है। इसे अकेला नहीं खा सकूंगा। वह सेल्मा से आधा हिस्सा लेने के लिए कहता है। यान को दुतकारने के लिए बढ़ा हुआ अपना हाथ वह अचानक यान के कंधे पर रख देती है और स्वयं स्तंभित रह जाती है। वह यान से विवाह का प्रस्ताव करती है। यान पहले इनकार करता है और सेल्मा जाती है। फिर सेल्मा यान से उसे स्वीकार करने के लिए कहती तो वह तैयार होता है। वहीं से एक नया जीवन उपजा। एक नया अध्याय आरंभ होता है। तीन संतानों के साथ वे सुख-दुख के जीवन बिताने लगे और फिर वह दिन आया कि यान नहीं रहा।

सेल्मा की कहानी सुनते-सुनते योके के मन में सेल्मा की इन बातों के प्रति विरोध का भाव ही जागता है। अंत में सेल्मा मर जाती है और योके मृत्युगंध से आच्छन्न हो जाने का अनुभव करती है। वह उस गंध को अनेक प्रयत्नों से दूर करना चाहती है लेकिन उसे लगता है कि वह गंध उसी की देह से आ रही है। फिर वह सेल्मा के कमरे के दरवाज़े खोलकर उसकी मृत देह से कंबल उठाती है। बर्फ में खाई बनाकर लाश को उसमें लिटा दिया। फिर वह प्रार्थना करती है। सेल्मा से क्षमा माँगकर लाश को बर्फ से ढँक देती है। उसी समय उसका प्रेमी पॉल चिल्लाता हुआ आता दिखाई पड़ता है, जो अब योके को अजनबी लग रहा है।

4.2.1.3 योके

तृतीय प्रकरण का नाम 'योके' है। प्रारंभ में एक गली और वहाँ के दूकान का चित्रण है। उस गली में जर्मनों का आना-जाना नहीं था, लेकिन शहर पर उनका अधिकार होने के बाद से जो आतंक था उसकी लपट से वह गली बची नहीं थी। जगन्नाथन नाम का एक भारतीय, दूकान से कुछ लेकर जा रहा था। तब एक स्त्री ने अपने निचले होठ से चिपका हुआ सिगरेट अलग किया और जगन्नाथन के खरीदे हुए पनीर में उसे रगडकर बुझा दिया। फिर अनमने भाव से सिगरेट को पनीर में ही खोंसकर उसने जगन्नाथन की ओर देखा। वास्तव में वह स्त्री योके ही था। अब हम जिस योके को देखते हैं, वह पॉल की प्रेमिका नहीं है। जर्मनों ने उसको वेश्या बना दिया है। जगन्नाथन उसके पीछे जाता है। उसकी देह शिथिल हो जाती है। वह जगन्नाथन से माफी माँगती है और कहती है - "मैं ने स्वतंत्रता को चुन लिया... मैं चाहती थी कि मैं किसी अच्छे आदमी के पास मरूँ। क्योंकि मैं मरना नहीं चाहती थी, कभी नहीं चाहती थी।" अंत में जगन्नाथन की गोद में योके अंतिम साँस लेती है।

उपन्यास के प्रथम अध्याय में काठ-घर में दबी हुई बूढी सेल्मा और तरुणी योके के मानसिक अंतर्द्वन्द्व को अंकित किया गया है। दूसरे अध्याय में बाढ़ का तांडव नृत्य और तीसरे अध्याय में जर्मन सैनिकों का आतंक तथा योके की मृत्यु को चित्रित किया गया है। इस प्रकार संपूर्ण उपन्यास में मृत्यु भय एवं अकेलापन व्याप्त है। मृत्यु जीवन का एक सत्य है। उसकी वास्तविकता को पहचानने का उत्तम उदाहण है अज्ञेय का 'अपने अपने अजनबी'।

4.2.2 चरित्र-चित्रण

4.2.2.1 सेल्मा

अपने अपने अजनबी का एक प्रमुख पात्र है सेल्मा। उपन्यास में सेल्मा के चरित्र के दो पहलू दर्शनीय हैं - अपरिपक्व और परिपक्व अवस्था। अपनी ज़िन्दगी के प्रारंभिक दिनों में अर्थात विवाह के पहले सेल्मा को एक स्वार्थी व्यक्ति के रूप में देख सकते हैं। उस समय वह एक दूकान चलाती थी। बाढ़ के कारण संपूर्ण नाश फैल गया। इतनी भयानक स्थिति में भी सेल्मा अपनी दूकान के सामानों का दाम कम न करती। वह बडा दाम लेकर यान को सामान देती है। तब वह मानव की वर्तमान दशा के बारे में न सोचती है। यह सेल्मा के अपरिपक्व चरित्र को पाठ्कों के सम्मुख लाते हैं। उसके मन में हमेशा स्वार्थ विचार एवं कठोर भाव है।

यान से विवाह संबन्ध जोडने के बाद सेल्मा के व्यक्तित्व में परिवर्तन आ गया। दया, क्षमा, सहानुभूति एवं प्यार जैसी सद्भावनाओं का उसके मन में स्थान

मिला। सेल्मा के संपूर्ण चरित्र में बदलाव आया। इसका उत्तम उदाहरण है योके प्रति उसका व्यवहार। अपना घर बर्फ के नीचे दबने पर भी सेल्मा को भय नहीं। कैंसर से पीड़ित होने के कारण मृत्यु की पूरी जानकारी सेल्मा में है। इसलिए वह अकेली रहकर मृत्यु का स्वागत करना चाहती है। ठीक उस समय योके वहाँ आती है। उसके बाद सेल्मा के मन में यह विचार आता कि अगर अचानक उसकी मृत्यु हो तो योके क्या करेगी? यह परेशानी हमेशा सेल्मा के अन्दर है। मृत्यु के प्रति सेल्मा के मन में कोई विचार नहीं, लेकिन योके के बारे में सेल्मा सोचती है। यह सेल्मा की चारित्रिक विशिष्टता को दिखाते हैं।

सेल्मा हमेशा आस्थावान है। निर्जीव चीज़ों के प्रति भी उसके मन में दुलार या आशीष का भाव है। वह त्याग और सेवा की प्रतिमूर्ति बन गयी है। जीवन के प्रारंभ में जो अपरिपक्वता सेल्मा में नज़र आती है वह यान से संबन्ध जोड़ने के बाद मिट गयी। इस प्रकार सेल्मा में अमानवीयता से मानवीयता तक पहूँचने की एक यात्रा है, मनुष्य से देवता बनने की यात्रा है। इस प्रकार के पात्र कथा साहित्य में बहुत विरल हैं। ऐसे एक चरित्र की सृष्टि करके अज्ञेय ने अपने अपने अजनबी को श्रेष्ठ बनाया।

4.2.2.2 योके

अपने अपने अजनबी उपन्यास का दूसरा प्रमुख पात्र है योके जो जीवन संघर्ष का प्रतीक है। योके एक सैलानी तरुणी है जो जीवन के खतरों से सदा खेलती रहती है। अपनी आरंभिक ज़िन्दगी से ही वह नटखट और दुसाहसी दिखायी पड़ती है। बर्फ के पहाड़ों की चढ़ाई और देशाटन उसे सदा प्रिय है। वह अपने प्रेमी पॉल के साथ पहाड़ की सैर के लिए आयी थी। लेकिन आँधी की वजह से वह अकेली होती है और सेल्मा के काठ-घर में रहने के लिए विवश होती है। धीरे-धीरे योके को काठ-घर की जिन्दगी कैद की तरह लगने लगी। वहाँ आने के दसवें दिन से वह डायरी लिखना शुरु करती है। उसकी डायरी के माध्यम से हर दिन की घटनाओं का पता मिलता है। सेल्मा का सहवास होने पर भी वह उसके लिए अजनबी है तथा वह अपने को बिलकुल अकेली महसूस करती है। सेल्मा के प्रति उसके मन में गुस्सा, विरोध आदि भाव बढ़ता जाता है। सेल्मा बीमारी से पीड़ित व्यक्ति होते हुए भी योके के मन में दया या सहानुभूति जागती नहीं।

काठ-घर की जिन्दगी योके के मन में मृत्यु भय पैदा करती है। वह हमेशा मृत्यु के बारे में सोचती है। वह मृत्यु को जीवन की समाप्ति मानती है। मृत्यु के आगे जीवन, आत्मा, परमात्मा इन सबका कोई अर्थ नहीं। इसलिए वह हर पल मृत्यु भय से पीड़ित है। जीवन को खुले रूप से भोग करने के बदले पल-पल मृत्यु का क्षण गिनती है।

सेल्मा के साथ रहते-रहते योके मृत्यु-गंध से बेचैन हो जाती है। योके की राय में वहाँ सर्वत्र मृत्यु गंध है। उस मृत्युगंध से योके विक्षिप्त - सी हो जाती है। कुछ देर बाद उसके मन में सेल्मा के प्रति करुणा आती है और फिर वह सोचती कि "करुणा गलत है, बचाव उसमें नहीं है।" योके यहाँ सिर्फ अपने अस्तित्व के बारे में सोचती है। इसलिए उसके मन में सहानुभूति, क्षमा, करुणा, आदि सद्भावनाएँ नहीं आती हैं। अतं में सेल्मा की मृत्यु के बाद उसके मन में अकेलापन का बोध आता है और वह सेल्मा से क्षमा माँगती है। बर्फ में खाई बनाकर लाश को उसमें लिटाती है। इतने दिन सेल्मा से कोई करुणा न करनेवाली योके अंतिम क्षण में सकारात्मक मानवीय रूप धारण करती है। ज़िन्दगी के प्रति योके मन में कई स्वप्न थे। लेकिन ज़िन्दगी और काल उसके विपरीत नाच लिया। उसे अपने प्रेमी नष्ट होता है। जर्मनों ने उसे वेश्या बना दिया। जीवन के अंतिम क्षणों में जगन्नाथन नामक एक अच्छे व्यक्ति का सहारा उसे मिलती है। जगन्नाथन से माफी माँगकर वह कहती कि 'मैं ने चुना, हम अजनबी नहीं चुनते, अच्छे आदमी चुनते हैं। मैं ने आदमी चुना - अच्छा आदमी। उसमें मैं जिऊँगी। नाथन मुझे माफ कर दो।" योके इस शब्द में सब कुछ है।

योके इस उपन्यास का जीवन्त पात्र है। उपन्यास के प्रारंभ से अंत तक पाठकों की संवेदना हासिल करने में योके विजयी बनी है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

4.2.2.3 यान और फोटोग्राफर

उपन्यास में यान एकलोफ और फोटोग्राफर की भूमिका बहुत कम है। उपन्यास के दूसरे अध्याय सेल्मा में वे दोनों आते हैं। एक कस्बे में ही सेल्मा, यान और फोटोग्राफर इन तीनों के दूकान होने पर भी सेल्मा उन लोगों के साथ अजनबीपन का व्यवहार करते हैं। यहाँ तक कि आँखों के सामने फोट्रोग्राफर की मृत्यु को देखकर भी सेल्मा के हृदय में सहानुभूति की भावना न जागती। ऐसी सेल्मा के हृदय परिवर्तन लाने का कार्य यान ने किया। यान के चरित्र में इतनी विशिष्टताएँ हैं कि सेल्मा जैसी हृदयहीन युवति भी यान के व्यवहार के आगे नतमस्तक होना पड़ा। काल के प्रवाह में सेल्मा का हृदय परिवर्तन हो जाता है। सेल्मा के हृदय में सकारात्मक एवं मानवीय विचारों को जगाने का श्रेय पूर्ण रूप से यान पर निर्भर है।

4.2.2.4 जगन्नाथन

उपन्यास में जगन्नाथन की भूमिका भी बहुत छोटी है। विदेशी परिवेश में बने उपन्यास में जगन्नाथन एक भारतीय पात्र है। उपन्यास के अंतिम अध्याय 'योके' में जगन्नाथन की भूमिका है। उपन्यास में इस पात्र का अंश बहुत छोटे होते हुए भी पाठकों के मन में उसका रूप रहते हैं। योके प्रति उसका व्यवहार, दृष्टिकोण, सहानुभूति एवं प्यार के बारे में सोचकर पाठक उन्हें कभी न भूलते। अंतिम क्षण में योके स्वयं बताते कि उसनें एक अच्छे आदमी को चुना। योके इन शब्दों से जगन्नाथन का महत्व लोग समझते है।

4.2.2.5 अपने अपने अजनबी में 'अस्तित्ववाद'

अज्ञेय के उपन्यासों में अस्तित्ववादी दर्शन स्पष्ट प्रकट हुए हैं। 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास भी अस्तित्ववादी दर्शन से परिपूर्ण है। विषय और वस्तु दोनों दृष्टियों से प्रस्तुत उपन्यास मृत्यु से साक्षात्कार का आख्यान है जो अस्तित्ववाद का एक प्रमुख घटक है। मृत्यु के विचार के साथ ईश्वर का विचार, वरण की स्वतंत्रता का विचार, अस्तित्व का विचार एवं विजनता और अकेलेपन का विचार भी उपन्यास में हैं जो अस्तित्ववादी दर्शन पर आधारित है।

'अजनबी' के साथ उपन्यास में एक दूसरे शब्द का भी प्रयोग है - 'पहचान'। सेल्मा योके से कहती है - 'अभी तो हम-तुम भी अजनबी से हैं, पहले हम लोग तो पूरी पहचान कर लें। उपन्यास का यह निरुप्यमान विषय है कि मृत्यु की उपस्थिति में परिचित कब अजनबी हो जाते हैं और अजनबी कब परिचित।

सेल्मा ने परिस्थिति का जैसे स्वीकार कर लिया है, लेकिन योके में एक तीखी प्रतिक्रिया जन्म लेती है। उसे लगता है वे कब्र-धर में है और अब उनका मरना ही बाकी है। काठ-घर को वह कब्र-धर की संज्ञा देती है। यहाँ की एकान्तता से बचने के लिए योके डायरी लिखती है। कभी-कभी सेल्मा के चेहरे पर लोकोत्तर भाव देखकर योके बेचैन हो उठती है, उतना ही नहीं कुछ तोड़-फोड़ करने का उसका मन हो उठता है। उसके माध्यम से अज्ञेय ने अस्तित्ववादी जीवन-बोध का परिचय कराना चाहते हैं। योके का यह विरोध भाव सेल्मा समझ लेती है। सेल्मा अपने काठ-घर में अकेले रहना चाहती थी लेकिन जब योके आ गयी है, तब इस बात को वह स्वीकार कर लेती है। सेल्मा की राय में कुछ भी किसी के बस की बात नहीं है।

अस्तित्ववादी चिन्तन में मृत्यु को अधिक महत्व दिया गया है। 'अपने अपने अजनबी' में मृत्यु की इस उपस्थिति का योके पर जो प्रभाव होता है, वह एक तरह से अस्तित्ववादी दृष्टि का परिचायक है। सेल्मा तो मृत्यु का स्वागत करने के लिए तैयार है। मृत्यु की उपस्थिति का बोध योके लिए सारी परिस्थिति को 'बेठीक' करती है। मृत्यु का भय योके में एक जिज्ञासा का भाव जगाता है। वह अपनी मृत्यु के साथ सेल्मा की मौत की कल्पना करता है। सेल्मा हमेशा आस्थावान है। निर्जीव जीवों के प्रति उसके मन में प्यार और सहानुभूति है। संशयी योके के मन में इस कारण से विरोध-भाव तीव्र होता है, जो जिज्ञासा तक पहूँचकर अंत में आत्महत्या तक पहूँचता है।

सेल्मा और योके में चिंतन की टकराहट है। योके निरीश्वरवादी है, सेल्मा ईश्वर में विश्वास करती है। उपन्यास में जो घटनाकाल दिया है, वह क्रिस्मस का

है। सहज रूप से ईश्वर की चर्चा आ जाती है। काठ-घर में लाल प्रकाश देखकर योके को लगता है कि शैतान अभी चिमनी के भीतर से उतरकर इस कब्र में आ जाएगा। तब सेल्मा कहती कि चिमनी से शैतान नहीं, संत निकोलस आता है। आगे वह कहती कि मौत ही तो ईश्वर का एक मात्र पहचाना जा सकनेवाला रूप है। योके के लिए सेल्मा का यह तर्क असह्य है। उसे लगता है कि यदि ईश्वर मृत्यु का ही दूसरा नाम है तो उसे नहीं मान सकती, क्योंकि वह मृत्यु को नहीं मानती।

सेल्मा में जो आस्था का, ईश्वर का, मृत्यु का स्वीकार देखते हैं, वह उसकी परिवर्तित जीवन-दृष्टि का परिचायक है। बुढ़िया सेल्मा जब तरुणी थी और पुल पर रहती थी, तब उसका भी जीवन-व्यवहार एक तरह से अस्तित्वबोध से आक्रांत था। टूटे पुल पर फोटोग्राफर मरता है, तब भी वह अपने बारे में सोचती है। यान को खाने के लिए देते समय वह कीमत के बारे में सोचती है। यान उसकी ओर आता है तो वह आत्मरक्षा के लिए लोहे की छड़ लेती है। लेकिन मृत्यु की आसन्न उपस्थिति के बोध ने उसकी दृष्टि में परिवर्तन ला दिया। उसी प्रकार ज़िन्दगी के अंतिम क्षणों में योके में भी परिवर्तन आता है। योके और सेल्मा विभिन्न ध्रुवों में चलनेवाली स्त्रियों के होते हुए भी अंतिम क्षण में दोनों मृत्यु का सामोद स्वीकार करती है। योके की राय में एक अच्छे आदमी के सामीप्य में उसकी मृत्यु होती है। अपने जीवन को धन्य मानकर वह मृत्यु का स्वागत करती है।

'अपने अपने अजनबी' उपन्यास द्वारा यह साबित किया कि उपन्यास पूर्ण रूप से अस्तित्ववादी दर्शनों पर आधारित है। साथ ही अज्ञेय ने अपने में निहित अस्तित्ववाद को उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है, इसमें शंका नहीं।

4.2.2.6 उपन्यास की भाषा

अज्ञेय के अन्य दो उपन्यास (शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप) की तुलना में 'अपने अपने अजनबी' की भाषा उतना सरल नहीं। साथ ही भाषा में क्लिष्टता भी आ गयी है। इसका प्रधान कारण यह है कि लेखक अस्तित्ववादी प्रतिमानों का अत्यधिक उपयोग करते हैं। ध्यान देने की अलग बात यह है कि उपन्यास का सारा पात्र और परिवेश विदेशी हैं। अतः हिन्दी होते हुए भी उसका लहजा विदेशी लगता है। सेल्मा और योके के संवादों में इस प्रकार की शैली देख सकते हैं।

अधिकांश आलोचकों ने 'अपने अपने अजनबी' की भाषा की तुलना अज्ञेय के पूर्व दो उपन्यासों से किया है। उन उपन्यासों की भाषा में जो सरलता, सहजता और काव्यात्मकता थी, वह यहाँ दर्शनीय नहीं। साथ ही कुछ शब्दों के अर्थ पूर्ण रूप से समझने में क्लिष्टता भी आती है। इसलिए कुछ विद्वानों ने इसकी भाषा को विकृत या कृत्रिम आदि विशेषणों से अभिहित किया। संपूर्ण रूप से यह कहना उचित होगा कि कथ्य पक्ष एवं शिल्प पक्ष में अज्ञेय ने नवीनता लाने का प्रयास किया है, उसमें वे विजयी बने।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय कृत 'अपने अपने अजनबी' मूलतः एक विचारप्रधान अस्तित्ववादी उपन्यास है। अस्तित्व के संकट से भोगे हुए पात्रों की मनःस्थितियों का यहाँ सुन्दर चित्रण किया है। युद्धकालीन वातावरण के परिप्रेक्ष्य में उत्पन्न लोगों के बीच की शंका, तनाव, मृत्यु भय, आतंक आदि मनःस्थितियों का जैसा का तैसा चित्रण इस उपन्यास में है। साथ ही प्राकृतिक वातावरण में होनेवाला परिवर्तन आम आदमी की ज़िदगी को किस प्रकार झकझोर डालते हैं? - इसका ज्वलंत उदाहरण है 'अपने अपने अजनबी'। प्रकृति में ही मनुष्य के प्राण अंतर्निहित है। उसके आगे मनुष्य कितने विवश, लाचार होती है उसका यथार्थ चित्रण है 'अपने अपने अजनबी'। पहले अध्याय में बर्फ गिरने से होनेवाली भीति है तो दूसरे अध्याय में बाढ़ एवं भूकंप के फलस्वरूप उत्पन्न मृत्यु भय है। पूर्ण रूप से उपन्यास में मृत्यु भय एवं मृत्यु साक्षात्कार का ज्वलंत चित्रण है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Recap / पुनरावृत्ति

- ‘अपने अपने अजनबी’ अज्ञेय का तीसरा उपन्यास है जिसका प्रकाशन सन् 1961 में हुआ
- विदेशी पृष्ठभूमि में रचित उपन्यास के मुख्य पात्र सेल्मा और योके हैं
- मानसिक अंतर्द्वन्द्व, अकेलापन, मृत्युभय आदि उपन्यास में सर्वत्र व्याप्त हैं
- उपन्यास में कुल मिलाकर तीन प्रकरण हैं - योके और सेल्मा, सेल्मा, योके
- मृत्यु का विचार या मृत्यु बोध कैसे ज़िन्दगी को परेशान करता है - इसका उत्तम उदाहरण है ‘अपने अपने अजनबी’
- उपन्यास के पात्र सेल्मा और योके विभिन्न विचारधारा को आत्मसात करनेवाली दो स्त्रियाँ हैं। सेल्मा मृत्यु को स्वीकार करके सामोद जीवन बितानेवाली है तो योके हमेशा मृत्युभय से पीड़ित जिन्दगी बितानेवाली है
- भारतीय एवं पाश्चात्य अस्तित्ववादी दर्शन उपन्यास में है
- उपन्यास में विदेशी वातावरण देने के कारण पात्रों का नामकरण भी उसके अनुकूल थे
- अज्ञेय के अन्य दो उपन्यासों (शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप) की तुलना में इस उपन्यास की भाषा उतनी सरल नहीं। भाषा में प्रतीकात्मकता का प्रयोग है
- कथ्यपक्ष एवं शिल्पपक्ष की दृष्टि से उपन्यास के सभी तत्वों का पालन इस उपन्यास में भी किया है

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ‘अपने अपने अजनबी’ उपन्यास कितने प्रकरणों में विभक्त किया है?
2. योके किस उपन्यास का पात्र है?
3. ‘अपने अपने अजनबी’ की मूल समस्या क्या था?
4. अज्ञेय की विदेशी पृष्ठभूमि में रचित उपन्यास कौन -सा है?
5. यान एकलोफ किस उपन्यास का पात्र है?
6. ‘अपने अपने अजनबी’ उपन्यास में कौन -सा दर्शन से परिपूर्ण है?
7. सेल्मा के व्यक्तित्व में कब परिवर्तन आ गया?
8. फोटोग्राफर किस कहानी का पात्र है?

Answers / उत्तर

1. तीन प्रकरणों में
2. अपने अपने अजनबी
3. मानसिक अंतर्द्वन्द्व, अकेलापन एवं मृत्युभय
4. अपने-अपने अजनबी
5. अपने-अपने अजनबी
6. अस्तित्ववादी दर्शन
7. यान से विवाह संबन्ध जोडने के बाद
8. अपने-अपने अजनबी

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. उपन्यास के तत्वों के आधार पर 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।
2. 'अपने अपने अजनबी' - शीर्षक की सार्थकता

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अपने अपने अजनबी - अज्ञेय
2. अज्ञेय एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल
3. हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश
4. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियों - शिवकुमार शर्मा
5. हिन्दी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैल रस्तोगी

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 05

गद्यकार

अज्ञेय

SGOU

इकाई 1

निबंधकार अज्ञेय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय के निबंध साहित्य के बारे में सामान्य परिचय प्राप्त होता है
- निबंध साहित्य के लिए प्रयुक्त विषयों के बारे में परिचय प्राप्त होता है
- अज्ञेय जी की लेखन प्रक्रिया से परिचय प्राप्त होता है
- अज्ञेय के जीवन के अनेक पहलुओं का परिचय प्राप्त होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अज्ञेय जी के निबंधकार रूप की बारीकियाँ प्रस्तुत हैं। उनकी रचना प्रक्रिया के आरंभकाल से लेकर क्रमानुसार आए परिवर्तनों, वरीयताओं के बारे में बताया गया है। उनके निबंध के केन्द्र में उनकी ही आकांक्षाएँ एवं चिंतन निहित हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अज्ञेय के लेख त्रिशंकु का सामान्य विवरण, सबरंग और कुछ राग, आत्मनेपद, हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, आलबाल, लिखि कागद कोरे।

Discussion / चर्चा

अज्ञेय अन्य निबंधकारों से बहुत भिन्न थे। उनकी अन्य साहित्य विधाओं की अपेक्षा निबंधकार का रूप बहुत कम ही आँका गया है। उन्होंने साहित्य, भाषा, जीवन-मूल्य, इतिहासबोध, परंपरा, आधुनिकता, समाज, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, भारतीयता आदि अनेक विषयों पर विचार किया है। अतः कहा जा सकता है कि "निबंध" उनकी मानसिकता और चिंतन के विभिन्न आयामों का प्रामाणिक दस्तावेज़ है। उनके द्वारा रचित मुख्य निबंध संग्रह हैं;

1. त्रिशंकु (1942)
2. सबरंग और कुछ राग (1956)
3. आत्मनेपद (1960ई)
4. हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य (1967)
5. आलबाल (1971)
6. लिखि कागद कोरे (1972)

5.1.1. अज्ञेय जी के प्रमुख निबंध संग्रह

5.1.1.1 त्रिशंकु

त्रिशंकु अब एक ऐतिहासिक दस्तावेज हो गया है। इसके लेखों में अज्ञेय की साहित्य संबंधी जो धारणाएँ बनी हैं वही बताने का प्रयत्न किया गया है। इसमें आठ निबंध सम्मिलित हैं। प्रथम 'संस्कृति और परिस्थिति है। 'कला का स्वभाव' और उद्देश्य में कला की परिभाषा करते हुए अज्ञेय कहते हैं कि

'कला सामाजिक अनुपयोगिता की अनुभूति के विरुद्ध अपने को प्रमाणित करने का प्रयत्न है। 'रूढ़ि और मौलिकता' में अज्ञेय का मत है कि रूढ़ि अथवा परंपरा की रूढ़िग्रस्त परिभाषा को हमें उदार बनाना होगा। रूढ़ि की साधना के लिए बीते हुए और वर्तमान का ज्ञान आवश्यक है। 'पुराण और संस्कृति' में वे किसी भी देश के जीवन के गहनतम रहस्य तक पहुँचने के लिए पुराण साहित्य की ही सबसे अच्छी कुंजी मानते हैं। 'परिस्थिति और साहित्यकार' निबंध में अज्ञेय का आग्रह है कि आज के अधिकांश हिन्दी साहित्य अतृप्ति का, या कह लीजिये लालसा का, इच्छा का, विश्वास का साहित्य है। 'चेतना का संस्कार' में अज्ञेय मानते हैं कि चेतना का विकास मूलतः संस्कृति का विकास है। 'केशव की कविताई' निबंध वार्तालाप शैली में लिखा गया है। 'चार नाटक', 'आधुनिक कवि - महादेवी वर्मा', 'वागर्थ प्रतिपत्तये' आदि निबंध इसमें सम्मिलित हैं।

5.1.2. सबरंग और कुछ राग (सन् 1956 में)

इसमें 'राष्ट्र के प्रतीक' पहला निबंध है। इसमें बड़े रोचक ढंग से गेंदे को राष्ट्र का प्रतीक बनाये जाने की बात कही है। 'मार्गदर्शन' निबंध अज्ञेय की यायावरी का परिणाम है। मार्ग निर्देशन के तरीकों से उस प्रदेश की संस्कृति का पता चलता है। 'दिल्ली देखा कि आगरा' में अज्ञेय ने शाहदश और दिल्ली के बीच रेलगाडी में किस तरह समय कटता है, उसका बड़ा रोचक वर्णन किया है। 'पहला रिपोर्टर' निबंध में प्रश्न उठाया गया कि पहला रिपोर्टर कौन हुआ होगा। सनसनीदार खबरों से पहले आदमी को किस प्रकार कौतूहल-उत्कण्ठा जागी होगी। यम से मिलकर आनेवाला नचिकेता जैसा भाग्यवान और कौन रिपोट 'र होगा। संजय महाभारत युद्ध के रिपोर्टर थे। हौवा पहली रिपोर्टर थी। 'अकेलापन' निबंध में अज्ञेय ने अकेलेपन की बडी महिमा गयी है। अज्ञेय को अकेले रहने की आदत बचपन से थी। अज्ञेय कहते हैं कि 'अकेलेपन से तभी डर लगता है जब भीड में घिर जाता हूँ। 'अकेले में लोग जाने क्या क्या सोचते हैं। 'पनीर का टुकड़ा' एक व्याल की स्मृति पर आधारित निबंध है। 'गाँव का पोखर' प्रकारान्तर से अज्ञेय का ही अनुभूत सत्य है। गाँव के पोखर में झांकने वाला वह पगला अपना चेहरा और जलजन्तु सभी के एकत्व को देखता था। नखरे में गर्म मसाला, सेवा पुराण आदि निबंध इस संग्रह में संकलित है।

5.1.3.आत्मनेपद (1960)

'आत्मनेपद' में काव्य, आख्यान, आलोचना, स्थिति और मन से संबंधित कुल 28 निबंध हैं। अज्ञेय के काव्य के संदर्भ में पहला निबंध 'मेरी पहली कविता' है। 'प्रकृति - अहं का मिलन' निबंध अज्ञेय की 'हरी घास पर क्षण भर' को आधार बनाकर 1949-51 में जो तीन प्रसारण आकाशवाणी इलाहाबाद से किये थे, उनकी वस्तु का संकलन है। 'प्रयोग और प्रेषणीयता' निबंध में अज्ञेय ने लिखा है कि जो व्यक्ति का अनुभूत है, उसे समष्टि तक कैसे उसकी संपूर्णता में पहुँचाया जाय- यह पहली समस्या है जो प्रयोगशीलता को ललकारती है। अज्ञेय स्वान्त सुखाय नहीं लिखते। भाषा को वे बोधगम्यता के आधार पर ही महत्व देते हैं।

'प्रतीकों का महत्व', निबंध की सामग्री पटना और इलाहाबाद आकाशवाणी के वार्ता से ली गई हैं। अज्ञेय की धारणा है कि प्रतीक जन-मानस को प्रतिध्वनित करें। 'स्थिर हो गयी पत्नी' निबंध में उन्होंने अपने काव्य शिक्षण में अपने काव्य गुरु एक गौरैया की चर्चा की है। संदर्भ आख्यान के अंतर्गत पहला निबंध शेखर से साक्षात्कार है। अज्ञेय अपनी ही कृतियों के विषय में स्वयं चर्चा करना अप्रीतिकर मानते हैं। श्लील और अश्लील, संदर्भ आलोचना, पत्र साहित्य और पुस्तक साहित्य, लेखक और प्रकाशक, जीवन का रस, कठघरे से, संदर्भ मन एकान्त साक्षात्कार आदि निबंध इसमें सम्मिलित हैं।

5.1.4. हिन्दी साहित्य - एक आधुनिक परिदृश्य

इसमें साहित्य की विभिन्न विधाओं पर 18 समीक्षात्मक निबंध हैं। प्रथम निबंध 'सौंदर्य बोध और

- शिवत्व बोध' है। इसमें अज्ञेय ने समालोचना के लिए मूल्यों के प्रतिमानों की आवश्यकता पर बल दिया है। सौंदर्य के तत्व बुद्धि पर आधारित है। बुद्धि अनुभव के सहारे चलती है। 'साहित्य बोध-आधुनिकता के तत्व' में अज्ञेय ने यथार्थ आधुनिक संवेदना को लेकर लेखक, पाठक और आलोचक की समस्याओं को उठाया है। 'साहित्यिक प्रवृत्तियों की सामाजिक पृष्ठभूमि' में अज्ञेय ने समकालीन साहित्य की जागृति, जड़ता शक्ति और क्लैव्य, प्रेरणा और शिथिलता, उदारता और संकीर्णता की चर्चा की है।

'खड़ी कविता : पृष्ठभूमि' में अज्ञेय ने एक मौलिक और युक्ति संगत तर्क दिया है कि खड़ीबोली का उत्थान साहित्य में लौकिकता की प्रतिष्ठा और स्वीकृति का पर्याय था। ब्रजभाषा की रीतिवादी और सामन्तवादी प्रियता को नकारकर खड़ीबोली ने लौकिकता को ग्रहण किया। 'आधुनिक उपन्यास की पृष्ठभूमि' में अज्ञेय ने विक्टोरियन उपन्यास के तीन चरणों में डिकेन्स और थैकरे, ट्रालप एलिएट और मेरेडिथ, टामस हार्डी और ग्रिसिंग के उपन्यासों की मूल संवेदनाओं की चर्चा की है। 'प्रेमचन्द और परवर्ती उपन्यास' में प्रेमचन्द के बाद आख्यान साहित्य में शिल्प के महत्व के बढ़ने की बात कही गई है। 'कहानी पृष्ठभूमि में' कहानी की परंपरा-विकास के साथ आधुनिक कहानी के एडगर अलन पो से विकसित होकर अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस में उसकी विकास यात्रा का चित्र हैं। 'हिन्दी एकांकी : पृष्ठभूमि' में संस्कृत नाटकों के जन्म-विकास-प्रकार और अंग्रेज़ी के नाट्य साहित्य की चर्चा के साथ भारतेंदु से अद्यतन एकांकी के विकास का संक्षिप्त परिचय है। "भारतीय साहित्य परंपरा : संघर्ष का उपयोग" में कलाकार के लक्ष्य, कला के उद्देश्य और कवि तथा समाज के संबंध में चर्चा की गई है। रचना और प्रक्रिया, नयी कविता आदि निबंध इसमें संग्रहीत हैं।

5.1.5 आलबाल (1971)

अज्ञेय के समय समय पर दिये गए भाषणों, वक्तव्यों, भेंटवार्ताओं या प्रश्नोत्तरों के मसविदों के रूप में इन निबंधों का संकलन 'आलबाल' के नाम से प्रकाशित हुआ। इसमें अज्ञेय के 13 निबंध संकलित हैं।

'शब्द, मौन, अस्तित्व' पहला निबंध है। इसमें कवि ने इस बात का उत्तर दिया है कि 'मैं क्यों लिखता हूँ' 'लेखक और परिवेश' निबंध माधव महाविद्यालय, उज्जैन में दिये गए वक्तव्य का लिखित रूप है। 'लेखक की स्थिति' निबंध दिल्ली के रोटरी क्लब के सम्मुख दिए भाषण का लिखित रूप है। 'साहित्य की भारतीय कसौटी' में अज्ञेय ने प्रादेशिक, संस्थागत, प्रादेशिक अकादमियों, राज्यों की सरकारों और केन्द्र की साहित्य और शिक्षा संस्थाओं की संकुचित दृष्टि से सोचना छोडकर राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय साहित्य को पुरस्कृत करने की बात कही है। 'भारतीय संस्कृति और विश्व संस्कृति', उपन्यास की भारतीय विधा, समकालीन कविता का संकट, नयी कविता के गीतः एक प्रश्नोत्तर, कविता के श्रव्य से पाठ्य तक, विज्ञान और हम, मानव : प्रतीक स्रष्टा आदि निबंध इसमें सम्मिलित हैं।

5.1.6 लिखि कागद कोरे (1972)

अज्ञेय के 'लिखि कागद कोरे' निबंध संग्रह में 13 निबंध हैं। 'सपने मैंने भी देखे हैं' पहला निबंध है। यह 'बचपन के सपने' शीर्षक से बच्चों के कार्यक्रम में रेडियो से प्रसारित एक वार्ता का कुछ परिवर्तित रूप है। 'ऋण स्वीकारी हूँ' निबंध में अज्ञेय ने अपनी प्रारंभिक-शिक्षा पहले संस्कृत से और अपने पिता के प्रभाव से मानी है। 'अज्ञेय : अपनी निगाह में' अज्ञेय ने स्वयं अपने और केवल लिखते समय के अज्ञेय की बात की है। होआ प्रकरण और में व्यक्ति कैसी स्त्री चाहता है - अपने लिए एक किस्म है और 'दूसरे की स्त्री' यह अलग किस्म है। कुट्टिजात विनोदेन -1, कुट्टिजात विनोदेन-2 में अज्ञेय ने अपने ऊपर लगाए इस आक्षेप का कि- 'अज्ञेय आपको हिन्दी जगत तक अजूबा क्यों मानता है'- उत्तर दिया है। 'लेखक के चारों ओर में' 'श्री रघुवीर सहाय द्वारा प्रस्तुत कुछ प्रश्नों के उत्तर हैं। इसके अलावा परंपरा, प्रभाव, प्रक्रिया, आधुनिक काव्य बोध, अच्छी-नयी

कविता और भाषा की संकरता, ज्ञान-विज्ञान और सृजन प्रक्रिया. व्याख्या की मांग, शिल्प और लय, हिंदांग्लीयन, स्वाधीन भारत का लेखक आदि निबंध संकलित किया गया है।

5.1.7 अज्ञेय जी के अन्य प्रमुख निबंध संग्रह

1. अद्यतन (1977)
2. जोग लिखी (1977)
3. स्रोत और सेतु (1978 ई)
4. युगसंधियों पर (1982 ई)
5. धार और किनारे (1982 ई)
6. कहाँ है द्वारका (1982 ई)
7. छाया का जंगल (1984 ई)
8. स्मृति छंदा (1989 ई) आदि।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय जी के निबंधों की संख्या अनेक हैं। हर विषय पर आपने कलम चलायी है। तारसप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक आदि की भूमिकाएँ निबंध की कोटि में आ सकती हैं। अन्य अनेक निबंध आपने भवंती, अंतरा आदि अंतः प्रक्रिया ग्रंथों में सम्मिलित किया है।

ईश्वर, धर्म, वाद, कला, संविधान, समाज, व्यक्ति, सन्नाटा, आज़ादी, आस्था, भक्ति, सुख दुःख, काव्य का आस्वाद, संप्रेषण आदि अनेक विषय पर आपने जो लिखा है वह ऐतिहासिक बन चुका है। अपने विचारों को संक्षेप में कहने की कला आपकी निबंध रचना की विशेषता है। अर्थात् कुल कहा जा सकता है कि 'निबंध' उनकी मानसिकता के प्रामाणिक दस्तावेज़ हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय के प्रमुख निबंध
- 'त्रिशंकु' में सम्मिलित निबंधों का सामान्य परिचय
- सबरंग और कुछ राग में सम्मिलित निबंधों का सामान्य परिचय
- आत्मनेपद में सम्मिलित निबंधों का सामान्य परिचय
- हिन्दी साहित्य : एक सामान्य परिचय में सम्मिलित निबंधों का अध्ययन
- 'आलबाल' में संग्रहीत निबंधों का अध्ययन
- लिखि कागद कोरे में संकलित निबंधों का परिचय
- अज्ञेय के अन्य निबंध

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अज्ञेय का प्रथम निबंध संकलन कौन-सा है?
2. 'चेतना का संस्कार' किस निबंध में संकलित है?
3. 'भवंती' की विधा अज्ञेय के अनुसार क्या है?
4. 'श्रृणी स्वीकारी हूँ' निबंध किस संकलन में संकलित है?
5. आत्मनेपद का प्रकाशन वर्ष क्या है?
6. 'अकेलापन' निबंध किस संकलन में संकलित है?
7. 'अद्यतन' निबंध संकलन का प्रकाशन वर्ष क्या है?

8. ‘प्रयोग और प्रेषणीयता’ किस निबंध संकलन में संकलित है?
9. ‘शब्द, मौन और अस्तित्व’ किस निबंध संकलन में संकलित है?
10. ‘सपने मैंने भी देखे हैं’ निबंध किस संकलन में संकलित है?

Answers / उत्तर

1. त्रिशंकु
2. त्रिशंकु
3. अंतः प्रक्रिया
4. लिखि कागद कोरे
5. 1960
6. सबरंग और कुछ राग
7. 1977
8. आत्मनेपद
9. आलबाल
10. लिखि कागद कोरे

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अज्ञेय के मुख्य निबंधों का अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।
2. ‘त्रिशंकु’ निबंध संग्रह पर अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. ‘सबरंग और कुछ राग’ का प्रतिपाद्य क्या है?
4. ‘आत्मनेपद’ पर अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. ‘आलबाल’ निबंध की विशेषताएँ क्या हैं?
6. ‘लिखी कागद कोरे’ निबंध संग्रह पर प्रकाश डालिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल
2. हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश
3. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियों - शिवकुमार शर्मा
4. हिन्दी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैल रस्तोगी

इकाई 2

अज्ञेय की अन्य रचनाओं का परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय की नाट्यकृतियों का परिचय प्राप्त होता है
- अज्ञेय द्वारा रचित यात्रा निबंधों की जानकारी प्राप्त होती है
- अज्ञेय की अंतः प्रक्रियाओं का परिचय प्राप्त होता है
- अज्ञेय के साक्षात्कार का परिचय प्राप्त होता है
- अज्ञेय के संस्मरण की जानकारी प्राप्त होती है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अज्ञेय की अन्य गद्य विधाओं में नाटक, यात्रा निबंध, अंतः प्रक्रियाएँ, संस्मरण, साक्षात्कार आदि पर अध्ययन प्रस्तुत है। अपनी गद्य रचनाओं के माध्यम से अपने समय को प्रस्तुत करने में अज्ञेय सिद्धहस्त थे। अज्ञेय की जीवन दृष्टि और मानववादी निष्ठा का प्रतिफलन आपकी रचनाओं की विशेषता है। अज्ञेय की 'गद्यशैली' समझने में ऐसी फुटकर गद्यरचनाएँ सहायक हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अज्ञेय जी की नाट्य रचनाएँ, अज्ञेय का यात्रावृत्तांत, अज्ञेय की अंतःप्रक्रियाएँ, अज्ञेय का साक्षात्कार, अज्ञेय के संस्मरण

Discussion / चर्चा

अज्ञेय जी के निबंधों के अलावा गद्य विधा में मुख्य रूप से नाटक, यात्रा वृत्तांत, आत्मकथ्य, अतः प्रक्रियाएँ, भेंटवार्ताएँ आदि आते हैं। अज्ञेय की सबसे बडी विशेषता लेखन के प्रति उनकी निष्ठा है। गद्यरचनाओं में उनकी भाषा प्रतीकात्मक और अलौकिक रही। गद्य के प्रति उनके दर्शन व्यवहारवादी है। चुनिंदे लेखों का संग्रह 'कवि निकष' नाम से प्रकाशित है। अज्ञेय प्रेम से आत्मविश्लेषण और रहस्य तक की यात्रा में निःसंग चले हैं। विभिन्न काल में उनका प्रयोग तत्कालीन परिवेशानुसार रहा। अनुभूति में लीन होते हुए भी वे क्षणवाद के दर्शन के प्रवक्ता हो गये। अज्ञेय का संपूर्ण साहित्य हिन्दी वाङ्मय के लिए एक धरोहर है। उनके प्रमुख अन्य गद्य साहित्य निम्नवत है।

5.2.1 अज्ञेय का नाटक - उत्तर प्रियदर्शी

अज्ञेय की रुचि नाटकों में उतनी अधिक नहीं रही जितनी काव्य या कथा साहित्य में थी। उन्होंने केवल एक ही नाट्यरचना की- 'उत्तर प्रियदर्शी'। यह एक

गीति नाट्य है। 'उत्तर प्रियदर्शी' की भूमिका स्वरूप अज्ञेय ने प्रेरणा में इस गीतिनाट्य का लक्ष्य खोल दिया है। अशोक सम्राट ने वैराग्य के साथ ही बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली, परंतु क्यों। इसी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन 'उत्तर प्रियदर्शी' का लक्ष्य है।

प्रारंभ में चीनी यात्री फाह्यान (भारतयात्रा, मगध यात्रा, 405 ई.) द्वारा लिखा गया ऐतिहासिक ग्रन्थ में अशोक के नरक का वर्णन दिया है और इस नरक के पीछे अशोक के पूर्व जीवन की कथा है जो इस प्रकार है अपने पूर्व जन्म में अशोक ने, जब वह शिशु था, भिक्षाटन करते हुए बुद्ध को एक मुट्ठी धूल उठाकर दे दी जिसे बुद्ध ने ले लिया और फिर नीचे डाल दी। एक बार जंबू द्वीप का भ्रमण करते हुए उसने प्रेतों के राजा यम का नरक देखा और उसका अहं जागा। उसने भी परम दुष्ट व्यक्ति की खोज की और उसे राजा द्वारा बनाये नरक के राजा बना दिया कुछ दिन बाद एक भिक्षु भिक्षा मांगता हुआ उधर से निकला और द्वार के भीतर चला गया। इस योगी को यंत्रणा देने की कोशिश की गयी उसे खौलते कडाह में फेंक दिया। लेकिन भिक्षु के चेहरे पर अखंड संतोष का भाव था। आग बुझ गयी और उसके बीचों बीच एक कमल खिल गया और भिक्षु पद्मासनासीन था। नरक के गण इस चमत्कार को देखने के लिए सम्राट अशोक को बुला लाये। अशोक अपनी प्रतिश्रुति के कारण हिचका परंतु वहाँ भिक्षु के धर्मोपदेश से उन्हें मुक्ति मिली। उसने नरक तुडवा दिया और अपने पाप का प्रायश्चित किया। उपरोक्त कथा का वृत्तांत फाहियान द्वारा दिया गया था। ह्युानसाँग ने भारत प्रवास (सन् 630-644 ई.) पर लिखता है कि राज प्रासाद के उत्तर की ओर कोई दस हाथ ऊँचा एक शिला स्तंभ है, या यह वह स्थान है, जहाँ राजा अशोक ने एक नरक बनवाया था। इससे 'उत्तर प्रियदर्शी' के पात्र, कथावस्तु और उसके कारण उपलब्धियाँ तथा उद्देश्य का संकेत मिल जाता है। अज्ञेय ने ऐतिहासिक घटना को मनोवैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया है ।

'कविप्रिया', 'वसंत' जैसे एकांकियों की रचना भी आपने की है।

5.2.2 अज्ञेय का यात्रावृत्तांत

अज्ञेय द्वारा दो यात्रा वृत्तांत रचे गये हैं- (1) 'अरे यायावर रहेगा याद' और (2) 'एक बूँद सहसा उछली'।

5.2.2.1 अरे यायावर रहेगा याद

इसमें सात अध्याय या पड़ाव हैं। प्रथम 'परशुराम से तूरखम' निबंध है। अज्ञेय 1943 में सेना की नौकरी में चले गये थे। शासक ब्रिटिश थे। तदवसर पर पूर्व असम में यायावरी का मौका मिला और असम के जन जीवन तथा वैष्णव संस्कृति को उन्होंने सूक्ष्मता से देखा। मध्य आसाम से पंजाब की यात्रा का वर्णन, जोगी गुफा का इतिहास आदि इसमें सम्मिलित हैं। अर्थात् इस निबंध में पूर्वी सीमांत से पश्चिमी सीमांत तक की गहन यात्रा का विवरण दिया है। जिसमें अज्ञेय ने उत्तर भारत की प्रकृति, संस्कृति, लोकजीवन, इमारतें, शहर, भाषा, कला, धर्म, दर्शन, पुरातत्व इतिहास और सभी कुछ का गति चित्र बड़े ही रोचकता से प्रस्तुत किया है। "किरणों की खोज में" अज्ञेय द्वारा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अन्वेषी दल के सदस्य के रूप में ग्रेजुएट होने के तत्काल बाद की गयी यात्रा का विवरण है। देवताओं के अंचल में कुलू के मनाली प्रवास का चित्रण है। 'मौत की घाटी में' निबंध अज्ञेय की रोहतंग जोत का वर्णन है। 'मामूली' यात्रा निबंध में असम की ब्रहमपुत्र नदी के बीच 70 मील लंबा, 10 मील चौडा तथा 25 हज़ार की आबादी वाले एक द्वीप का सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन का चित्रण है। 'बहता पानी निर्मला' में केवल एक ब्रश और खरीदने तथा मोटर की ढिबरी बनवाने के फेर में अज्ञेय को असम में सोनारी के डिखू नदी की बाढ़ में फँसकर कई दिन गँवाने का साहसिक चित्रण है।

5.2.2.2 एक बूँद सहसा उछली

इस संग्रह में 22 यात्रा निबंध हैं जिनमें उनका सक्रिय चिंतन भरा है। इन यात्रा निबंधों में यूरोप का इतिहास, संस्कृति, साहित्य, कला तथा जीवन मूल्यों को बड़ी संवेदनात्मकता के साथ पहचाना जा सकता है। प्रथम निबंध है 'यूरोप की अमरावती : रोमा'। इसमें रोम यात्रा का वर्णन है। 'विद्रोह की परंपरा' में

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

अज्ञेय ने इटली के एक युवा कवि 'लाडरोड बोसिस' द्वारा मुसोलिनी की फासिस्ट सभा के आतंक के विरोध में 1931 के तीसरी अक्टूबर को रोम पर हवाई जहाज़ से चार लाख प्रतियाँ बाँटने और महत्वपूर्ण विद्रोह लड़ने की अभूतपूर्व घटना का वर्णन किया है। 'खुदा के मसखरे के घरः असीसी' अज्ञेय की अनुभूति की दार्शनिक पकड देने वाला निबंध है। 'यूरोप की छत पर : स्विटजरलैंड', 'एक यूरोपीय चिंतक से भेंट', 'तो यह पेरिस है', 'कालू की भीत पर', 'संयुक्त राज्यः दो राजधानियाँ', 'ताल-तलहटी', 'स्रोत और स्रष्टा', 'बीस हज़ार राष्ट्रकवि', 'धर्म विश्वासों की गोधूली', 'बीसवीं शती का गोलोक', 'लोकोत्तर', 'सागर कन्या और खग शावक', 'राइन साथ-साथ' आदि निबंध इसमें संकलित हैं।

5.2.2.3 अंतः प्रक्रियाएँ

अज्ञेय द्वारा रचित अतः प्रक्रियाओं के संकलन 'भवंती', 'अंतरा' और 'शाश्वती' है। ये अंतः प्रक्रियाएँ अज्ञेय की रचना यात्रा के समान्तर उनकी मानसिक यात्रा का साक्ष्य प्रस्तुत करनेवाली मनःस्थितियाँ हैं अज्ञेय ने इन्हें अपनी यात्रा का 'लोग्बूक' कहा है। 'भवंती' फुटकर प्रक्रियाओं का संकलन है। ये अज्ञेय के जीवनानुभवों की वैचित्र्यामयी यंत्रणाएँ हैं। भवन्ती में अज्ञेय की अपनी भावानुभूतियों के अनेक प्रकरण जो जैसे आये हैं उन्हें लिपिबद्ध कर लिया गया है। इनमें आत्मविश्लेषण, आत्माभिमुखता, अध्ययन, संस्कृति, धर्म, ईश्वर, जीवन, सत-असत, मृत्यु, वरण, स्वातंर्त्य, जीवन मूल्य और जीवन की अनेक समस्याओं पर उठने वाले प्रसंगों का साहित्य संदर्भ एवं स्वतंत्र चिंतन है।

'अंतरा' उनकी अंतः प्रक्रियाओं का दूसरा संकलन है। इसमें 220 अंतःप्रक्रियाएँ संकलित की गई हैं। इसके द्वरा ईश्वर, धर्म, वाद, साहित्य, कला, संविधान, समाज, व्यक्ति, व्यक्तित्व, आस्था, भक्ति, अनुभव, अनुभूति आदि अनेक विषयों पर अपना विचार प्रस्तुत किया है। 'अंतरा' के निवेदन में अज्ञेय कहते हैं- 'पिछले दस वर्षों में कौन से,कैसे साहित्यिक या साहित्य संबंधी प्रश्न मुझे उन्मादित करते रहे हैं अथवा चुनौती दे रहे हैं उसका काफी संकेत इस से मिल जाएगा। 'शाश्वती' तीसरी अंतःप्रक्रिया है। विधा की दृष्टि से यह डायरी के बहुत निकट हैं। लेकिन पूरी तरह डायरी भी नहीं है। इस में अज्ञेय ने कुछ चुहलबजी और छेड़छाड़ भी की है। अपने समकालीनों की मान्यताओं पर विनोदपूर्ण प्रहर भी किया है।

5.2.2.4 अज्ञेय के साक्षात्कार

अज्ञेय के साक्षात्कार भी साहित्यिक महत्व रखते हैं। 'अपरोक्ष और रचना','क्यों और किसके बीच' ये दो ऐसी कृतियाँ हैं, जो पूर्णतः प्रश्नोत्तर रूप में लिखी गई हैं। इसके अलावा 'जोग लिखी', 'आत्मपरक' आदि रचनाओं में साक्षात्कार प्रकाशित है। साहित्यकारों ने अनेक प्रकार के प्रश्न किए हैं। रचनाकर्म, जीवन-अनुभव और रचना अनुभव के आत्मसंबंध, रचना की प्रेरणा और अंतस्संबंध, रचना की प्रेरणा और साथर्कता, रूप और मूल्य, इतिहास बोध और कालबोध आदि अनेक जिज्ञासाओं के उत्तर अज्ञेय ने दिए हैं।

5.2.2.5 अज्ञेय के संस्मरण

अज्ञेय ने अपने अग्रजों - समकालीनों की स्मृति का उल्लेख भी प्रस्तुत किया है। 'भारत कोकिला' (सरोजिनी नायडू), 'राष्ट्रकवि' (मैथिलीशरण गुप्त), 'स्मरण का स्मृतिकार' (राय कृष्ण दास), 'उपन्यास सम्राट' (प्रेमचन्द), 'वसंत का अग्रदूत' (निराला), 'स्वर सिद्ध' (सुमित्रानंदन पंत) 'कवि वत्सला' (होमवती देवी), 'एक भारतीय आत्मा : एक चुनौती' (माखनलाल चतुवेदी), 'धरती का धनी' (फणीश्वरनाथ रेणु), 'समय-सूर्य' (रामधारी सिंह दिनकर), 'बीसवीं सदी का बाणभट्ट' (हज़ारी प्रसाद द्विवेदी) तथा 'असीम और समीप बीच' (बालकृष्ण शर्मा 'नवीन') आदि से संबंधित ये स्मृति लेख सामान्य संस्मरणों से अलग है। निस्संदेह ये स्मृति लेख हिन्दी के संस्मरण साहित्य की विशेष निधि माने जायेंगे।

5.2.2.6 अज्ञेय का पत्र साहित्य

लेखकों के पत्र कई दृष्टियों से पाठक के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। लेखक का स्वभाव, उसकी

तत्कालीन परिस्थिति, उसके अन्य लेखकों से संबंध, दूसरों की रचनाओं के बारे में उसकी राय, साहित्यिक विवादों के बारे में उसकी प्रतिक्रियाएँ आदि बहुत-सी जानकारीयाँ लेखक के पत्रों से हासिल हो जाती हैं। अज्ञेय के पत्रों से ज़ाहिर है कि उनका जीवन अति व्यस्त लेखक का जीवन था। अधिकांश रचनाओं में अज्ञेय अपनी किसी लेखन योजना, किसी संपादन योजना, किसी स्वदेश या विदेश यात्रा की योजना, साहित्यिक आयोजन आदि की चर्चा करते हैं। अमृतलाल नागर, केदारनाथ अग्रवाल, कुँवर नारायण, जगदीश गुप्त, नरेश मेहता, मुक्तिबोध आदि अनेक विशिष्ट लेखकों के लिखे पत्र वास्तव में हिन्दी साहित्य के धरोहर हैं। इन पत्रों में गज़ब का प्रवाह है। भाषा बोलचाल की होती है। सहजता, सरलता और खुलापन इसकी अन्य विशेषताएँ हैं। अज्ञेय के पत्र का एक नमूना निम्नवत् है;

अमृतलाल नागर के नाम

कैवेंटर्स ईस्ट, कैवेंटर लेन,
सरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली-21
फरवरी14, 1981

प्रिय,

वत्सल निधि और साक्षरता निकेतन लखनऊ के सहयोग से लखनऊ में 4 मार्च, 1981 से 10 मार्च, 1981 तक एक लेखक शिविर का आयोजन हो रहा है। इस विषय में साक्षरता निकेतन के निदेशक श्री भगवती शरण सिंह आपसे स्थानीय रूप से संपर्क स्थापित कर के आपको आमंत्रित करेंगे ही। यह पत्र मैं वत्सल निधि की ओर से आपको सोपचार आमंत्रित करने के लिए लिख रहा हूँ।

शिविर का उद्घाटन 4 मार्च को 11 बजे होगा और 10 मार्च की दोपहर के भोजनोपरांत उसका विसर्जन होगा। समापन सत्र 10 मार्च को 11 बजे से 1 बजे तक होगा। आशा है कि यह दो औपचारिक अवसरों पर उपस्थित रह कर आप सम्मिलित लेखकों का उत्साह तो बढ़ाएँगे ही, साथ ही अन्य सत्रों में भी भाग लेकर तथा परिचर्चा में योग देकर नए साहित्यकारों को अपने रचनाकर्म की दिशा निर्धारित करने में सहायता देंगे।

आमंत्रण की स्वीकृति की सूचना मुझे दे दें तो कार्य-संयोजन में मुझे कुछ सुविधा हो जाएगी, लेकिन उतना समय न हो तो कृपया श्री भगवती शरण सिंह को ही सूचित कर दें।

आपसे एक मेरा विशेष अनुरोध भी है। यदि आप उद्घाटन और समापन के कार्यक्रमों की अध्यक्षता करना स्वीकार करें तो हम सभी का उत्साह बढ़ेगा और हम अपने को विशेष कृतार्थ मान सकेंगे। उद्घाटन 4 मार्च को 11 बजे होगा, जिसमें श्री भगवती शरण सिंह के साथ मैं शिविर की रूपरेखा प्रस्तुत करूँगा और श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी संपादक और लेख के संबंधों के विषय में अपने अनुभव पर आधारित कुछ चर्चा करेंगे। यह बैठक 1 बजे तक समाप्त हो जाएगी।

समापन गोष्ठी 10 मार्च को 11 बजे से 1 बजे तक होगी। इस शिविर के सदस्य शिविर के अपने अनुभवों से आलोचना करेंगे और भविष्य के लिए सुझाव देंगे। फिर संयोजकों की ओर से ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए समापन कर दिया जाएगा। दोनों अवसरों पर आप इच्छानुसार कुछ कह सकेंगे। समापन के समय तो हम विशेष रूप से चाहेंगे कि आप शिविर की पूरी योजना और उसके काम के विषय में कुछ कहें तथा नए लेखकों का संबोधन भी करें।

आपका
श्रीअमृतलाल नागर, लखनऊ
सच्चिदानंद वात्स्यायन

Critical Overview / अवलोकन

'अज्ञेय' वर्तमान हिन्दी - साहित्य के एक ऐसे रचनाकार हैं, जिनका व्यक्तित्व कुछ अलग, विरल और विशिष्ट है। गद्य और पद्य दोनों विधाओं में आपने खूब लिखा। मनोविज्ञान के प्रकाश में उन्होंने मानवीय संबंधों की जटिलता को देखा-परखा है। 'पद्य' उनका मनपसंद विधा रही। लेकिन गद्य में भी आपने खूब साहित्य दिया। अन्य विधाओं में नाटक, संस्मरण,

अतः प्रक्रियाएँ, यात्रा निबंध, साक्षात्कार आदि में भरपूर साहित्य आपने प्रदान किया है। इनमें आपकी गद्य शैली के चार रूप लक्षित होते हैं- 1. वर्णनात्मक और विवरणात्मक गद्य शैली 2. विचारात्मक शैली 3. व्यंग्यात्मक शैली (4.) अंतः प्रक्रियाओं की मनः स्थिति सूचक सूत्र शैली। आप मूलतः सर्जनशील लेखक हैं। उक्त विधाओं के साथ उनके डायरी,पत्र साहित्य, संपादन आदि भी विशेष महत्व रखते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय का नाट्य साहित्य - उत्तरप्रियदर्शी
- अज्ञेय के यात्रा निबंध - अरे यायावर रहेगा याद और एक बूँद सहसा उछली।
- अज्ञेय की अंतःप्रक्रियाएँ - भवंती, अंतरा और शाश्वती
- अज्ञेय के साक्षात्कार
- अज्ञेय के संस्मरण

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उत्तर प्रियदर्शी किस विधा की रचना है?
2. 'एक बूँद सहसा उछली" का लेखक कौन है?
3. 'स्वरसिद्ध' संस्मरण के केन्द्र में कौन है?
4. 'शाश्वती' किस विधा की रचना है?
5. 'स्मृतिलेखा' किस विधा की रचना है?
6. बालू की भीत पर' किस विधा की रचना है?
7. 'भवंती' के लेखक का नाम क्या है?
8. अज्ञेय द्वारा रचित कविप्रिया किस विधा की रचना है?
9. 'उत्तरप्रियदर्शी' में उत्तरप्रियदर्शी कौन है?
10. 'अपरोक्ष और रचना' किस विधा की रचना है?

Answers / उत्तर

1. गीति नाट्य
2. अज्ञेय
3. सुमित्रानंदन पंत
4. अंतः प्रक्रिया
5. संस्मरण
6. यात्रा निबंध
7. अज्ञेय
8. एकांकी
9. सम्राट अशोक
10. साक्षात्कार

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अज्ञेय के नाटक पर विचार कीजिए।
2. अंतः प्रक्रियाओं की आलोचना कीजिए।
3. अज्ञेय के यात्रा वृत्तांत पर एक लेख तैयार कीजिए।
4. अज्ञेय के संस्मरण और साक्षात्कार पर प्रकाश डालिए।
5. अज्ञेय के पत्र साहित्य पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल
2. हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश
3. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियों - शिवकुमार शर्मा
4. हिन्दी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैल रस्तोगी

SGOU

इकाई 3

अज्ञेय की गद्य रचनाएँ (विस्तृत अध्ययन के लिए)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय की आत्मकथा - 'अज्ञेय अपनी निगाह में' के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करता है
- अज्ञेय की डायरी 'डायरी' का परिचय प्राप्त करता है
- अज्ञेय का यात्रावृत्तांत - 'बीसवीं सदी का गोलोक' की जानकारी प्राप्त करता है
- अज्ञेय के संस्मरण - 'वसंत का अग्रदूत' का परिचय प्राप्त करता है
- अज्ञेय के निबंध - 'वसुदेव प्याला' का परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

इस अध्याय में अज्ञेय की गद्य रचनाओं के अध्ययन के द्वारा आत्मकथा, डायरी, यात्रावृत्तांत, संस्मरण, निबंध आदि का परिचयात्मक अध्ययन दिया गया है। अज्ञेय की सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक दृष्टियों का प्रतिफलन आपके साहित्य को विशिष्ट बना देता है। आप निश्चय ही एक ठोस परिकल्पना पर ज़ोर देते नज़र आते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अज्ञेय की आत्मकथा, डायरी, यात्रावृत्तांत, संस्मरण, निबंध आदि।

Discussion / चर्चा

अज्ञेय की कतिपय रचनाओं का विस्तृत अध्ययन निम्नवत् है;

5.3.1 अज्ञेयः अपनी निगाह में' आत्मकथा का सारांश

'अज्ञेयः अपनी निगाह' में विख्यात् साहित्यकार सचिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा रचित आत्मकथा है।

इसमें अज्ञेय कहते हैं कि कृतिकार की निगाह नहीं होती, यह तो नहीं कहेंगे। लेकिन निगाहें भिन्न भिन्न होती हैं। कलाकार की निगाह सब-कुछ की ओर लगी रहती है। अपने बारे में लिखना तो आजकल का एक रोग है। देखनेवाले की निगाह कई कोटियों की हैं। आत्मचर्चा करने वाले की निगाह व्यवसायी की निगाह होती है। आजकल सभी कलाकार न्यूनाधिक मात्रा में व्यवसायी हैं। आत्मचर्चा आत्मपोषण का साधन है।

अज्ञेय अपने बारे में लिखते हैं कि वे बड़ा संकोची और समाजभीरु है। उसके दो पक्ष हैं कि कभी-कभी दुकान में घुसकर फिर वापस आ जाते हैं। वह इसलिए है कि दुकानदार से बात करनी पड़ेगी। दूसरा पक्ष निजीपन की तीव्र भावना है। एक सीमा है जिसके आगे अज्ञेय अस्पृश्य रहना ही पसन्द करता है।

निजीपन से संबंधित कुछ को मनहूसियत की झलक मिलती है, कुछ अहम्मन्यता पाते हैं, कुछ आभिजात्य का दर्प, कुछ और कुछ। सभी को सब कुछ का आदर्श सबसे ऊँचा है। वह आदर्श सन्यासी का होता है कलाकार का नहीं। सभी के लिए सब कुछ देने का वादा अज्ञेय नहीं दे रहे हैं।

अपने जीवन के बारे में आप कहते हैं - अज्ञेय का जन्म खंडहरों में शिविर में हुआ। उनका बचपन वनों और पर्वतों में बिखरे हुए महत्वपूर्ण पुरातत्वावशेषों के मध्य बीता। इन्हीं के बीच उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा पायी। संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाएँ पढ़ने का अवसर मिला। पिताजी पुरातत्वज्ञ थे। खुदाई में लगे हुए पिताजी अक्सर अकेले रहते थे। इसलिए कि अज्ञेय बहुत बचपन से ही एकान्त का संन्यासी थे। अज्ञेय घंटों निश्चल बैठा रह सकता था। उनकी - निश्चलता ही उन्हें शांत कर देती थी। प्रकृति की हर गति को अज्ञेय ने वरीयता दी। उनकी प्रवृत्ति जो है वह किसी हद तक असंपृक्त बुद्धि से प्रेरित है। अज्ञेय हमेशा ही उनके विश्वास और कर्म का सामंजस्य देखते थे। एक साथ ही चरम निश्चलता का और चरम गतिमयता का आकर्षण अज्ञेय की चेतना के अंतर्विरोध का सूचक है। अज्ञेय हमेशा हिमालय के हिमशिखरों में रहना पसंद करते हैं। लेकिन दूसरी ओर सागर की ओर भी उनका मन रमता है। शान्त सागर तक उन्हें नहीं मोहता। चट्टानों पर लहरों का घात प्रतिघात ही उसे मुग्ध करता है। अज्ञेय अपनी कठिनाई पर हँसते हुए - लिखते हैं- 'मेरी कठिनाई यही है कि भारत का सागर तट सपाट दक्षिण में है- कहीं पहाडी तट होता तो?'

अज्ञेय का मन हमेशा अंतर्विरोध में रहता है। कहीं जाने के लिए वे बेचैन हो उठते हैं। इसे आप मुक्तिबोध का माइग्रेशन इनस्टिंक्ट मानते हैं। कभी नहीं निकलते तो घर का सामान इधर उधर करके परिवर्तित करने लगते हैं। घर का फर्नीचर भी अज्ञेय अपने डिज़ाइन का बनवाता है।

पुरातत्ववेत्ता की छाया में अकेले रहने का एक लाभ अज्ञेय को और भी हुआ है। चाहे विरोधी के रूप में चाहे पालक के रूप में, वह बराबर परंपरा के संपर्क में रहा है। रूढि को तोड़ने के लिए वे तैयार है लेकिन परंपरा को नहीं। वह स्वयं को मर्यादावान विद्रोही पुकारते हैं।

एक ओर एकान्त और दूसरे में एकान्त का बदलता हुआ परिवेश-दोनों ने अकेले अज्ञेय की आत्म-निर्भरता का पाठ बराबर दुहराया है। इसलिए उनमें रूप-रस-गंध-गान सभी की प्रतिक्रियाएँ अधिक गहरी हुई हैं। ज्ञानेंद्रियों की सजगता अज्ञेय की कृतियों में परिलक्षित होती हैं। अज्ञेय मानता है कि बुद्धि से जो काम किया जाता है उसकी नींव हाथों से किये गये काम पर है। जो लोग अपने हाथों का सही उपयोग नहीं करते उनकी मानसिक सृष्टि में भी कुछ विकृति या एकांगिता आ जाती है। यह बात काव्य रचना पर विशेष लागू होती ही है। काव्य कला शुद्ध मानसिक कला होती है। प्राचीन काल में शायद इसलिए कवि कर्म को कला नहीं गिना जाता था। बढ़ईगिरी और बागवानी का उन्हें खास शौक है। दस्तकारी, सिलाई, चित्रकारी, मूर्तिकारी भी कर लेते थे।

उनका मानना है कि मितव्ययता कला का एक स्वाभाविक धर्म है। रंग का, रेखा की मिट्टी या शब्द का अपव्यय भी भारी दोष है। इससे उनमें भाषा के क्षेत्र में नपी-तुली, सुलझी हुई बात कहने की क्षमता बढ़ी है और उनकी तर्क -पद्धति व्यवस्थित, सुचिंतित और क्रमसंगत होती है। अज्ञेय इन सबको साहित्य के बड़े गुण मानते थे। उनमें और एक गुण था कि वे दूसरों की बात को ध्यान से सुनते थे।

आप स्वयं को हिन्दी के हाथी का दिखाने का दांत मानते थे। वह इसलिए है कि आप अनुभव करते हैं कि हिन्दी के प्रति उनकी आस्था अनेक प्रतिष्ठित हिन्दीवालों से अधिक है और साथ ही यह भी कि वे बड़ी गहराई में और निष्ठा के साथ भारतीय हैं।

आप स्वयं को भारत का मानते थे जबकि आर्थडॉक्स भारतीय देश को अपना मानता है। हिन्दी के एक बुजुर्ग ने कहा था- 'विदेशों में हिन्दी पढ़ाने के लिए अज्ञेय बहुत ही उपयुक्त है, बल्कि इससे योग्यतर व्यक्ति नहीं मिलेगा, हिन्दी क्षेत्र में हिन्दी पढ़ाने के लिए दूसरे प्रकार की योग्यता चाहिए।'

अज्ञेय ने कहाः- 'जी हाँ, तबीयत के अलावा और कोई बादशाहत अज्ञेय को नहीं मिली है। लेकिन यह बनी रहे तो दूसरी किसी की आकांक्षा भी उसे नहीं है।'

5.3.2 'डायरी' - सारांश

डायरी विधा में विख्यात साहित्यकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित कृति है 'डायरी'।

डायरी में अज्ञेय ने लिखा है कि लययुक्त गति पर उनका प्रबल आकर्षण है। अकेला होने के एहसास पर आप अकेलापन चुनते नहीं बल्कि स्वीकार करते हैं। सर्जन प्रक्रिया की जितनी चर्चा इधर हुई है उससे यह तो स्पष्ट हो जाता है कि सर्जन एक यंत्रणा भरी प्रक्रिया है। 'भोगनेवाले व्यक्ति' और रचने वाली मनीषा' के अलगाव की चर्चा पुरानी है। रचनाओं पर अज्ञेय का विचार है कि 'यात्रा' उन्हीं रचनाओं में है, यह उस यात्रा की 'लॉग बुक' है, जिसमें जब-तब दिक्काल की माप की टीप लिखी जाती रही है। लेखक के नाते उनकी यात्रा काफी अकेली रही है।

सर्जनात्मक अंत प्रक्रिया के बारे में उसे एक सतत प्रक्रिया कहा गया है, जिसमें नैरंतर्य का भी उतना ही महत्व है जितना पूर्वापरता का। उस सतत प्रक्रिया में पाठक को सहयात्री के रूप में पा सकना या पाने का भरोसा बनाये रख सकना वह संबल है जो सर्जक को यात्रांत तक ले जाता है। यहाँ अज्ञेय पाठकों को आश्वासन देते नज़र आते हैं। उनका मानना है कि लक्ष्य संदिग्ध नहीं है, बल्कि रास्ते ही सब संदिग्ध है।

आज के बौद्धिक की समस्या यह नहीं है कि उसे अच्छा चुनने की स्वतंत्रता नहीं, केवल बदतर और बद के बीच चुनाव करने भर की उसे छूट है। अपनी डायरी में एक अत्यंत प्रासंगिक प्रश्न अज्ञेय पूछते हैं - क्या समाज की गतिशीलता, समाज के भीतर इकाई की चलनशीलता (जो प्रगति का लक्षण मानी जाती है) का अनिवार्य परिणाम एक बना-बनाया आइडेंटिटी क्राइसिस है।

अज्ञेयजी का मानना है कि हमारे मध्यवर्ग की प्रतिभा मर गयी है। अंग्रेज़ी धुन सबको रखा गया है। कवि बिंब पर और कहानीकार प्रतीक पर अधिक आकृष्ट है। स्वयं को अंग्रेजी के सहारे बुद्धि विकास होनेवाला कहा है। लेकिन राजाराम मोहन राय ऐसे नहीं थे। नियति बोध के बारे में अज्ञेय का कथन है कि नियति बोध होगा तभी आत्म-विश्वास होगा, तभी सृजन की संभावना। नियतिबोध में खतरा भी हो सकता है।

अकेलेपन को दूर करने के बारे में अज्ञेय का कहना है - 'झरे हुए पत्रों के बीच से मैं चलता हूँ और रौंदे जाते पत्तों की सरसराहट-खड़खड़ाहट मुझे अच्छी लगती है। उसमें एक सख्य है, सामीप्य है जिसके कारण मैं अकेला नहीं रहता- न अपने में उस निर्जन परिवेश में। मृत्यु के गीत पर आपने कहा है कि मृत्यु है इसलिए गाते हैं। इसीलिए गीत स्तवन हो जाता है- जीवन का। हिन्दी पढ़ने को लेकर उनकी दिलचस्प बातें हैं- 'मैं ने भी, आखिर, पढ़कर हिन्दी सीखीं, पर जब हिन्दी पढ़ानेवालों के बीच अपने को पाता हूँ तो भाषा-संबंधी इनकी ओर अपनी दृष्टि और आग्रहों के अंतर को देखकर दंग रह जाता हूँ। पढ़कर सीखी, तो मैंने भी मानक भाषा की सीखी, ऐसी भाषा सीखी जिसका एक स्पष्ट निर्दिष्ट रूप है। पर लेखक के नाते मैंने अपने को कभी अधीन न माना, न पाया, न मानना चाहा और पाता तो उससे कुछ संतोष न होता, परेशानी ही होती।

भाषा की जो परिकल्पना है वही भ्रांत है, भाषा के विकास के बारे में जो धारणाएँ हैं वे सब मिथ्या है। यह अज्ञेय जी का मत है। लोग बनी बनायी और बनती भाषा को फिर दरिद्र बना रहे हैं। हिन्दी में भी ऐसी

प्रवृत्ति रही, पर किसी प्रतिष्ठित साहित्यकार ने उसे प्रश्रय या प्रोत्साहन नहीं दिया, यह हिन्दी का सौभाग्य और उसकी शक्ति रही। पर हिन्दी में समस्या दूसरी है। स्थिर स्वरूप की, बंधे नियम की, सर्व सुबोध भाषा के नाम पर एक चरित्रहीन, प्राण रहित हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद देने का प्रयत्न भी कुछ कम भ्रांत नहीं है। थोड़े-से आसान नियमों से नियंत्रित कृत्रिम भाषा राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती, न होगी। फारसी के पारंपरिक चमन से निकलकर कुछ शयरों में हिन्दी की ठेठ फुलवाडियों का भी मुआयना किया है। वाचिक से पठित (छपी हुई) कविता तक आने में काव्य का इत्वरूप बदला, इसका अर्थ केवल इतना नहीं है कि कविता को नया छन्द शास्त्र मिल गया। काव्य से नया संबंध, एक नयी जीवन दृष्टि, नया विश्व-दर्शन मिला।

'ट्रैजिक' के बारे में आपने लिखा है- ट्रैजिक वह दुःखान्त के अर्थ में नहीं, हताशा के अर्थ में नहीं, ट्रैजिक इसी अर्थ में कि वह निर्व्यक्तिक शत्रु के विरुद्ध व्यक्ति का अभियान है जिसे यह निरर्थक नहीं होने देना चाहता। अपने सामाजिक दायित्व पर आपकी राय है "लेखक होने से मुझे सामाजिक उत्तरदायित्व से छुट्टी नहीं मिल पाती क्योंकि लेखक हो जाने पर ऐसा नहीं है कि मैं नागरिक नहीं रहता। मूल्यों के क्राइसिस के कारण संस्थाएँ और प्रतिष्ठान टूट रहे हैं।"

नदी-तट के बारे में आपने लिखा है- नदी-तट की संस्कृतियाँ सभी मातृकाएँ पूजती हैं और सभी मातृ-पूजक संस्कृतियाँ नदी-तटों पर पनपी हैं। हर भाषा की अपनी एक गंध होती है। मिथ पर आपने लिखा है- जब हिस्टरी में बंध जाते हैं, तब मिस्टरी की, मिथ की; ज़रूरत पडती है। हमें भी प्रगति के बन्दी बन जाने के बाद से, पड़ने लगी है। भक्ति पर अज्ञेय जी की नज़रिया एकदम स्पष्ट हैं। आप पूछते हैं किस आस्तिक की श्रद्धा दूसरों को 'भोली' नहीं जान पड़ती - जब तक कि वे स्वयं आस्तिक न हों? जब श्रद्धा के स्वभाव में ही है कि वह तर्कातीत हो, तब उसके तर्क-संगत होने का प्रश्न कहाँ उठता है, और परिवेश की कसौटी पर उसे परखना चाहना कहाँ की बुद्धिमानी है? आप स्वातंत्र्य को आनंद मानते हैं।

साहित्य पर आपका विचार है- 'साहित्य तुम्हारी तुम्हीं से पहचान और गहरी करता है : तुम्हारी संवेदना की परतें- उघाडता है जिससे तुम्हारा जीना अधिक जीवन्त होता है और यह सहारा साहित्य दे सकता है। अज्ञेय की राय में 'महान पाठक' की चर्चा भी होनी चाहिए।

'आत्म प्रवंचना' पर आप लिखते हैं- पच्चीस तीस वर्ष आज़ाद रहकर भी हम एक आत्म-प्रवंचना से छुटकारा नहीं पा सके हैं। आप आशा करते हैं कि हमारी मुक्ति भावना अधिक पुष्ट हुई होती, इतिहास-परंपरा का हमारा ज्ञान गहरा हुआ होता, आजादी का अर्थ भी हमारी समझ में ठीक-ठीक आया होता, और पीढ़ी ने स्वयं आज़ादी के संघर्ष में भाग नहीं' लिया था वह भी उस संघर्ष को सम्मान की दृष्टि से देख सकती और उसमें गौरव का अनुभव कर सकती।

पराधीनता और स्वाधीनता में अंतर बताते हुए आप लिखते हैं- 'वास्तव में पराधीनता के अंत और स्वाधीनता में ऐसा ही अंतर है। पराधीनता का बंधन न रहने से ही हम स्वाधीन नहीं हो जाते; स्वाधीनता भी संकल्प माँगती हैं और वह संकल्प केवल स्वाधीनता के भोग का नहीं, उसके दूसरे तक प्रसार का संकल्प है।

5.3.3 'बीसवीं शती का गोलोक' यात्रावृत्तांत का सारांश

अज्ञेयजी द्वारा रचित प्रसिद्ध यात्रावृत्तांत है 'बीसवीं शती का गोलोक'। इसमें स्टॉक होम, (स्वीडन) यात्रा का वर्णन किया गया है। स्वीडन में 54.5 प्रतिशत वन भूमि है और प्रायः 12 प्रतिशत गोचर-भूमि या चरागाह है। आँकडे के अनुसार दूध और मक्खन की खपत प्रतिव्यक्ति क्रमशः 210 सेर और 11 सेर वार्षिक है। आधुनिक गोलोक के बारे में अज्ञेयजी को पुष्ट-धारणा थीं। लेकिन पूरी यात्रा में कहीं अज्ञेयजी ने गाय या

बैल को नहीं देखा। अज्ञेय लिखते हैं - यह कैसा गोलोक है जिसमें गाय अदृश्य रहती है?

आबिस्को से स्टॉकहोम लौट जाने पर भी उन्होंने यह प्रश्न पूछा तो उत्तर कहीं से नहीं मिला। भारतीय परिवेश में गायों को खुला छोड देता है। वहाँ पर किसी के द्वारा भारत में गायों का खुला घूमना, कचरा खाना आदि यथार्थ पर जिक्र होते सुनकर और किसी ने कहा - भारत में गाय पूज्य मानी जाती है। है न? लेकिन वहाँ ऐसा नहीं था। वहाँ देश की 12 प्रतिशत भूमि गोचर भूमि है और वह शहरों से अलग ही रखी जाती है। वहाँ गायें स्वच्छता और स्वच्छन्दता से रहती हैं, और वहीं दुहा जाकर दूध शहर में पहुँचता है। वहाँ वितरण की व्यवस्था भी अच्छी है। वहाँ दुग्ध सहकार संस्था का केन्द्र भी हैं। गोधन के बारे में आपने लिखा है - 'गोधन का संवर्धन तो तभी हो सकता है जब हम उसे धन मानें; अर्थात भावना को एक ओर रखकर उसे आर्थिक नियमों के आधीन मान लें।'

स्टॉकहोम अत्यंत साफ सुथरा शहर है। उपकरण वाद (फॅक्शनलिस्म) का सिद्धांत वहाँ सन् 1930 के लगभग जर्मनी और फ्रांस से स्वीडन आया। स्थापत्य के विशेष सुन्दर न होने पर भी स्टॉकहोम विशेष सुन्दर दिखने का कारण मालार झील है। वहाँ का बन्दरगाह, रेस्तराँ आदि अत्यंत आकर्षक हैं। विद्यार्थियों के होटल में ठहरना, समान रुचि वाले लेखकों से मिलना, सूर्योदय, सूर्यास्त, ट्राम और मोटरें आदि अत्यंत रोचक थे। आने जाने वालों के लिए पुल-पर एक दुकान थी। वहाँ लिफ्ट चलाने केलिए स्त्रियाँ नियुक्त होती थीं। उस पुल से कूदकर आत्महत्या करनेवाले एक व्यक्ति के बारे में चलिका ने सुनाया। वहाँ के मानव के बारे में अज्ञेय ने लिखा है स्वीडन में यह दोनों अलग आधार पर खड़ा है। मानव के प्रति मानव के सम्मान पर, व्यक्ति की अखंड सार्वभौम सत्ता पर। इस विशेष दृष्टि कोण के अनेक उदाहरण सुने भी और देखे भी।

जिस होटल पर अज्ञेयजी रुके हुए थे वहाँ से विदा होते समय आठ-दस स्वीडी व्यक्ति उनकी ओर आते दिखाई दिया। वे सब उन्हें विदा करने आए थे। वहाँ का आतिथ्य बहुत ही आकर्षक था। सभ्यता पर अज्ञेय लिखते हैं- सभ्यता यदि व्यक्ति की स्वतंत्रता का निर्वाह करते हुए एक सुगठित और सुव्यवस्थित समाज के रूप में रहने की कला का नाम है। 'स्वीडन में नैतिक मूल्य का निर्वाह आधुनिकतम वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ होता है।

शिक्षित और सम्पन्न देश में भेजे एकान्त प्रेम से, विशेषतया जब उस संपन्नता के साथ-साथ स्वतंत्र वैज्ञानिक चिंतन कई विश्वासों को दुर्बल कर देता है, इसकी संभावना बनी रहती है कि व्यक्ति एक आध्यात्मिक शून्यता का अनुभव करे। इसके दुष्परिणाम स्वीडन में देखे जा सकते हैं। एकांत में और अति मात्रा में मद्य-सेवन वहाँ की एक सामाजिक समस्या है। फ्रांस का साहित्यकार अपनी बातचीत में सदा ही दूसरे को चमत्कृत करता है। इसके विरुद्ध स्वीडी लेखक कम बोलता है। स्वीडी लेखक फ्रांस के लेखकों को प्रतिभावान मानते हैं।

स्वीडन में शिक्षा का प्रसार अद्भुत है। शिक्षा सभी स्तरों में निःशुल्क है। विश्वविद्यालयों में भी शिक्षा निःशुल्क दी जाती है किन्तु राज्य विश्वविद्यालयों का नियंत्रण नहीं करता। विश्वविद्यालयों में स्वतंत्रता अध्ययन -स्वतंत्रता और विचार स्वतंत्रता के आन्दोलन की ही एक पहलू है। प्रत्येक - विद्यार्थी के लिए किसी विद्यार्थी संगठन का सदस्य होना आवश्यक होता है, और ये संगठन चन्दा लेते हैं। ऐसे संगठनों के नाम अधिकतर प्रादेशिक होते हैं और वे 'राष्ट्र' कहलाते हैं। छात्र-संगठन स्वयंसेवी और स्वायत्त होते हैं।

सिगतना का लोक संस्कृत महाविद्यालय भी मनोरम था। मंडलाकार नृत्य होने पर भी कुछ को नटन (डॉस) कहा जाता था और कुछ को अटन (वाक) दूर-देशीय अतिथि होने के नाते अज्ञेय को संस्था देखने की पूरी सुविधा दी गयी। अज्ञेय सगतुना के बाद दक्षिणी स्वीडन के मुल्के नामक स्थान में हाकिनसास (गरुड-वासा) की संस्था में जा पहुँचे। वहाँ पर मार्टिन नामक व्यक्ति से हुई बातचीत का विवरण समाचार पत्रों में आ गया।

स्वीडन संसार का सबसे अधिक समाजवादी देश है। समाजवाद के आदर्शों का व्यावहारिक रूप वहीं सबसे अधिक देखा जाता है। हर जगह 'सहकार' सिद्धांत काम करता है। यह सहकार सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी लागू होता है।

5.3.4 'वसंत का अग्रदूत' संस्मरण का सारांश

छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' पर केन्द्रित अज्ञेय का संस्मरण है वसंत का अग्रदूत। इसमें आलोच्य पुरुष के जीवन जीने की शैली को जीवंत प्रस्तुत किया गया है। संस्मरण विधा के सारे तत्वों का अनुपालन इसमें किया गया है।

निराला जी से अज्ञेय के पहले पहल दर्शन इलाहबाद में पंडित वाचस्पति पाठक के घर हुआ था। सन् 1936 में 'विशाल भारत' में पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी निराला के कुछ लेखों के विरुद्ध अभियान चला रहे थे, जिसकी याद दिलाता एक लेख अज्ञेय जी ने भी लिखा था। कमरे के अन्दर निराला जी के साथ उग्र भी बैठे थे। दोनों शराब पी रहे थे। उग्र जी से पहले से परिचय होने कारण उन्होंने ही इनका परिचय कराया था। निराला जी ने पहले बैठने को कहा लेकिन बाद में खड़े हो जाने के लिए कहा और रामविलास शर्मा से उनकी तुलना की। 'शराब' देने लगे तो अज्ञेय ने मना कर दिया। अज्ञेय निरालाजी से कविता सुनने का आग्रह लेकर आए थे। इनके आग्रह पर निराला जी ने कविता सुनायी। यही उनसे हुई अज्ञेय की पहली मुलाकात थी।

निराला जी का काव्य 'तुलसीदास' को आप अधिक पसंद करते हैं। आप लिखते हैं- 'तुलसीदास जब जब पढ़ता है तो इतना ही नहीं कि एक नया संसार मानो एक ऐतिहासिक अनुक्रम में घटित होता हुआ दीखता है।

संस्मरण अत्यंत रोचक रूप में प्रस्तुत है। शिवमंगल सिंह सुमन जी के साथ अज्ञेय का निरालाजी के दारागंज में स्थित घर जाना, निराला जी के 'जीनियस का पागलपन' को जानना, उनसे बातचीत करना आदि अत्यंत रोचक है। निरालाजी की महानता पर अज्ञेय लिखते हैं - 'उन्हें याद करता हूँ तो आज मुझे आश्चर्य होता है कि हिन्दी काव्य रचना में परिवर्तन हो रहा था, उसकी इतनी यही पहचान निराला को थी- उस समय के तमाम हिन्दी आचार्यों से कहीं अधिक सही और अचूक और वह तब जब कि ये सारे आचार्य उन्हें कम-से-कम आधा विक्षिप्त तो मान ही रहे थे। स्वर पर उनकी राय कमाल की थी 'स्वर की बात तो हम भी सोचते थे। लेकिन असल में हमारे सामने संगीत का स्वर रहता था और तुम्हारे सामने बोलचाल की भाषा का स्वर रहता है।" बीच बीच में निरालाजी कहते थे वह निराला तो मर गया।

आगे निरालाजी का होमवतीजी के घर रहना, शराब पीकर घंटों बाहर घूमना, शराब का नशा उतरने पर होमवती जी के बंगले में जाना आदि घट नाएँ अत्यंत सुंदर हैं। उनके साहित्य पर दृष्टि डालते हुए अज्ञेय लिखते हैं- पहले का स्वर केवल एक तात्कालिक अवस्था को प्रकट करता है जैसे और भी पहले की 'सखि वसन्त आया' अथवा 'सुमन भर न लिये' आदि प्रतिक्रिया अथवा भावदशा को दर्शाती है। लेकिन अर्चना और उसके बाद की कविताओं में हताश अवसाद का जो भाव छाया हुआ दीखता है वह तत्कालीन प्रतिक्रिया का नहीं, जीवन के दीर्घ प्रत्यवलोकन का परिणाम हैं। आगे अज्ञेय लिखते हैं- 'सचमुच वसंत पंचमी के दिन जन्म लेनेवाले निराला हिन्दी काव्य के अग्रदूत थे।'

5.3.5 'वासुदेव प्याला' निबंध का सारांश

'वासुदेव प्याला' नामक निबंध में अज्ञेय ने पुराने ज़माने का एक विशिष्ट खिलौने के बारे में लिखा है। वे कहते हैं कि "यादों की अपनी एक तर्क परंपरा होती है।" वासुदेव प्याला एक खिलौना था। पहले सीधे सादे अनेक खिलौने हुआ करते थे, जैसे बनारस के लकड़ी के गेंद-बल्ले और बरतन-चूल्हा-चक्की, कन्नौज के कंचे, लखनऊ के मिट्टी के बने भिश्ती, दर्जी, सँपेरे और सारंगीवाले, नाथद्वारे की काँच के टुकड़ों से सजी लुगदी और तार की चिड़ियाँ, पुरी और रामेश्वरम

की शंख, और सीप की मालाएँ या सरकंडे के गूदे अथवा सूखे सिवार को रँगकर बनाए हुए जादुई फूल जो पानी में डालते ही नमी सोखकर फूले-गुलदस्ते बन जाते थे। माता-पिता और गुरुजनों की तीर्थयात्रा से खिलौने आते थे। खिलौना बच्चों की कल्पना को खोलता है। अमीर लोग जो खिलौना बच्चों को देते हैं उससे बच्चे की कल्पना कुंठित हो जाती है। आज का संपन्न घर का बच्चा केवल बटन दबाकर अनेक प्रकार की ऊर्जा को अनुशासित करता है।

वासुदेव प्याला वैज्ञानिक खिलौने की कोटि में आता है। उसमें विज्ञान के एक सिद्धांत का कल्पना युक्त प्रयोग किया गया था। इस ढले हुए खिलौने में पीतल के एक बड़े कटोरे के बीचोंबीच वासुदेव खड़े थे, जिनके सिर पर एक डलिया में शिशु कृष्ण लेटे हुए थे। क्रीडारत शिशु कृष्ण का एक पैर डालिया की एक फाँक में से नीचे लटका दिखाया-गया था। इस पैर के अँगूठे की ऊँचाई वासुदेव के मुँह के बराबर थी। वासुदेव की प्रतिभा के भीतर पतली नली लगी हुई थी। भीतर-ही-भीतर यह नली शिशु कृष्ण के पैर की ऊँचाई तक आकर नीचे को मुड़ जाती थी और वासुदेव की दूसरी टाँग से गुजरती हुई उनके पैर में कटोरे की पेंदी तक चली जाती थी, जहाँ उसे टाँके से पेंदी के एक सुराख से जोड दिया जाता था। वासुदेव प्याले का चमत्कारी खेल यह था कि कटोरे में लगातार पानी भरते हुए हम जब यमुना की बाढ़ का प्रतीक न करें तो पानी बढ़ता हुआ वासुदेव के मुँह तक आता और वहाँ देव शिशु का चरण स्पर्श पाते ही उतरने लगता। यमुना की बाढ़ धीरे-धीरे उतर जाती- प्याला रीता हो जाता। यह भागवत कथा को मूर्तरूप देने वाला खिलौना था।

अज्ञेय ने दूसरे एक खिलौने का भी इसमें ज़िक्र किया है। उसमें उन्होंने बताया कि इसमें राम की छोटी सी प्रतिमा के निकट लाये जाते ही सीताजी तुरंत उनकी ओर उन्मुख हो जाती थीं, लेकिन राम के बदले रावण की प्रतिमा सामने लाने पर सीताजी बड़ी फुरती से मुँह फेर लेती है।

खिलौने में संस्कृति का इतिहास भी छिपा है। आज के खिलौने वैज्ञानिक होते हैं और पुराने खिलौने धार्मिक अखबारी समाजशास्त्री रोज़ दोहराते पाए जाएँगे कि 'निर्धनता अपराध को जन्म देती है। आज की शिक्षा व्यक्तित्व बनाने की ओर ध्यान नहीं देती। अपने खिलौनों से ऊबड़ हुआ बालक अपने आस पास के उपकरणों से खिलवाड करने लगते हैं। वासुदेव प्याला जैसे खिलौने से बच्चों में स्फूर्ति आ जाती है।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय का रचना संसार विविधता से भरा है। उनके यात्रावृत्तांत, आत्मकथा, डायरी, संस्मरण, निबंध आदि में साहित्य का उच्चतम रूप प्रदृष्ट है। 'अज्ञेयः अपनी निगाह में' आत्मकथा के सारे तत्व समाहित हैं। स्वयं के बारे में अत्यंत रोचक दंग से इसमें लिखा गया है। आपकी 'डायरी' में डायरी के तत्वों को समाहित किया गया है। आप इसमें अकेला होने के एहसास पर अकेलापन चुनते नहीं बल्कि स्वीकार करते हैं। 'बीसवीं सदी के आलोक' यात्रावृत्तांत में स्ट ॉकहोम (स्वीडन) की यात्रा का वर्णन बखूबी किया गया है। यह यात्रावृत्तांत बड़े ही रोचक बन प्रस्तुत है। 'वसंत का अग्रदूत' एक संस्मरण है जिसमें महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के व्यक्तित्व पर समग्रता से आपने कलम चलायी है। अत्यंत प्रवाहमयी भाषा में इसे प्रस्तुत किया गया है। 'वसुदेव प्याला' निबंध में पुराने ज़माने का एक खिलौना वसुदेव प्याला पर अत्यंत आकर्षक रूप में लिखा है। 'वसुदेव प्याला' की विशेषता आज भी बरकरार है। वैसे अज्ञेय के व्यक्ति-कृति और जीवन की समग्र रूपरेखा इसमें प्राप्त होते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय की आत्मकथा 'अज्ञेय : अपनी निगाह में'
- अज्ञेय की डायरी 'डायरी'
- अज्ञेय का यात्रावृत्तांत 'बीसवीं शती का गोलोक'
- अज्ञेय का संस्मरण 'वसंत का अग्रदूत'
- अज्ञेय का निबंध 'वसुदेव प्याला'

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वासुदेव प्याला किसका निबंध है?
2. 'बीसवीं शती का गोलोक' किस विधा की रचना है?
3. 'वसंत का अग्रदूत' किसकी रचना है?
4. 'वासुदेव प्याला' क्या है?
5. 'वसंत का अग्रदूत' किस रचनाकार पर केन्द्रित रचना है?
6. 'बीसवीं शती का गोलोक' में किस जगह की यात्रा का वर्णन है?
7. अज्ञेय की डायरी का नाम क्या है?
8. स्टॉकहॉम में कौन-सा सिद्धांत चलता है?
9. अज्ञेय पहली बार निराला जी से कहाँ मिले?
10. "सचमुच वसंत पंचमी के दिन जन्म लेनेवाले निराला हिन्दी-काव्य के अग्रदूत थे"- किसका कथन है?

Answers / उत्तर

1. अज्ञेय
2. यात्रावृत्तांत
3. अज्ञेय
4. खिलौना
5. निराला
6. स्टॉकहॉम (स्वीडन)
7. डायरी
8. उपकरणवाद
9. वाचस्पति पाठक के घर
10. अज्ञेय

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अज्ञेय की आत्मकथा पर एक लेख तैयार कीजिए।
2. अज्ञेय द्वारा रचित संस्मरण की आलोचना कीजिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

3. 'डायरी' पर टिप्पणी लिखिए।
4. 'बीसवीं शती का गोलोक' पर विचार कीजिए।
5. 'वासुदेव प्याला' से अज्ञेय का क्या तात्पर्य है।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल
2. हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश
3. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियों - शिवकुमार शर्मा
4. हिन्दी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैल रस्तोगी

BLOCK - 06

प्रयोगधर्मी अज्ञेय

इकाई 1

अज्ञेय की रचनाओं में प्रयोगशीलता

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय की रचनाओं के परिप्रेक्ष्य से परिचय प्राप्त होता है
- प्रयोगशीलता संबंधी विशेषताओं पर जानकारी प्राप्त करती है
- अज्ञेय की रचनाओं की प्रयोगशीलता के बारे में समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अज्ञेय की रचनाओं में अभिव्यक्त प्रयोगशीलता की विशेषताओं के बारे में पूरा चित्र प्रस्तुत किया गया है। आपकी प्रयोगशीलता में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। आपने अपनी विलक्षण एवं अद्वितीय भाषा के द्वारा भारतीय परंपरा एवं साहित्य को प्रौढ़ी प्रदान की है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

रचनाओं का परिप्रेक्ष्य, पृष्ठभूमि, प्रयोगशीलता

Discussion / चर्चा

सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' हिन्दी रचना संसार का विलक्षण प्रतिभा संपन्न व्यक्ति का नाम है। हिन्दी की कोई ऐसी विधा नहीं है जिसमें अज्ञेय ने अपना हस्ताक्षर न दिया हो। उन्होंने कविता के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, डायरी, यात्रावृत्त, नाटक आदि विधा में भी समृद्ध साहित्य प्रदान कर हिन्दी भाषा को श्री संपन्न किया। 'प्रयोगवाद' शब्द के साथ अज्ञेय और उनके साहित्य को जोड़ा जाता है।

6.1.1 अज्ञेय की रचनाओं का परिप्रेक्ष्य

अज्ञेय की रचनाएँ विवेक और विचार का दीया जलाकर सामान्य जन-जीवन, सामाजिक चेतना और साहित्यिक प्रवृत्तियों की ओर रोशनी फैलाती हैं। अज्ञेय प्रयोगवाद का प्रयोक्ता तथा नयी कविता का शलाका पुरुष है। उनके समय में प्रथम और द्वितीय विश्व महायुद्धों की विभीषिकाएँ, विज्ञान की अतिशय प्रगति और फ्रायडीय मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से संत्रस्त विश्वमानवता नये मूल्यों की खोज में रत रही। नये पुराने की संगम भूमि पर खडी रचनात्मकता को अज्ञेय ने मानवीय धरातल पर खड़ा किया।

6.1.1.1 अज्ञेय की प्रयोगधर्मी रचनाओं की पृष्ठभूमि

अज्ञेय ने अपनी रचनाओं में शब्दों के भीतर की सच्चाई पहचाना और उसे मुखर किया। यह मुखरता भारतीय परंपरा की मुखरता है जिसमें मनुष्य तो हैं ही साथ में पर्व - तीर्थ - नदियाँ भी उपस्थित हैं। यही नहीं अज्ञेय की रचनाओं में पशु-पक्षी जगत भी बहुत है। नए उपमानों के प्रति अज्ञेय अत्यंत आग्रहशील थे। पृष्ठभूमि भले ही परंपरा की रही हो लेकिन उपमान-योजना के आधार के रूप में आपने (1) जाति (3) गुण (3) द्रव्य (4) क्रिया और (5) प्रकृति को लिया है।

अज्ञेय के दृष्टिकोण ने उनको नयी-उपमान-योजना के लिए प्रेरित किया। उसमें कहीं भी नयेपन का हट नहीं। उनके पास नये उपमान भरपूर हैं। नये युग की नयी सौंदर्य चेतना, नया दृष्टिकोण, नये उपमानों के अन्वेषण, सृजन और प्रयोग के लिए उन्हें बाध्य कर देते हैं। उन्होंने अपने काव्य में उपमानों की योजना दो प्रकार के उपमेयों के लिए की है - (1) मूर्त उपमेय (व्यक्ति, वस्तु कृत्रिम तथा नैसर्गिक) और (2) अमूर्त उपमेय (भाव तथा विचार)। कृत्रिम वस्तुएँ उपमेय के रूप में बहुत कम प्रयुक्त हुई हैं। रेल आदि ऐसे ही उपमेय हैं। नैसर्गिक में प्रकृति के विभिन्न रूप देखे जा सकते है। इनके अतिरिक्त उपमेयों में चाह, संशय, कृतज्ञता, वासना आदि आते है।

6.1.1.2 प्रयोग संबंधी अज्ञेय का मतः

प्रयोग पर अज्ञेय ने कहा है- प्रयोग का कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, नहीं है। न प्रयोग अपने आप में इष्ट या साध्य है। ठीक इसी तरह कविता का भी कोई वाद नहीं। हमें प्रयोगवादी कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है जितना हमें कवितावादी कहना। आगे आप लिखते हैं- प्रयोग का हमारा कोई वाद नहीं है, इसको और भी स्पष्ट करने के लिए एक बात हम और कहें। प्रयोग निरंतर होते आए हैं, और प्रयोगों के द्वारा कविता या कोई भी कला, कोई भी रचनात्मक कार्य आगे बढ़ सका है। जो कहता है कि मैंने जीवन भर कोई प्रयोग नहीं किया, वह वास्तव में यही कहता है कि मैंने जीवन-भर - कोई रचनात्मक कार्य करना नहीं चाहा। प्रयोगों का महत्व कर्ता के लिए चाहे जितना हो, सत्य की खोज, लगन, उसमें चाहे जितनी उत्कट हो, सहृदय के निकट वह सब अप्रासंगिक है।

6.1.1.3 अज्ञेय की रचनाओं में प्रयोगशीलता

अज्ञेय ने 'नयी कविता प्रयोग के माध्यम' नामक लेख में कहा है कि नयी कविता की प्रयोगशीलता का पहला आयाम भाषा से संबंध रखता है। प्रत्येक शब्द का प्रत्येक समर्थ उपभोक्ता उसे नया संस्कार देता है। इसी के द्वारा पुराना शब्द नया होता है - यही उसका कल्प है। (इसी प्रकार शब्द का वैयक्तिक प्रयोग भी होता है और प्रेषण का भी माध्यम भी बना दुरूह भी होता है) और बोध- गम्य भी पुराना परिचित भी रहता है और स्फूर्तिप्रद - अप्रत्याशित भी। रचना का विषय और रचना की वस्तु (content) अलग -अलग चीजें हैं। देखा गया है कि नये विषय चुनने पर भी उसकी वस्तु पुरानी रहती है और पुराने विषय पर उसकी वस्तु नयी रहती है। नये कवियों के उपमान जहाँ लोक-जीवन से अलग एक अभिनव क्षेत्र की सृष्टि मात्र है वहाँ अज्ञेय के उपमान लोक जीवन से संपृक्त है।

अज्ञेय की रचनाओं को प्रयोगधर्मी बनाने के पीछे प्रतीक, बिंब-प्रयोग और उनकी भाषा -शैली का बहुत बड़ा हाथ है।

6.1.1.4 योजाना

आधुनिक युग में प्रतीक शब्द का प्रयोग अंग्रेज़ी के 'सिंबल' शब्द के पर्यायवाची के रूप में प्रयुक्त होता है। आज प्रतीक शब्द का प्रयोग परंपरागत के अर्थ से अलग करके देखना ही उचित होगा। अज्ञेय के संदर्भ में उसे उस दृश्य वस्तु को प्रतीक कहा जाता है जो मूल विषय का प्रतिविधान सादृश्य और साहचर्य के आधार पर करती है। प्रतीकों का बल पाकर भाषा में नयी अर्थ शक्ति की अभिव्यक्ति होती है। अंग्रेजी काव्य के प्रतीकवाद से अज्ञेय का संपर्क परोक्ष रहा है। अज्ञेय पर रवीन्द्र काव्य की छाया प्रकट है। महाकवि रवीद्रनाथ ठाकुर येट्स से प्रभावित थे और- अज्ञेय रवीन्द्र से। अज्ञेय की प्रतीक योजाना में वैविध्य है उनकी प्रतीक सृष्टी नए भाव बोध से आपूरित है।

6.1.2 अज्ञेय की भाषा में प्रयोगशीलता

कविता में सार्थक शब्द प्रयोग कवी प्रतिभा का प्रमाण होता है ঃ उनमें तत्सम शब्दों की प्रचुरता होती है ঃअज्ञेय की भाषा तत्सम शब्दों से चलकर लोकजीवन तथा बोलचाल की भाषा की ओर उन्मुख होती है। कविता को अर्थपूर्ण बननेवाले सभी शब्दों का प्रयोग अज्ञेय ने किया है। उनकी वाक्य-रचना में शब्दों का विशेष क्रम और मेल हुआ है। उनकी काव्य भाषा में रूपात्मक भाषा, लाक्षणिक, आलंकारिक और

विधानमूलक होती है। काव्य में लोकप्रचलित शब्दों, संकेतों और मुहावरों का विपुल प्रयोग हुआ है।

प्रगतिवाद ने सामाजिकता के नाम पर विभिन्न भाव-स्तरों को अभिधात्मक बना दिया था। ऐसी स्थिति में नये भाव.बोध को व्यक्त करने के लिए न तो शब्दों में सामर्थ्य था और न परंपरा से मिली हुई शैली में। प्रयोगवादी मानता है कि प्रत्येक अनुभूति का अर्थ और उसका संदर्भ एक बौद्धिक कवि की अनुभूति है, इसलिए बौद्धिकता को काव्यानुभूति से पृथक करके नहीं देखा जा सकता। अज्ञेय की भाषा में प्रयोगशीलता का नया आयाम नज़र आता है। उनकी भाषा नए अर्थ, बोध, प्रतिमान को आत्मसात करते हुए युग सन्दर्भो को व्यक्त करती है।

अज्ञेय की भाषा ने रचनाओं को एक नयी दिशा में एक अनोखी भाव भूमिका प्रदान की है। अज्ञेय भाषा के धनी है। गद्य और पद्य दोनों शैलियों में, उनकी भाषा बडी प्रौढ़ और प्रांजल होती है। पुराने शब्दों की संगति में नये शब्दों के अथवा संस्कृत शब्दों के भण्डार में, बोलचाल के शब्दों का प्रयोग अज्ञेय की भाषा की विशेषता है। अज्ञेय की भाषा को तीन कोटियों में रख सकते हैं;

1. तत्सम प्रधान भाषा
2. सामान्य बोलचाल की भाषा
3. मिश्रित भाषा

उनकी संस्कृत शब्दावली की विशेषता यह है कि उसमें चुने हुए, छोटे - छोटे शब्द सन्निहित रहते हैं।

कौन ऋतु है? रात्रि क्या है?
कौन-सा नक्षत्र गत- शंका द्विधाहत
अभ्र लख भ्रू चाप सा नीचे प्रतीक्षा में
स्तंभित निःशब्द।

दूसरी प्रकार की शैली में अज्ञेय ठेठ बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं। ऐसी शब्दावली में कवि कुछ नये शब्दों का प्रयोग करता है। और कुछ पुराने शब्दों को तोड़-फोड कर नया रूप दे देता है। -

सबेरे सबेरे
नहीं आती बुलबुल
जैसे ही जागा
कहीं पर सभा भागा
अडगता है कागा
काँय। काय, काय

तीसरे प्रकार की शैली में अज्ञेय ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं, जिसमें विभिन्न भाषाओं के शब्द मिलजुल कर कवि की भाषाभिव्यक्ति में योग देते हैं-

तर की मैली झालर के पीछे से बोलेगी-
दया कीजिए जेंटलमैन।

इसके अतिरिक्त भाषा के क्षेत्र में अज्ञेय की प्रयोगात्मक प्रगति का अनुमान उस समय लगाया जा सकता है, जब वह सामान्य भाषा के साथ किसी संस्कृत वाक्य का प्रयोग करके पाठक को चौंकाने का प्रयत्न करता है। तत्सम शब्द और विशेष शब्दों के प्रयोग से उनकी रचनाएँ श्रेष्ठ बन जाती हैं।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय को प्रयोगवादी रचनाओं का प्रयोक्ता माना जाता है। उनकी रचनाओं में प्राप्त प्रयोगशीलता के कारण ही ऐसा माना जाता रहा है। आपने साहित्य की दोनों विधाओं में - गद्य और पद्य- में 'प्रयोग' किया है। अज्ञेय का मानना था कि हमारे प्रयोग का पाठक या सहृदय के लिए कोई महत्व नहीं है, महत्व उस सत्य का है जो प्रयोग द्वारा प्राप्त हो। आपने हिन्दी साहित्य में युग-परिवर्तन कर सकने का जोखिम उठाया लेकिन परंपरा को नहीं छोड़ा। हिन्दी रचनाशीलता की कोई ऐसी विधा नहीं है जिसमें अज्ञेय ने अपना योगदान न दिया हो। अज्ञेय अपने जीवन भर किसी-विचारधारा की गुलामी स्वीकार करने को तैयार नहीं रहे। सदा वे प्रयोग करते रहे। हर बार अलग-अलग प्रयोगों द्वारा विभिन्न स्तरीय रचनाओं की सृष्टी हुई।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय की रचनाओं का परिप्रेक्ष्य
- अज्ञेय की प्रयोगधर्मी रचनाओं की पृष्ठभूमि
- प्रयोग संबंधी अज्ञेय का मत
- अज्ञेय की भाषा में प्रयोगशीलता

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'प्रयोग का कोई वाद नहीं है' - किसने कहा?
2. अज्ञेय पर किस महाकवि की छाया माना जाता है?
3. अज्ञेय ने अपनी रचनाओं में कितने प्रकार के उपमेयों को चुना?
4. अज्ञेय का पूरा नाम क्या था?
5. प्रयोग निरंतर होते आए हैं किसने कहा?
6. आज्ञेय की भाषा को कितनी कोटियों में रख सकते हैं?
7. अज्ञेय प्रतीक को क्या मानते हैं?
8. प्रयोगशीलता का पहला आयाम किससे संबंध रखता है?

Answers / उत्तर

1. अज्ञेय
2. कवींद्र रवीन्द्रनाथ ठागोर
3. दो
4. सचिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
5. अज्ञेय
6. तीन
7. सत्यान्वेषण का साधन
8. भाषा से

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अज्ञेय की प्रयोगधर्मी रचनाओं की पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए।
2. अज्ञेय की रचनाओं की प्रयोगशीलता पर प्रकाश डालिए।
3. अज्ञेय की भाषा की प्रयोगशीलता पर लेख लिखिए।
4. अज्ञेय की रचनाओं की परिप्रेक्ष्य पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल
2. हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश
3. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियों - शिवकुमार शर्मा
4. हिन्दी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैल रस्तोगी

SGOU

इकाई 2

अज्ञेय की कविताओं में नया प्रयोग

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय की कविताओं के नये प्रयोगों के बारे में समझता है
- अज्ञेय की कविताओं के छन्द-विधान की जानकारियाँ प्राप्त करता है
- अज्ञेय की कविताओं के बिंब-विधान का परिचय प्राप्त होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अज्ञेय के काव्यों में दर्शित छन्द विधान, प्रतीक-बिंब विधान, रसदृष्टि आदि का सम्यक अध्ययन किया गया है। साथ में उपमानों पर अज्ञेय की दृष्टि को यथावत प्रस्तुत किया गया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

छन्द विधान, बिंब योजना, रसदृष्टि, प्रतीक योजना, उपमान

Discussion / चर्चा

अज्ञेय के काव्य में छन्द हीनता का आरोप लगाया जाता है लेकिन उनके काव्य में छन्दों की नवीनता, नवीन प्रतीक योजना, नवीन बिंब योजना आदि का परिदृश्य भी मिलता है।

6.2.1 अज्ञेय काव्य में छन्द विधान

जिस पद रचना में मात्रा, वर्ण, यति, गति के नियम और अंत में तुक का विधान हो, उसे छन्द कहते हैं। छन्द के संबंध में अज्ञेय ने बहुत कम कहा है, लेकिन जितना भी कहा है वह उनके छंद विषयक दृष्टिकोण को स्पष्ट करने में पर्याप्त है। छन्द-विधान के क्षेत्र में अज्ञेय ने नये -नये प्रयोग किये हैं। अज्ञेय ने परम्परागत शब्दों के साथ मुक्त छन्द के प्रयोग को एक व्यापक नाम दिया। अज्ञेय के काव्य में प्रयुक्त छन्दों को निम्नलिखित वर्गों में रखा जा सकता है -

1. विशुद्ध परंपरागत प्राचीन छन्द
2. परिवर्तित परंपरागत छन्द
3. मिश्रित छन्द
4. नए छन्द

6.2.1.1 परंपरागत प्राचीन छन्द

इसमें उन्होंने सरस, विद्या छंद, शुद्ध गीता, ताटंक आदि छंदों का प्रयोग किया है। जैसे-

क्षण आते हैं जाते हैं जी/वन गति चलती जाती है
ओठ अनमने रहे काल की/मदिरा ढलती जाती है।
(ताटंक छंद)

6.2.1.2 परिवर्तित परंपरागत छन्द

इस वर्ग के अंतर्गत वे परंपरागत छन्द आते हैं, जिनमें कवि ने अपनी रुचि से परिवर्तन कर दिया

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

है। इस प्रकार के छन्दों में किए गये परिवर्तन के चार रूप हैं -

1. यति परिवर्तन
2. गुरु-लघु योजना में परिवर्तन
3. लेखन शैली परिवर्तन
4. आकार परिवर्तन

6.2.1.3 मिश्रित छन्द

ये छन्द विभिन्न छन्दों के मेल से बनाये गये हैं। अर्थात भिन्न चरणों के बराबर चरणों के बराबर चरणों को मिला कर प्रयोग किया गया है। जैसेः सार अ सरसी, शंकर अ सरसी आदि।

6.2.1.4 नये छन्द (मुक्तक छन्द)

अज्ञेय ने नये छन्दों का प्रयोग भी किया है जिनका नामोल्लेख छन्द-शास्त्रों में नहीं मिलता है। जैसे : 35 मात्रा का छन्द, 40 मात्रा का छन्द आदि।

उदा : अम्बार है जूठी पत्तलों का / निश्चय ही पाहुने आये थे

बिखरी पडी है डालियाँ पत्तियाँ / किसी ने तोरण सजाये थे।

6.2.2 अज्ञेय के काव्य में बिंब योजनाः

बिंब शब्द का प्रयोग साहित्य और मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से होता है। किसी वस्तु विशेष का प्रत्यक्ष कल्पनात्मक चित्र ही बिंब होता है। विषय के प्रत्यक्ष 'चित्रण के लिए अनावश्यक शब्दों का वर्जन करते हुए वर्णन करना ही बिंब की पहली शर्त है। चित्रात्मकता बिंब की प्राथमिक विशेषता है। बिंब शब्द चित्र होता है। अंग्रेजी काव्य में प्रचलित बिंबवाद के प्रति अज्ञेय भी सजग थे। अज्ञेय पर बिंबवाद का प्रभाव सीधा न पड़कर परोक्ष रूप में एज़रा पाउण्ड और टी-एस- एलियट से पड़ा। हिन्दी के रचनाकारों में अज्ञेय की रचनाएँ बिंब और प्रतीक की दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण है। अज्ञेय में जो बिंब सहज प्राप्त है, उनको निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है

1. दृश्य बिंब
2. मानस बिंब
3. अलंकृत बिंब
4. यौन बिंब

अज्ञेय बिंब प्रयोग में नवीनता के समर्थक रहे हैं। उन्होंने बिंबों के माध्यम से स्पष्ट, अनुभूतिगम्य और सजीव प्रद्धति का सही और असली रूप प्रस्तुत करते हैं। बिंबों की प्रचुरता के कारण उनकी रचनाओं में प्रयुक्त बिंबों की संख्या बहुत अधिक है। दैनिक जीवन की नगण्य चीजों से लेकर गहन आध्यामिक निगूढताएँ तक उनके बिंबों के विषय बने हैं। भाव और शिल्प का अद्भुत सम्मेलन इन बिंबों में हुआ है। काल्पनिक उडान, भावतीक्ष्णता और चित्रात्मकता के कारण ये बिंब साहित्य की अक्षय निधि बने हैं। अज्ञेय के रागात्मक मन का विस्तार और अनुभव क्षेत्र की व्यापकता अपनी रचाओं में दिखाई देते हैं। मौलिक रूप से प्रयोक्ता होने के कारण उनकी बिंब योजना विशिष्ट और मौलिक होती है।

6.2.3 अज्ञेय के काव्य में रस दृष्टि

रस की दृष्टि से अज्ञेय में श्रृंगार, करुण, वीर, बीभत्स और वात्सल्य विशेष रूप से देखा जा सकता है। इनमें भी विशेष रूप से श्रृंगार के संयोग वियोग पक्ष ही प्रधान है। छायावादी युग के अज्ञेय पर प्रसाद, निराला, गुप्त जी, रवीन्द्र आदि का सीधा प्रभाव था। डी. एच लोरेंस, टेनीसन, फ्रायड आदि के प्रभाव से यौन दृष्टि के विकसित लक्षणों और भावनाओं का प्रकाशन उनके काव्य में श्रृंगार की पीठिका में जैसे

"पीड़ा की उच्छ्वासों -सी कंपती हैं शाखाएँ सरसर (वियोग श्रृंगार)

एक ही टीस से आँसु उमड़ जाता है" (करुणरस)

'युद्ध हेतु कटिबद्ध हुआ बस, पैंतिस कोटि-कृतान्त यहाँ है।' - रौद्र रस

6.2.4 अज्ञेय के काव्य में उपमानों का नया प्रयोग :

नये उपमानों के प्रति अज्ञेय आग्रहशील है। परंपरा से चले आ रहे उपमानों से अधिक उनमें नये सृजन की अनुभूति दिलाई पड़ती है। अर्थात् कवि अज्ञेय

के दृष्टिकोण ने उनकी नयी उपमान योजना के लिए प्रेरित किया। नये युग की नयी सौंदर्य चेतना, नया दृष्टिकोण कवि को नये उपमानों के अन्वेषण, सृजन और प्रयोग के लिए बाध्य सा कर देते हैं। अज्ञेय ने अपने काव्य में उपमानों की योजना दो प्रकार के उपमेयों के लिए की हैं-

(1) मूर्त उपमेय (व्यक्ति, वस्तु कृत्रिम तथा नैसर्गिक) और (2) अमूर्त प्रयोग (भाव तथा विचार) उपमेयों की भाँति 4 उपमानों में के भी दो भेद किये जा सकते हैं -

(1) मूर्त उपमान और

(2) अमूर्त उपमान

जैसेः उल्लास मेरा घोडा
ग्रीष्म तो न जाने कब आयेगा
-(मूर्त उपमान)

'झर
नदी के फूल के चल नरसल
झर उमड़ा हुआ नदी का जल
ज्यों क्वारपने की केंचुल में
यौवन की गति उद्दाम प्रबल।'
- (अमूर्त उपमान)

अपने काव्य में आपने उपमेय क्षेत्र में प्रकृति से लेकर मानव जीवन तक को व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। इस क्षेत्र में उनकी प्रयोगात्मक प्रगति का मूल्याँकन काव्य की संप्रेषणीयता से ज्ञात होती है। अज्ञेय के उपमान लोक-जीवन से संपृक्त है और उनमें अस्वाभाविकता का दोष कतई नहीं देखा जा सकता।

6.2.5 प्रतीक योजना में अज्ञेय का प्रयोग

अज्ञेय काव्य में प्रयुक्त प्रतीकों का अध्ययन करने पर ज्ञात हो जाता है कि आप प्रतीक को सत्यान्वेषण का साधन मानते हैं। इसी कारण काव्य सत्य की अभिव्यक्ति के लिए कवि आदिम काल से प्रतीकों, नये प्रतीकों की सृष्टि करता आया है। अज्ञेय के काव्य में प्रयुक्त प्रतीकों को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

1. सामान्य प्रतीक
2. नवीन प्रतीक
3. वैयक्तिक प्रतीक और
4. यौन प्रतीक

जैसे - 'हिरोशिमा' नामक कविता में सूरज एटम बंब का प्रतीक है।

'सागर में ऊबडूब करती खाली बोत्तल
जाने किसके कब के (और कहाँ पर)
घडी-दो घडी सुख की साक्षी
और यह सागर जिसे नहीं है
देशकाल का भोर-छाँट
नहीं है रूपाकार।"

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय के भावपक्ष और शिल्पपक्ष में नवीनता रही है। आपने नये प्रतीकों, बिंबों, उपमानों और नयी अभिव्यक्तियाँ दी हैं। अज्ञेय के काव्यों में प्रयुक्त छन्दविधानों की बारीकियों पर दृष्टि डाली गयी है। उनके काव्य पर छन्दहीनता का आरोप निराधार है। उनकी प्रयोगात्मकता प्रकृति के अनुरूप ही रही है। परंपरा का अनुसरण करने पर भी नवीनता की खोज आप करते हैं। नये नये उपमानों के निर्माण में आप सिद्धहस्त हैं। रस की दृष्टि से भी आपके काव्य प्रौढ़ हैं। नवीन कवियों की रचनाओं को सम्मिलित कर तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक जैसे ग्रंथों का प्रणयन इसलिए किया गया कि आप स्वयं राहों के अन्वेषी हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय की रचनाओं में छन्द विधान
- अज्ञेय की रचनाओं में बिंब योजना
- अज्ञेय की रसदृष्टि
- अज्ञेय काव्य में प्रतीक योजना
- अज्ञेय काव्य में उपमान

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सामान्यतया अज्ञेय के काव्य में प्रयुक्त छन्दों को कितने वर्गों में रखा जा सकता है?
2. दो छन्दों के मेल को क्या कहते हैं?
3. मुख्यतः अज्ञेय के काव्य में उपमानों के कितने प्रकार होते हैं?
4. पीड़ा की उच्छ्वासों सी कंपती है शाखाएँ सरसर – में किस रस का द्योतन है।
5. 'हिरोशिमा' नामक कविता में सूरज किसका प्रतीक है?
6. 'चौथा सप्तक' का संपादक कौन है?
7. अज्ञेय की रचनाओं में मुख्यः कितने प्रकार के बिंब पाए जाते हैं?
8. 'बड़ा कवि वाक सिद्ध होता था, और भी बड़ा कवि रस सिद्ध होता था"- किसकी उक्ति है?

Answers / उत्तर

1. चार
2. परिवद्ध छन्द
3. दो
4. वियोग श्रृंगार
5. बिंब
6. अज्ञेय
7. चार
8. अज्ञेय

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अज्ञेय काव्य के छन्द विधान पर विचार कीजिए।
2. अज्ञेय काव्य के बिंब विधान पर एक लेख तैयार कीजिए।
3. अज्ञेय के काव्य में उपमानों के नए प्रयोग पर विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. प्रतीक योजना में अज्ञेय के प्रयोग पर प्रकाश डालिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल
2. हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश
3. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियों - शिवकुमार शर्मा
4. हिन्दी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैल रस्तोगी

SGOU

इकाई 3

अज्ञेय की कहानियों की शैली

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय की कहानियों की शैलियों से परिचय प्राप्त होता है
- कहानी सृजन संबंधी अज्ञेय के मतों से परिचय प्राप्त होता है
- कहानी के यथार्थ पर अज्ञेय के विचारों को समझ सकता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अज्ञेय की रचनाएँ हिन्दी साहित्य की धरोहर हैं। उनकी रचनाएँ विभिन्न शैलियों पर रचित हैं। शैलीगत रचनाओं में मनोवैज्ञानिकता एवं जीवन-यथार्थ का पुट डाला हुआ है। इससे रचनाओं में अनोखे प्राण आ पाना स्वाभाविक है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अज्ञेय की कहानियों की शैलियाँ, अज्ञेय के मत, अज्ञेय और कहानी का यथार्थ

Discussion / चर्चा

अज्ञेय शुद्ध मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के प्रतिनिधि कहानीकार हैं। उनकी कहानी कला की मूल-पृष्ठभूमि व्यक्ति चरित्र है। इन्होंने केवल व्यक्तिगत पहलू को मुख्य केन्द्र बनाकर अपनी सब तरह की कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों को मुख्य रूप से रख सकते हैं-

1. सामाजिक आलोचना संबंधी
2. राजनीतिक बंदी-जीवन संबंधी
3. चरित्र विश्लेषण संबंधी
4. प्रतीकों के सहारे मानसिक संघर्षों के अध्ययन संबंधी

इन चारों धरातल की कहानियाँ अपने दृष्टिकोण और देश-काल परिस्थिति में इतनी विस्तृत, व्यापक और गंभीर है कि मानववाद अपने अधिक-से-अधिक रूपों में इनका उपजीव्य बन गया है। इसके लिए अज्ञेय की कहानी कला में असाधारण विज्ञान कौशल और शिल्पविधि का परिचय मिलता है। चरित्र विधान और शैली-निर्माण में इनकी मौलिकता अपूर्व है।

6.3.1 अज्ञेय की कहानियों की शैली

कहानी निर्माण में शैली की विविधता और विभिन्न प्रयोग तथा प्रकार, अज्ञेय की शिल्प विधि की सबसे बड़ी विशेषता है। इनमें शैलीगत विविधताएँ पाई जाती हैं। अलग चरित्रों-व्यक्तियों के अध्ययन के लिए उन्हें अनुरूप कहानी निर्माण की शैलियाँ ढूँढनी पड़ीं जिन्हें हम छः भागों में रख सकते हैं -

1. कथात्मक शैली
2. आत्मकथात्मक शैली
3. नाटकीय शैली

4. पत्रात्मक शैली
5. प्रतीकात्मक शैली - उदाः सांप, धीरज etc...
6. मिश्रित शैली

1. कथात्मक शैली

कथात्मक शैलियों की प्रतिनिधि कहानियों में 'कैसेन्ट्रा का अभिशाप', 'आदम की डायरी', 'पगोडा वृक्ष', 'शरणदाता', 'हीली बोन की बत्तखें' आदि कहानियाँ मुख्य हैं, लेकिन यहाँ अज्ञेय ने कथात्मक शैली में कुछ नए प्रयोग भी किए हैं। अन्य पुरुष में वर्णनात्मकता प्रायः विश्लेषण के आधार पर ही अभिव्यक्त हुई है। अन्य पुरुष में उत्तर पुरुष की स्थापना और अन्य पुरुष में स्मृतियों-चिंतनों द्वारा कहानी में विकास के विधान प्रस्तुत किए हैं जैसे 'इन्दु की बेटी', 'वे दूसरे', 'जयदोल और पठार का धीरज'।

2. आत्मकथात्मक शैली

आत्मकथात्मक शैली अज्ञेय की सर्वप्रिय शैली है। क्योंकि इसके माध्यम से अर्थात 'मैं" के सहारे चरित्र-चित्रण में सुविधा प्राप्त होती है। 'अमरवल्लरी', 'विपथगा', 'लेटर बॉक्स', 'रमंते तत्र देवता'। 'साँप', 'मेजर चौधरी की वापसी' आदि इस शैली की उत्कृष्ट कहानियाँ हैं। कहानी का निर्माण जहाँ मैं के माध्यम से अबाध गति से होता है वहाँ मैं से संबंधित अनेक अनुभूतियों, स्मृतियों से भी संबंधित अनेक चित्रों के विश्लेषण प्रस्तुत होते हैं। इस शैली के अंतर्गत संपूर्ण कहानी का विकास घटनाओं और द्वन्द्वों के सहारे होता है।

3. नाटकीय शैली

'कवि प्रिया', 'बसंत' जैसी कहानियाँ इस शैली के अंतर्गत आती हैं। इसमें कविप्रिया तो एकांकी-नाटक-शिल्पविधि में लिखी गयी है। इसे कहानी कहना ही अवैज्ञानिक है। 'वसंत' में नये शिल्पगत प्रयोग के दर्शन होते हैं। यहाँ शैली एकांकी, नाटक और कहानी के बीच से चलती है। इसमें दोनों के तत्वों का सुन्दरतम - तादात्म्य (समन्वय) हुआ है और उससे एक नई कला-वस्तु की अवधारणा हुई।

4. पत्रात्मक शैली

'सिगनेलर' जैसी कहानियाँ इस शैली के अंतर्गत आती हैं। इस शैली में भी कुछ विशेषता है। पाँच पत्रों के समन्वय से सिगनेलर कहानी की अभिव्यक्ति हुई है। अंतिम दो पत्र डायरी के पृष्ठों के रूप में है क्योंकि उस स्थल पर कहानी अपने चरमोत्कर्ष तथा चरम परिणति पर पहुँचती है। कहानी में अबाध गति उत्पन्न करने के लिए कहानीकार ने एक ही पत्र को दो-तीन भागों और तिथियों में बाँट कर लिखा है।

5. प्रतीकात्मक शैली

प्रतीकात्मक शैली अज्ञेय की कहानी-कला का एक ललित पक्ष है। जहाँ भी इन्हें मानसिक संघर्षों के अंतस्तल में जाकर उसका उद्घाटन प्रस्तुत करना पडा है, वहाँ इन्होंने प्रायः इसी शैली को अपना साधन बनाया है। अतएव इस शैली से निर्मित इनकी कुछ कहानियाँ, जैसे 'चिडियाघर' के प्रतीक विभिन्न प्रकार के जीवजन्तु हैं। 'पुरुष का भाग्य', 'पठार का धीरज' और 'साँप' में क्रमशः कोठरी, पठार और साँप, इसके कलात्मक प्रतीक हैं। इन प्रतीकों और कहानी के विभिन्न मानसिक संघर्षों का पूर्ण सफलता से तादात्म्य उपस्थित हुआ है।

6. मिश्रित शैली

शिल्पविधि की दृष्टि से जो कहानियाँ उच्चकोटि की हैं वे इस शैली में निर्मित हुई है। इसके अंतर्गत ऐतिहासिक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, पत्रात्मक और प्रतीकात्मक आदि सभी शैलियों का सामूहिक सहारा इन्होंने लिया है और इस मिश्रित शैली से कहानी में उच्चकोटि के चरित्र-चित्रण का परिचय दिया है। छाया, द्रोही और नंबर दस इस शैली की प्रतिनिधि कहानियाँ हैं।

6.3.2 अज्ञेय की शैली का सामान्य पक्ष

शैली के सामान्य पक्ष अर्थात् चित्रण, वर्णन, कथोपकथन, भाषा-सौष्ठव और शब्द-संयम आदि में अज्ञेय का हस्तलाघव और शिल्पगत निपुणता दोनों अपनी पूर्ण सफलता पर हैं। कथोपकथन प्रायः

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

छोटे-सुगठित और व्यंजनात्मक हुए हैं। अज्ञेय की गद्य शैली में सर्वत्र आश्चर्यजनक संयम, गंभीरता, चयन और परिष्कार मिलता है। यही कारण है कि इनकी भाषा की अभिव्यक्ति सदैव सफल रही है।

6.3.3 कहानी सृजन संबंधी अज्ञेयजी का मत

कहानी सृजन संबंधी अज्ञेयजी का कथन है - 'कुछ लेखक ऐसे होते होंगे जो अपनी रचनाओं के बारे में सोचते नहीं। मैं उनमें से नहीं हूँ। बिना किसी तात्कालिक कारण के भी लिख चुका हूँ, उसके बारे में जब तक सोचता रहता है क्योंकि विश्वास करता हूँ कि इससे आगे जो लिखूँगा उसके लिए पटिया साफ हो सकेगी। फिर जब किसी पुस्तक की भूमिका लिखनी पड़ती है तब उसके बारे में और सोचना पडता है। उसे भी हितकर ही मानता हूँ क्योंकि उस चिंतन के सहारे लेखक इस रचना से थोड़ी दूर हट जाता है, उसे कुछ तटस्थ होकर देख लेता है और उस निस्संगता को थोड़ा और पुष्ट कर लेता है और रचना पूरी हो जाने के बाद उसके प्रति हो जानी चाहिए - इदं सरस्वत्यै इदंन मम।

6.3.4 कहानी के यथार्थ पर अज्ञेय का मत

कहानी के यथार्थ पर अज्ञेय ने कहा है - 'अगर काल की चूल उखड़ी हुई है तो यथार्थ क्या होता है। यथार्थ की पकड़ की जो चर्चा है, उस पकड़ या पहचान के बारे में जो दावे हैं, उनका क्या होता है। स्वयं कहानी का क्या होता है, जो इस पहले से ही चूल उखडे हुए काल के भी केवल एक विखडित अंश का चित्र है। अब यथा और अर्थ दोनों पक्षों के लेकर बहुत से प्रश्न उभर आते हैं। यथास्थिति की पहचान कैसे होती है? कौन करता है? अर्थ हम कैसे जानते है? क्या घटनाओं के अपने अर्थ होते हैं, या हम उन्हें अर्थ दे देते हैं? अगर हम उन्हें अर्थ दे देते हैं, तो यह हम कौन है? कहानीकार या आलोचक या पाठक के अर्थ का निरूपण इसलिए विषयी-सापेक्ष या सब्जेक्टिव नहीं है?

अन्यत्र मैंने यथार्थ की पहेली को एक दूसरे रूप में देखा है। अगर हम यथार्थ के भीतर हैं तो उसे देखते कैसे हैं? अगर हम उसके बाहर हैं तो वह यथार्थ के भीतर हैं तो उसे देखते कैसे हैं? अगर हम उसके बाहर हैं तो वह यथार्थ कैसे हैं? मैं जानता हूँ कि समस्या का यह निरूपण एक सर्जक की समस्या का निरूपण हैं। यानी यह पहेली वास्तविकता के अर्थ में है यथार्थ के बारे में नहीं। संप्रेष्य रचना के रूप में यथार्थ की पहचान के बारे में है।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय की शैली एक जैसी नहीं रही। उन्होंने अपने लेखन हेतु अलग-अलग शैलियों को अपनाया - कथावस्तु शैली, पत्रात्मक शैली, नाटकीय शैली, प्रतीकात्मक शैली और मिश्रित शैली। सारी कहानियों में मनोवैज्ञानिकता का पुट अवश्य देखा जा सकता है। उन्होंने अपनी कहानी में यथार्थ को ढूँढना चाहते हैं और यथार्थ के अर्थ को पहचान कर उसे पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। उनके लिए 'प्रयोगवादिता" का बदलता स्वरूप कहानी लेखन का यथार्थ था। उनकी लिखी बहुत सारी कहानियाँ नवीनता का बोध कराते हुए प्रतिष्ठित है। विभिन्न शैलियों में मानव जीवन के यथार्थ का चित्रण कर पाठकों - छात्रों को अपने साहित्य के अनेक अनछुए पक्षों को उजागर करने का प्रयास किया है।

अज्ञेय ने कुल 67 कहानियाँ लिखीं अधिकांश साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अज्ञेय की जीवन सम्बन्धी अवधारणा यथार्थ पर आधारित है। उनकी कहानियाँ रूप एवं प्रयोग की दृष्टि से विश्लेषणीय है। अपनी कहानियों में जीवनानुभव का मौलिक, अप्रतिम विशिष्ट और महत्वपूर्ण रूप प्रस्तुत किया है। अज्ञेय कहानी को 'एक क्षण की जीवन स्थिति का सच - एक दौडती हुई लहर का गतिचित्र' कहकर परिभाषित करते हैं ।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय की कहानियों की शैली
- कथात्मक शैली
- आत्मकथात्मक शैली
- नाटकीय शैली
- पत्रात्मक शैली
- प्रतीकात्मक शैली
- मिश्रित शैली
- कहानी पर अज्ञेय के मत

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'शरणदाता' किस शैली में रचित कहानी है?
2. 'अमरवल्लरी' किस शैली में रचित कहानी है?
3. 'बसंत' किस शैली में रचित कहानी है?
4. 'लेटर बॉक्स' किस शैली में रचित कहानी है?
5. 'सिगनेलर' किस शैली में रचित कहानी है?
6. 'चिडियाघर' किस शैली में रचित कहानी है?
7. 'छाया' किस शैली में रचित कहानी है?
8. कुछ लेखक ऐसे होते हैं जो अपनी रचनाओं के बारे में नहीं सोचते, मैं उनमें से नहीं हूँ - किसका कथन है?

Answers / उत्तर

1. कथात्मक शैली
2. आत्मकथात्मक शैली
3. नाटकीय शैली
4. आत्मकथात्मक शैली
5. पत्रात्मक शैली
6. प्रतीकात्मक शैली
7. मिश्रित शैली
8. अज्ञेय

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. कथात्मक शैली में रजित अज्ञेय की कहानियों पर अपनी राय दीजिए।
2. पत्रात्मक शैली क्या है?
3. आत्मकथात्मक शैली की विशेषताएँ क्या है?
4. नाटकीय शैली पर प्रकाश डालिए।
5. प्रतीकात्मक शैली पर एक टिप्पणी लिखिए।
6. कहानी के सृजन संबंधी अज्ञेय का मत क्या है?

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल
2. हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश
3. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियों - शिवकुमार शर्मा
4. हिन्दी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैल रस्तोगी

इकाई 4

अज्ञेय के उपन्यासों में नए-नए प्रयोग

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अज्ञेय के उपन्यासों से परिचय प्राप्त होता है
- अज्ञेय के उपन्यासों के प्रयोगों के बारे में जनकारी प्राप्त होती है
- मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद आदि को समझ सकता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय के उपन्यास 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' और अपने 'अपने अजनबी' में प्रदृष्ट वादों एवं प्रयोगों के बारे में अध्ययन हुआ है और उपन्यास के क्षेत्र में अज्ञेय के स्थान का निर्णय किया। अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद आदि का प्रयोग विशिष्ट होता है। अज्ञेय के उपन्यास हिन्दी साहित्य की रीढ़ की हड्डी है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अज्ञेय के उपन्यास, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, प्रयोगवाद, प्रयोगधम उपन्यास

Discussion / चर्चा

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की रचनाओं में व्यक्ति के अंतर्मन के सूक्ष्म तलों का विश्लेषण और आकलन मिलता है। यह समष्टि सूक्ष्मता से व्यक्ति सूक्ष्मता की यात्रा अज्ञेय में विशेष रूप से दिखाई दी है। नये वैज्ञानिक अनुसंधान एवं ज्ञान ने उपन्यासकार की दृष्टि बदल डाली। 'प्रयोगवादी' कहलानेवाले अज्ञेय में 'फ्रायड' और उनका सिद्धांत समाहित हो गए। मनेविश्लेषण पद्धति ने व्यक्ति मानस और व्यक्ति चेतना की अनुभूतियों पर नया प्रकाश डाला। इससे उपन्यासकार को व्यक्ति मानस को समझने में बड़ी सहायता मिली। उनके उपन्यासों में मानसिक संघर्ष का विश्लेषण विशेष महत्व रखता है।

अज्ञेय की दृष्टि में व्यक्ति में ही समाज का सही प्रतिबिंब है। व्यक्ति ही सामाजिक अभिव्यक्ति का माध्यम है। अज्ञेय के उपन्यासों का क्षेत्र व्यक्ति चिंतन, व्यक्ति हित एवं व्यक्ति विलास की जीवन दृष्टि से अनुप्राणित है। अज्ञेय के व्यक्ति चरित्र के आधार पर निर्मित उपन्यासों की दृष्टि ही सर्वमान्य है और इसी आधार पर उनके उपन्यासों की कथावस्तु का विवेचन सही होगा। अज्ञेय के तीन उपन्यास प्रकाशित हुए हैं,

1. शेखर एक जीवनी - भाग -1 (सन् 1941 ई)
2. शेखर एक जीवनी - भाग 2 (सन् 1944 ई)
3. नदी के द्वीप (सन् 1951 ई)
4. अपने अपने अजनबी (सन् 1961 ई)

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

6.4.1 "शेखर एक जीवनी" में प्रयोग

'शेखर एक जीवनी' अज्ञेय का पहला उपन्यास है जिसका पहला भाग सन् 1940 में और दूसरा सन् 1944 में प्रकाशित हुआ। शेखर कथा का नायक है। उसके चारों ओर जो घटनाओं का जाल और परिवेश का दबाव है, उनके माध्यम से अज्ञेय ने शेखर के अचेतन और अवचेतन मन को विश्लेषित किया है। 'शेखर एक जीवनी" का कथानक घनीभूत वेदना की केवल एक रात में देखे हुए विशन (vision) को शब्दबद्ध करने का प्रयत्न है। फाँसी के पूर्व के कुछ क्षणों में अतीत को पुनः जी लेने की उत्कट, तीव्र और स्मृतिजन्य विधा है। अज्ञेय ने कहा है कि उनके चरित्रों में मेरे अभिप्रेत, मेरे कथ्य का एक तन्तु है, जो एक हैं, अविभाज्य है, मेरी ओर से जीवन की आलोचना और जीवन का दर्शन है। 'जीवनी' गढ़ते हुए मैंने कला-वस्तु गढ़ने का यत्न किया है। अज्ञेय का शेखर कोई बड़ा आदमी नहीं है, वह अच्छा भी नहीं है। लेकिन वह मानवता के संचित अनुभव के प्रकाश में ईमानदारी से अपने को पहचानने की कोशिश कर रहा है। अज्ञेय के शेखर में अज्ञेय का जीवन दर्शन है, जीवन की आलोचना है, भक्ति की ईमानदारी है, अच्छाइयाँ और बुराइयाँ भी हैं।

प्रयोग की दृष्टि में शेखर की कथावस्तु में क्रमबद्धता और एक सुनियोजित श्रृंखला का अभाव है। वह क्षण में जीना चाहता है। अज्ञेय ने बाल मनोविज्ञान का इसमें पूरा उपयोग किया। शिशु के मन में जो सहज संवेदनायें होती हैं, ईश्वर संबंधी, जन्म संबंधी, माता पिता, बहन, परिचिता के यौन-व्यापार संबंधी जो जिज्ञासाएँ मन में होती हैं, वे सभी शिशुकाल की जिज्ञासाएँ शेखर में हैं। शेखर जन्मजात विद्रोही है। वह जीवन के हर क्षेत्र में चुनौतियों को स्वीकार करता है, उनसे लडता है, और सदा आगे बढ़ता है। कहीं भी समझौता नहीं करता। वह अहंवादी है। लेकिन यहाँ 'अहं' का अर्थ घमण्ड नहीं है। शेखर में अहं, भय और सेक्स-इन तीनों को जीवन की महान प्रेरणाएँ मानी जाती हैं। शेखर में यौन भावना, आत्मरति, समलिंगी रति, विपरीत रति तीन बिंदुओं पर दिखाई पड़ती है। शेखर का विद्रोह सामान्यतः रोमेण्टिक प्रकार का है। यहाँ अज्ञेय ने एक विशेष प्रकार का प्रयोग किया है कि शेखर का विद्रोह और प्रेम दोनों ही रोमेंटिक ढंग के हैं। शशि उपन्यास की नायिका है वह 'आत्मपीडन' द्वारा शेखर को अभिभूत करती है। जेल में बाबा मदनसिंह, रामजी और मोहसिन से वह संवेदना के स्तर तक पहुँचता है। शेखर के व्यक्तित्व को बनानेवाली शक्ति शशि है। रागात्मकता उसे हिंसालु और क्रूर खलनायक जैसा होने से बचाता है। शेखर एक जीवनी नामक उपन्यास में एक व्यक्ति की अंतश्चेतना की भावभूमियों होते विकारों की प्रयोगात्मक अभिव्यक्ति मिलती है।

6.4.2 'नदी के द्वीप' में प्रयोग

'नदी के द्वीप' अज्ञेय का 1951 में प्रकाशित दूसरा उपन्यास है। यह प्रणयमूलक उपन्यास है। नदी के द्वीप के आदर्श के संबंध में अज्ञेय ने स्पष्ट संकेत दिया है। 1. दर्द के जीवन में आस्था और 2. दर्द से मंजकर व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास, पहला आदर्श चरित नायक भुवन का है और दूसरा प्रमुख स्त्रीपात्र रेखा का।

'नदी के द्वीप' कथारूप में लिखी गई एक अद्वितीय रचना है। उपन्यास का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है और अर्थसंगत भी। इसका मुख्य स्वर मनोविश्लेषात्मक है। अहं, यौन और प्रेम तथा वासना के भावों की संपृक्ति इसमें है। इस उपन्यास का केन्द्र बिंदु यौन-भाव है। भुवन एक वैज्ञानिक, भावुक, संवेदनशील और कलारुचि संपन्न पात्र है जो रेखा को पाने के लिए एक आंतरिक तडप से पीडित है। रेखा सुशिक्षित एवं संवेदनशील नारी है जिसने अपने वैधानिक पति हेमेन्द्र से संबंध विच्छेद कर लिया है। वह भुवन के प्रति समर्पित होती है और अंत में डॉ.रमेशचन्द्र के साथ विवाह कर लेती है। गौरा, चन्दुमाधव आदि पात्र भी यौन भाव से पीडित है। वे अपनी अपनी रुग्ण कुंठाओं संवेदनाओं और दर्द की आकुल अनुभूतियों को अपने अपने स्तर पर जीते हैं। इसमें प्रणय का विकास मनोवैज्ञानिक ढंग से हुआ है। इसकी प्रणय

संवेदना असाधारण है। अज्ञेय ने क्षण क्षण जीनेवाली पश्चिम की अस्तित्ववादी चिंतन को भारतीय रूप में प्रस्तुत किया है।

6.4.3 'अपने अपने अजनबी' में प्रयोग

अस्तित्ववाद का प्रयोग अपने-अपने अजनबी उपन्यास की विशेषता है। मनुष्य को यथार्थ के केन्द्र से बहिष्कृत करनेवाले प्रकृतिवाद के विरुद्ध अस्तित्ववाद ने आवाज़ उठाई। अस्तित्ववाद ने भाव और विचार के विरुद्ध जीवन का विद्रोह स्थापित किया। 'अपने अपने अजनबी' में संबंधों के टूटने की कथा है। सारे संबंधों में विच्छिन्न सेल्मा और योके अधिकाधिक अकेली और अजनबी होती चली गयी है। यह उपन्यास तीन उपशीर्षकों में बंटा है 1. योके और सेल्मा 2. सेल्मा और 3. योके।

योके ईश्वर को नहीं मानती। मृत्यु को झूठ मानती है। सेल्मा के तर्कों से पराजित योके सेल्मा का गला घोंटने की इच्छा है। बाद में दोनों में अंतरंगता बढ़ती है। कैंसर से पीड़ित सेल्मा मर जाती है। योके की चारों तरफ़ मृत्युगंध भरी रह जाती है। ईश्वर से उसका विरोध या योके उन्मादिनी होकर ईश्वर को गाली देने लगी। सेल्मा की कब्र बनाते सल्मा वह अनुभूति और ईश्वर को एक मान लेती है। सेल्मा प्राकृतिक रहस्यमय दर्शन के द्वारा अपमान की कटु - अनुभूति से एकदम विक्षुब्ध हो जाती है।। अंत में वह जर्मनों द्वारा वेश्या बना दी जाती है। वह अंत में पागल हो जाती है और एक अच्छे भारतीय आदमी जगन्नाथन के सामने आत्महत्या कर लेती है।

इस उपन्यास का केन्द्रीय भाव मृत्यु से साक्षात्कार है। यह औपन्यासिक क्षेत्र में नवीनतम प्रयोग था। मृत्यु की आशंका से व्यथा और करुणा का उद्रेक होना अपने अपने अजनबी को विशिष्ट बना देता है। अस्तित्ववादी ईश्वर, आस्था, करुणा और नैतिकता आदि को नहीं मानता, क्योंकि मृत्यु ही चरम सत्य है। निरा अस्तित्ववाद निरीश्वरवाद होता है लेकिन उसमें भारतीय आस्था का मेल करके अज्ञेय ने नई दीप्ति दी है।

Critical Overview / अवलोकन

अज्ञेय ने अपने उपन्यासों के लिए 'वस्तु-चयन' प्रयोगों के अनुसार ही लिया है। कहा जा सकता है कि उनके कथा साहित्य का मूलाधार व्यक्ति चरित्र और मनोविज्ञान है। अज्ञेय का निजी दृष्टिकोण रहता है। उनके उपन्यासों का आधार संपूर्ण समाज होता है। उपन्यास पर आपने लिखा है - 'उपन्यास अनिवार्यतया पूरे समाज का चित्र हो, यह माँग बिलकुल गलत है। उपन्यास की परिभाषा के बारे में यह भ्रान्ति साहित्य के सामाजिक तत्व को गलत समझने का परिणाम है। कह लीजिए छिछली या विकृत प्रगतिवादिता का परिणाम है। अज्ञेय समाज का प्रतिबिंब व्यक्ति में ही देखता है। समाज अपनी अभिव्यक्ति व्यक्ति के माध्यम से ही करता है। अपने तीनों उपन्यासों के द्वारा आप यह कहना चाहते हैं कि आपकी उपन्यास कला के मूल में समष्टि मंगल तथा व्यक्ति हित की विचार धाराओं का विश्लेषण अवश्य दिखता है। अतः कहा जा सकता है कि अज्ञेय की कथावस्तु वैविध्यपूर्ण है।

Recap / पुनरावृत्ति

- अज्ञेय का उपन्यास साहित्य
- शेखर एक जीवनी में प्रयोग
- नदी के द्वीप में प्रयोग
- अपने अपने अजनबी में प्रयोग
- वैविध्यपूर्ण कथावस्तु

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अज्ञेय का प्रथम प्रकाशित उपन्यास कौन-सा है?
2. ‘शेखर एक जीवनी’ का प्रकाशन वर्ष क्या है?
3. शेखर एक जीवनी कितने भागों में प्रकाशित है?
4. अज्ञेय के दूसरे उपन्यास का नाम क्या है?
5. अज्ञेय के तीसरे उपन्यास का नाम क्या है?
6. ‘नदी के द्वीप’ उपन्यास का प्रकाशन वर्ष क्या है?
7. ‘अपने अपने अजनबी’ का प्रकाशन वर्ष क्या है?
8. ‘भुवन’ किस उपन्यास का नायक है?
9. ‘शशि’ किस उपन्यास का पात्र है?
10. ‘सेल्मा’ किस उपन्यास की पात्र है?

Answers / उत्तर

1. शेखर एक जीवनी
2. 1941
3. दो
4. नदी के द्वीप
5. अपने अपने अजनबी
6. 1951
7. 1961
8. नदी के द्वीप
9. शेखर एक जीवनी
10. अपने अपने अजनबी

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. ‘शेखर एक जीवनी’ उपन्यास में प्रयोग’ - पर अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. ‘नदी के द्वीप’ उपन्यास की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?
3. ‘अपने अपने अजनबी’ एक प्रयोगधर्मी उपन्यास है, सिद्ध कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल
2. हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश
3. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियों - शिवकुमार शर्मा
4. हिन्दी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैल रस्तोगी

MODEL QUESTION PAPER SETS

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………   Reg. No : ………...............
Name: …......……………...

FIFTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION
DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE

B21HD03DE - विशेष लेखक अज्ञेय
(CBCS - UG)
MODEL QUESTION PAPER SET -A
2022-23 - Admission Onwards

Time: 3 Hours   Max Marks: 70

SECTION A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए। (1×10=10)

1. 'अज्ञेय' का पूरा नाम क्या है?
2. अज्ञेय की मृत्यु कब हुई?
3. अज्ञेय का पहला कविता संकलन का नाम क्या है?
4. प्रयोगवाद का आरंभ कब से माना जाता है?
5. अज्ञेय के रचनाकाल किस नाम से विख्यात् है?
6. घृणा का गान कविता का प्रतिपाद्य क्या है?
7. अज्ञेय की पहली कहानी क्या है?
8. अज्ञेय की अन्तिम कहानी कब लिखी गई थी?
9. 'इन्दु की बेटी' कहानी का मुख्य संदेश क्या है?
10. प्रयोगवाद के जनक कौन है?
11. अज्ञेय का दूसरा महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक उपन्यास कौन सा है?
12. अज्ञेय की डायरी का नाम क्या है?
13. 'चौथा सप्तक' का संपादक कौन है?
14. 'शरणदाता' किस शैली में रचित कहानी है?
15. अज्ञेय का प्रथम प्रकाशित उपन्यास कौन-सा है?

SECTION B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए। **(2×5=10)**

16. अज्ञेय के अनुसार संस्कृति के विकास के लिए क्या अनिवार्य है?
17. नये हिंदुस्तानी की अज्ञेय द्वारा दी गयी परिभाषा। क्या है?
18. 'साम्राज्ञी का नैवेद्य दान' किस की मन की अभिव्यक्ति हुई है?
19. चिकनी घास और बाजरे की कलगी को अज्ञेय ने किसका प्रतीक माना?
20. 'दारोगा अमीचन्द' कहानी में दारोगा को किस चीज़ का अहंकार था?
21. 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास में कौन-सा दर्शन से परिपूर्ण है
22. स्टॉकहॉम में कौन-सा सिद्धांत चलता है?

23. पीड़ा की उच्छ्वासों सी कंपती है शाखाएँ सरसर - में किस रस का द्योतन है।
24. अज्ञेय ने अपनी रचनाओं में कितने प्रकार के उपमेयों को चुना?
25. आज्ञेय की भाषा को कितनी कोटियों में रख सकते हैं।

SECTION C

किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर एक परिच्छेद में लिखिए। (5×6=30)

26. 'अपने अपने अजनबी' - शीर्षक की सार्थकता।
27. 'आलबाल' निबंध की विशेषताएँ क्या हैं?
28. अज्ञेय द्वारा रचित संस्मरण की आलोचना कीजिए।
29. अज्ञेय की भाषा की प्रयोगशीलता पर लेख लिखिए।
30. अज्ञेय के पत्र साहित्य पर टिप्पणी लिखिए।
31. 'त्रिशंकु' निबंध संग्रह पर अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
32. अपने-अपने अजनबी उपन्यास का सारांश लिखिए।
33. 'शेखर एक जीवनी' उपन्यास के आधार पर शेखर का चरित्र चित्रण तैयार करो।
34. अज्ञेय के काव्य पर पाश्चात्य प्रभाव है -टिप्पणि लिखिए।
35. हिन्दी साहित्य के इतिहास में अज्ञेय का क्या योगदान रहा।
36. तार सप्तक के कवियों का विश्लेषण कीजिए।
37. नाटककार अज्ञेय के बारे में अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।

SECTION D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों के अन्दर लिखिए। (2×10=20)

38. अज्ञेय के यात्रा वृत्तांत पर एक लेख तैयार कीजिए।
39. अज्ञेय की कहानियों की भाषा का प्रयोग स्पष्ट कीजिए।
40. अज्ञेय के संस्मरण और साक्षात्कार पर प्रकाश डालिए।
41. 'नदी के द्वीप' उपन्यास की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……… Reg. No : ………...............

Name: …......……………...

FIFTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION
DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE

B21HD03DE - विशेष लेखक अज्ञेय
(CBCS - UG)

MODEL QUESTION PAPER SET - B
2022-23 - Admission Onwards

Time: 3 Hours Max Marks: 70

SECTION A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए। **(1×10=10)**

1. अज्ञेय द्वारा रचित एकमात्र नाटक का नाम क्या है?
2. अज्ञेय का जन्म कब और कहाँ हुआ?
3. अज्ञेय का सबसे छोटा काव्य संग्रह क्या है?
4. नयी कविता का आरंभ कब से माना जाता है?
5. 'नारंगियाँ' कहानी का मुख्य पात्र कौन है?
6. 'अज्ञेय' को केन्द्र साहित्य अकादेमी पुरस्कार किस कृति के लिए प्राप्त हुआ?
7. 'विपथगा' संकलन का प्रकाशन कब हुआ था?
8. 'शेखर एक जीवनी' किस शैली में लिखा गया उपन्यास है?
9. 'अपने अपने अजनबी' की मूल समस्या क्या था?
10. 'आत्मनेपद' का प्रकाशन वर्ष क्या है?
11. अज्ञेय का प्रथम निबंध संकलन कौन-सा है?
12. शेखर एक जीवनी कितने भागों में प्रकाशित है?
13. 'नदी के द्वीप' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष कब हुआ?
14. अज्ञेय को सबसे प्रभावित करने वाले अंग्रेज़ी साहित्यकार कौन थे?
15. 'एक घंटे में' कहानी में रजनी के पति का नाम क्या है?

SECTION B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए। **(2×5=10)**

16. अज्ञेय के विचार में रचना का पहला धर्म क्या है?
17. अज्ञेय क्रांतिकारी कैसे और क्यों बने?
18. अज्ञेय की साहित्य साधना की प्रेरणा स्रोत के बारे में लिखिए।
19. अज्ञेय की कहानियों की प्रमुखता क्या है?

SGOU

20. 'नारंगियाँ' कहानी में परसू का दृष्टिकोण क्या था?
21. 'वासुदेव प्याला' क्या है?
22. अज्ञेय की रचनाओं में मुख्यः कितने प्रकार के बिंब पाए जाते हैं?
23. मुख्यतः अज्ञेय के काव्य में उपमानों के कितने प्रकार होते हैं?
24. अज्ञेय प्रतीक को क्या मानते है?
25. शिल्पगत प्रयोगों की दृष्टि से अज्ञेय की कौन सी कहानियाँ उल्लेखनीय हैं?

SECTION C

किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर एक परिच्छेद में लिखिए। **(5×6=30)**

26. कहानी के सृजन संबंधी अज्ञेय का मत क्या है?
27. अज्ञेय की प्रयोगधर्मी रचनाओं की पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए।
28. प्रतीकात्मक शैली पर एक टिप्पणी लिखिए।
29. आत्मकथात्मक शैली की विशेषताएँ क्या है?
30. कथात्मक शैली में रचित अज्ञेय की कहानियों पर अपनी राय दीजिए।
31. अज्ञेय काव्य के छन्द विधान पर विचार कीजिए।
32. अज्ञेय के नाटक पर विचार कीजिए।
33. 'आत्मनेपद' पर अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
34. 'बदला' कहानी में सुरैया के मन में सिख यात्री के प्रति डर और उसके बाद की समझ में बदलाव को विस्तार से समझाएँ।
35. अज्ञेय की कहानियों की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
36. अज्ञेय की काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ लिखिए।
37. नीबन्धकार अज्ञेय - इस पर टिप्पणी लिखिए।

SECTION D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों के अन्दर लिखिए। **(2×10=20)**

38. अज्ञेय की कहानियों के बारे में अपना विचार प्रकट कीजिए।
39. उपन्यास के तत्वों के आधार पर 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।
40. नयी कविता की प्रवृत्तियों पर एक विस्तृत लेख तैयार कीजिए।
41. उपन्यासकार अज्ञेय पर एक लेख तैयार कीजिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

विशेष लेखक अज्ञेय

COURSE CODE: B21HD03DE

ISBN 978-81-982096-6-5

9 788198 209665

YouTube

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841